एक प्रेरणात्मक जीवनी

निर्धन बालक से महान उद्योगपति

राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

एल्विन एफ. हारलो लिखित 'एण्ड्रयू कारनेगी' का अनुवाद

अनुवादक
हरीशचन्द्र विद्यालंकार

मूल्य : २·५०

इण्डिया प्रिंटर्ज, दिल्ली द्वारा मुद्रित

निर्धन बालक से महान उद्योगपति

Nirdhan Balak se Mahan Udyogpat.

(Biography)

by

Alvin F. Harlow

Tr. by. H. C. Vidyalankar

Rs. 2-50

Rajpal.

: १ :

स्कॉटलैण्ड में पूर्व रंग

एण्ड्र्यू का यह दावा तथा दृढ़ विश्वास सदा बना रहा कि वह घटना उसको याद थी। उसके बड़ों ने पीछे भले ही इसका प्रतिवाद यह कहकर कर दिया हो कि वह तो उस समय दो वर्ष का भी नहीं हुआ होगा।

वह बड़ी दृढ़ता से कहता था, "तो भी यह मुझे याद है। और यह उन बातों में से लगभग पहली ही बात तो है जो मुझे याद रही हैं।"

घटना कोई विशेष नहीं थी—उसके माता-पिता, मामा तथा मौसी कपड़े पर मढ़े हुए एक चमकीले, दो फुट लम्बे कागज़ को घेरकर बैठे कुछ सोच-विचार कर रहे थे। इस कागज़ के दोनों सिरों पर लकड़ी की गोल पट्टियां जड़ी हुई थीं; उनपर उसे लपेटा जा सकता था। सुनहरी लटोंवाला शिशु एण्ड्र्यू डगमगता वहीं जा पहुंचा और उत्सुकता-भरी चितवन लिए बीच में घुस गया। उसके पिता तथा मामा विलियम्स ने, मुस्कराते हुए, कागज़ को कुछ नीचे कर लिया जिससे शिशु भी उसे देख सके।

"यह एक मानचित्र है आन्द्रा," पिता बोले।

"मानचित्र," एण्ड्र्यू ने दुहराया।

एण्ड्र्यू के पिता का यह स्वभाव था कि वे छोटे से छोटे शिशु से भी वैसे ही बात करते थे जैसेकि किसी बड़े से। वे गम्भीरता से कहते रहे, "अमेरिका का मानचित्र।" फिर उसपर एक बिन्दु दिखाते हुए बोले, "देखो, वहां है वह पिट्सबर्ग नगर जहां कि तुम्हारे मौसा आन्द्रा तथा मौसी अन्ना बसने जा रहे हैं। और तुम्हारे मामा विलियम तो उससे भी परे ओहायो प्रान्त में जा रहे हैं।"

निस्सन्देह पिट्सबर्ग नाम ने ही, उस नगर के नाम ने जहां कि अपने आगामी जीवन में वह समृद्ध हुआ, मां-बाप से याद दिलाए जाने पर, इस घटना को बालक एण्ड्र्यू के मन पर अंकित कर दिया था।

एण्ड्रयू अभी इतना छोटा था कि वह यह नहीं समझ सकता था कि स्कॉटलैण्ड के उस छोटे-से नगर के निवासी परिवार का, जहां से कि जीवन-भर में दस-बारह मील भी बाहर जानेवाले इने-गिने ही होंगे, अपने-आप उखड़-कर, समुद्र पार एक विस्तृत एवं अज्ञात देश में नया जीवन आरम्भ करना क्या अर्थ रखता है—उस देश में जहां के इण्डियन अभी तक दूरस्थ क्षेत्रों में उत्पात मचाते रहते थे और जहां व्यवस्थित शासन की स्थापना हुए अभी पचास वर्ष भी नहीं हुए थे।

मौसी अन्ना ऐटकिन ने लम्बा सांस लेकर कहा, "मेरी इच्छा है कि तुम भी हमारे साथ चलते।"

एण्ड्रयू के पिता ने जोर से सिर हिलाकर तीव्र प्रतिवाद किया और कहा, "नहीं अन्ना, नहीं! इस सुन्दर घर में हम अभी तो आए हैं, और यहां मेरे चार करघे चल रहे हैं।" विलियम कारनेगी सन के, बेल-बूटेवाले मेजपोश तथा अंगोछों का बुनकर था—स्कॉटलैण्ड में उन हज़ारों में से एक, जो अपने घर पर बुनाई करते थे।

एण्ड्रयू की जन्मभूमि डन्फर्मलिन स्कॉटलैण्ड में चित्रित दुकूलों का केन्द्र थी और इसके अधिकांश निवासी बुनकर थे। जिन दिनों यह अपनी समृद्धि के शिखर पर था तो यहां नगर स्थित झोंपड़ों तथा आसपास के देहात में चार हज़ार से अधिक करघे चटचटाते रहते थे। बुनकर अपने नियोक्ता अथवा ठेकेदारों से बुनने का सब सामान तथा नमूना ले आता, घर लौटकर 'जाला' (बुने हुए वस्त्र-खण्ड का यही नाम रखा हुआ था) बुनता और नियोक्ता से अपना पावना तथा नया आदेश लेने के लिए इस 'जाले' को लौटाने जाता।

१८३४ में जब विलियम कारनेगी ने मेरी मेरिसन से विवाह किया तो वह एक सुस्थित बुनकर था। उनका ज्येष्ठ पुत्र एण्ड्रयू २५ नवम्बर, सन् १८३५ को डेढ़ तल्ले की एक प्रस्तर कुटी में जन्मा—उसे एण्ड्रयू नाम उसके हंसमुख दादा के सम्मान में मिला, उनके स्वभाव से इसका स्वभाव बहुत मिलता था। कुटी के निचले तल्ले का एक कक्ष विलियम के करघे ने घेर रखा था। साथ का कमरा व अटारी रहने के लिए थे। परन्तु एक ही वर्ष के भीतर शिष्ट-सरल-स्वभाव—यद्यपि स्वप्नद्रष्टा—विलियम ने अपने व्यवसाय में उन्नति कर ली। अब वे पहले से कुछ अधिक बड़े घर में आ गए और वहां उसने तीन नये करघे

लगा लिए तथा उन्हें चलाने के लिए मजदूर ठहरा लिए। वहां घर के निचले सारे खण्ड में बुनाई के कमरे थे और परिवार ऊपर के खण्ड में रहता था।

बहुत दिनों पश्चात्, जब एण्ड्र्यू समृद्ध हो गया था, तो एक व्यवसायी वंशावली बतानेवाले (भाट) ने उसका ऐसा वंश-वृक्ष बनाना चाहा जिससे प्रकट होता कि वह स्कॉटलैण्ड के राजाओं का वंशज था।

करोड़पति एण्ड्र्यू ने निर्विकार भाव से उत्तर दिया, "सुनकर मुझे खेद हुआ, मेरी पत्नी ने तो मुझे बुनकर का पुत्र समझकर ही मुझसे विवाह किया था।"

वह कह सकता था--'पौत्र और प्रपौत्र भी,' क्योंकि उसका परिवार पीढ़ियों से बुनकर चला आता था। हृष्ट-पुष्ट, निष्कपट शिल्पियों का वंशज होने का उसे गर्व था। ठीक है, स्कॉटलैण्ड में 'कुलीन' कारनेगी थे। कारनेगी नार्थेस्क तथा साउथेस्क के अर्ल (सरदारों) का एक पारिवारिक नाम है। पीछे से जब एण्ड्र्यू का अपना दुर्ग स्कॉटलैण्ड में हो गया तो उसकी नॉर्थेस्क के अर्ल से घनिष्ठ मित्रता हो गई। वे हंसी-हंसी में परस्पर 'बान्धव' सम्बोधन करने लगे--यद्यपि वे भली भांति जानते थे कि उनका कोई पारिवारिक सम्बन्ध नहीं है। और एण्ड्र्यू ने ऐसे किसी सम्बन्ध को खोज निकालने का कभी प्रयत्न नहीं किया।

चार-पांच वर्ष की अवस्था में एण्ड्र्यू को करघा चलाते पिता के समीप बैठना बहुत भाता था। उस समय उसके पिता एक ओर तो ढरकी को आगे-पीछे उछालते और दूसरी ओर पैरों से मशीन चलाते हुए धीरे-धीरे नमूनों के अनुसार सफेद फूल-बेल-पक्षी-दृश्यावलीवाले चमकीले बूटेदार वस्त्र तथा उसकी जटिल किनारियां बुनते। एण्डी अपने लज्जालु, शान्तप्रकृति पिता का बड़ा भक्त था, जो करघा चलाते हुए पुराने स्कॉच गीतों को गाया करते अथवा वस्तुतः गुनगुनाते रहते थे। ये गीत थे 'बोटी रोज़' (Boatie Rose) 'लोचाबर नो मोर (Lochaber No More), अथवा

> "स्कॉच, जिन्होंने वालेस के लिए रक्त बहाया,
> स्कॉच, जिनका ब्रूस प्रायः नेता बना,
> तुम्हारी रक्तसनी शय्या अथवा विजय का
> स्वागत हो"—

एण्ड्रयू को यह याद नहीं आया कि कब गाते-गाते रुककर पहली बार उसके पिता ने कहा था, "इस गीत में रावर्ट ब्रूस सन् १८३४ के बैनोकवर्न के युद्ध में अंग्रेज सेना से भिड़ने के लिये तैयार अपनी सेना को सम्बोधन कर रहा है।" और कभी-कभी वे यह भी कह देते, "जानते हो बच्चे, यही रावर्ट ब्रूस, जो हमारा 'किंग रावर्ट प्रथम' वना, उन दो व्यक्तियों में से एक था—दूसरा था सर विलियम वालेस—जिसने कि पांच सौ वर्ष पहले स्कॉटलैण्ड को अंग्रेज़ों के पञ्जे से मुक्त किया था।" उसने ढरकी को वांये से दांये को तथा फिर दांये से वांये को उछाला और कहा, "ब्रूस यहीं डन्फर्मलिन में स्थित मठ में दफनाया गया है...वह, उसकी रानी तथा हमारे बहुत-से राजा एवं रानियां, मैल्कम कैनमोर एवं उसकी रानी क्वीन मार्गरेट तक सब..... इसी (मार्गरेट) ने १०७५ में मठ की नींव रखी।"

डन्फर्मलिन वस्तुतः एक छोटा-सा ऐतिहासिक नगर था; क्योंकि मध्य-युग में यह स्कॉटलैण्ड की राजनीतिक तथा धार्मिक राजधानी रहा था। इसका महल एवं दूसरे ऐतिहासक भवन अव खण्डहर हो चुके थे; उस महल की केवल एक दीवार खड़ी रह गई थी जिसमें कि कभी स्कॉटलैण्ड का राजकीय परिवार रहता था और जहां कि इंगलैंड का चार्ल्स प्रथम जन्मा था। परन्तु वर्गाकार बुर्जियोंवाला उन्नतशृङ्ग मठ अव भी खड़ा था; वह माननीय 'ब्रूस' तथा दूसरे राजा-रानियों की समाधियों को शरण दे रहा था। और डन्फर्मलिन से 'फर्थ आफ फोर्थ' नदी के पार दक्षिण दिशा में देखने पर, किसी भी उज्ज्वल दिन, पन्द्रह मील परे धुएं में झलकती एडिनवरा के गिरजाघरों की मीनारें एवं चिमनियां और ऊंची चट्टान पर स्थित इसका दुर्ग दीख पड़ते थे।

एण्ड्रयू के मौसा जॉर्ज लॉडर, उसके प्रिय बन्धु तथा इतिहास एवं लोक कथा-कहानियों के गुरु थे। वे एक दुकानदार थे। पत्नी का उनकी कुछ वर्ष पूर्व देहांत हो चुका था। एण्ड्रयू तथा अपने मातृहीन पुत्र जॉर्ज को नगर व पास-पड़ोस के ऐतिहासिक नगरों की यात्रा कराना उन्हें भाता था, परन्तु चलने से पहले वे उन स्थानों के विषय में कुछ जान लेने के लिए कहते, जिससे कि देखते समय वताया जानेवाला उनका व्योरा समझ में आ सके। जैसेकि जव वे उन्हें नगर से कुछ मील उत्तर में स्थित लोचलेवन झील दिखाने ले गए तो

बच्चे जानते थे कि उस झील में स्थित छोटे-से द्वीप में जिस दुर्ग के खण्डहर पड़े हैं, उस दुर्ग में स्कॉटलैण्ड की रानी बेचारी मेरी को इंगलैण्ड की रानी ऐलिजाबेथ ने बन्दी बनाकर रखा था। रानी मेरी ने इंगलैण्ड के किंग हैनरी सप्तम की पड़पोती के रूप में इङ्गलैण्ड के राजसिंहासन पर अपना अधिकार जताया था।

इस प्रिय मौसा की स्मृति में, कई वर्ष पश्चात् जब वह जहां-तहां दान की वर्षा कर रहा था, एण्ड्रयू ने डन्फर्मलिन में लॉडर टैक्निकल कालेज बनाकर दान किया। जूनियर जॉर्ज लॉडर एवं एण्ड्रयू के मध्य पारस्परिक आजीवन दृढ़ अनुराग भी बना रहा। बचपन में उन दोनों में से कोई भी एक-दूसरे के नाम का ठीक-ठीक उच्चारण नहीं कर पाता था—एण्डी जॉर्ज के स्थान पर 'डौड' कहता तथा जॉर्ज ने 'कारनेगी' का संक्षेप 'नैग' कर लिया था। उन्होंने शेष जीवन-भर एक-दूसरे को 'डौड' एवं 'नैग' ही पुकारा तथा पत्रों में भी ऐसे ही लिखा।

जब वे लगभग छः वर्ष के थे तो उन्हें एक दिन क्वीन विक्टोरिया के दर्शन कराने एडिनबरा ले जाया गया। उन दिनों वे अपने राज्य के उत्तरी भाग स्कॉटलैण्ड के दौरे पर थीं। वह अंग्रेज़ थी—इस एक 'दक्षिणी' उस भूमि पर शासन करे कि जिसका इन दोनों देशभक्त बालकों के विचार से अपना राजा होना चाहिए—और उन्होंने उसे रूखी, आलोचक दृष्टि से देखा। डौड बोला, "यह तो तुम्हारी माता के बराबर भी ऊंची नहीं है।" "और उसका लहंगा भी उतना सुन्दर नहीं है," नैग ने अपने साथ चल रही माताजी की ओर देखते हुए कहा।

बड़ा होने पर इङ्गलैण्ड के प्रति एण्ड्रयू का रुख कुछ नरम पड़ा और उसने कई प्रतिष्ठित एवं पदवीधारी अंग्रेज़ों व उनके परिवारों से घनिष्ठ मित्रता-संबंध स्थापित किए, परन्तु बचपन में तो वह एक दुराग्रही स्कॉच-पक्षपाती ही था।

डन्फर्मलिन के निवासी शिल्पी एवं दुकानदार स्वाध्यायशील तथा विचारक थे। वे प्रचलित विषयों—विशेषकर राजनीतिक तथा धार्मिक विषयों पर बहुत चर्चा करते रहते थे, क्योंकि उनमें, अनुदार-अपरिवर्तन-वादी से लेकर आमूलचूल परिवर्तन चाहनेवाले क्रान्तिवादी तक, सब प्रकार की विचार-

धाराओंवाले व्यक्ति थे। विलियम कारनेगी उन पांच व्यक्तियों में से एक था कि जिन्होंने अपनी पुस्तकों की छोटी अलमारियों को मिलाकर एक कर ली थीं और स्वाध्याय के किसी भी पिपासु को पुस्तकें उधार देने लगे थे, इसलिए स्पष्ट है कि एण्ड्रयू में पुस्तकालयों की रचना की प्रबल अभिलाषा सर्वथा स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुई। उसको स्वयं रॉबर्ट बर्न्स की कविताओं के प्रति वैसा ही आदर्श अनुराग था जैसाकि स्कॉट को था और वह जीवनपर्यन्त अटल बना रहा तथा, तरुणाई में, सर वाल्टर स्कॉट उसके साहित्यिक वीर नायकों में दूसरे स्थान पर था।

एण्ड्रयू के पिता को पढ़ने की इतनी लगन थी कि कभी-कभी वह उसके काम में भी बाधक बनकर रह जाती थी। वह डिकेन्स के उपन्यासों का विशेष प्रशंसक था—ये तब मासिक भागों में—बत्तीस-बत्तीस पृष्ठों की पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित होते थे तथा स्थानीय समाचारपत्र-विक्रेता इन्हें वितरित करता था। यह व्यक्ति जब कभी आकर कहता, "नमस्कार आन्द्रा! यह लीजिए 'दि ओल्ड क्यूरियासिटी शॉप' का नया अंक!" तो विल्ली कारनेगी उसे उत्सुकता से पकड़ लेता और उसका करघा एकाएक रुक जाता। बुनाई में शीघ्रता करने की आश्यकता कितनी ही प्रबल क्यों न होती वह डिकेन्स के जादुई प्रभाव से न बच पाता था। अब वह कहानी को आत्मसात् करने में पांच-दस-पन्द्रह मिनट लगाता और अन्त में बड़ा प्रयत्न करके अपने-आपको इसके फन्दे से छुड़ाकर ढरकी पकड़ता और करघा फिर प्रबल वेग से चटचटाने लगता। इस बीच उसकी पत्नी ऊपर के खण्ड में बैठी, ढरकी में डालने के लिए 'धागे अर्थात् सूत' की बलनियों को घुमाती रहती थी। और कभी-कभी पांव से एक पालने को भी हिलाती रहती थी, क्योंकि एण्ड्रयू के जन्म के आठ वर्ष पश्चात् दूसरा पुत्र उपत्न्न हो चुका था, बीच में एक लड़की भी हुई थी जो मर चुकी थी।

अपने बाल्यकाल के आरम्भ में ही एण्ड्रयू को अनुभव होने लगा था कि बुनाई का कुटीर-उद्योग क्षीण हो रहा है। वाष्पचालित करघों के कारखाने इसका स्थान लेते जा रहे हैं। बुनकरों का संकट प्रबल हो गया—कुछ को तो कुदाली-फावड़ा लेकर देहात में बन रहे नये रेल-मार्ग पर जाना पड़ा। और कुछ कोयले की खदानों पर काम करने चले गए। मार्गरेट कारनेगी के मायके

के तीन व्यक्ति—एक, भाई विलियम मौरिसन तथा दो बहनें, श्रीमती टामस होगन और श्रीमती एण्ड्रयू ऐटकिन अपने पतियों समेत—अमरीका चले गए। अव्यावहारिक विल्ली कारनेगी निराशा में आशा-किरण की प्रतीक्षा में अपने पुराने धन्धे तथा प्राचीन देश से चिमटा रहा। परंतु एक दिन वह बहुत ही रिक्त मन घर लौटा और अपने बुनकरों में से एक से बोला, "टामस तुम्हें तो अब काम छोड़ जाने की अनुमति देनी पड़ेगी। काम बहुत कम रह गया है।" शीघ्र ही दूसरे और फिर तीसरे बुनकर को भी हटा दिया गया और अकेला विलियम रह गया। बहुमूल्य करघों में से एक को जिसकी लागत लगभग बीस पौंड थी—केवल कुछ शिलिंग में बेचना पड़ा।

प्रतिदिन के व्यय के लिए दूसरे, फिर तीसरे करघे को भी बिक जाने दिया गया। परिवार अब कम किराये के मकान में आ गया; यहां श्रीमती कारनेगी ने साग-सब्जी, फल तथा मुरब्बे बेचने की दुकान कर ली। उसका भाई टामस मौरिसन मोची था—वह न केवल जूतों की मरम्मत ही करता था, अपितु कई कर्मचारियों की सहायता से हाथ से जूते बनाया भी करता था; तब तक यन्त्रों द्वारा जूते बनाना आरम्भ नहीं हुआ था। परिवारभक्त तथा दृढ़निश्चयी महिला श्रीमती कारनेगी जब-तब तथा सायंकाल के समय अपने इस भाई के लिए जूते गांठने का काम भी करती थी। सांझ के समय एण्ड्रयू अपनी माता के पास बैठ उनकी सूई में धागा पिरोने और धागे पर मोम चढ़ाने का काम करके उनके काम में हाथ बंटाता था। बीच-बीच में पढ़ने के लिए समय भी निकाल लेता था। वह दिन-भर लगा ही रहता था। प्रातःकाल उसका पहला काम गली में कुछ दूरी पर स्थित सार्वजनिक कुएं से एक बाल्टी पानी ले आना था, यहां उसे स्त्री, बालक तथा बालिकाओं के साथ पंक्ति में देर तक लगे रहना पड़ता था तब पम्प पर बारी मिलती था। तब वह सारा दिन विद्यालय में बिताता था और उसके पश्चात् कुछ संदेशे पहुंचाता; इतने में सायं-भोजन का समय हो जाता।

परिवार से बाहर किसी व्यक्ति से पहला भेंट उसे तब मिला जबकि साहसी वृद्ध अध्यापक श्री मार्टिन ने कवि 'बर्न्स' की 'मैन वाज मेड टू मॉर्न' शीर्षक कविता कण्ठस्थ करने पर पारितोषिक दिया; मौसा लॉडर भी कभी-कभी कोई कविता अथवा स्कॉट के काव्यों से किसी संदर्भ को कण्ठस्थ करने पर पैसा दे

दिया करते थे। उन दिनों कविताएं कण्ठस्थ करने का एक प्रचलन था। एण्ड्रयू के समान दूसरे भी बहुत-से व्यक्ति काव्य के इस महान कोष के धनी थे —यह कोष सदा उनकी जिह्वा के अग्र भाग पर रहता था और वे जब चाहते इसे उपस्थित कर लेते थे।

धीरे-धीरे मार्गरेट को दृढ़ विश्वास हो गया कि उन्हें अमरीका पहुंचने का यत्न करना चाहिए। टामस होगन और एण्ड्रयू ऐटकिन-परिवार ऐलेगेनी में, जोकि ऐलेगेनी नदी के पार पिट्सबर्ग का ही एक उपनगर था और अब उसका ही एक भाग है, रह रहे थे और यद्यपि वे समृद्ध तो नहीं हो पाए थे, तथापि स्कॉटलैण्ड की अपेक्षा अधिक सुख-सुविधा में थे। भाई विलियम मौरिसन पिट्सबर्ग के समीप पश्चिम में ओहायो-स्थित अपने कृषि-क्षेत्र पर साधारणतया फल-फूल रहा था। श्रीमती कारनेगी जानती थी कि उसका पति खेती के काम में सर्वथा असफल रहेगा, परन्तु पिट्सबर्ग अथवा ऐलेगेनी में उसको निश्चय ही अपने ढंग का ही कोई काम मिल जायगा। धीरे-धीरे उसने विलियम को मना लिया कि वे भी अवसर से लाभ उठाएं।

उन दिनों पालवाले जहाज़ों में बैठकर समुद्र पार करने में इतना कम व्यय होता था कि आज उसपर विश्वास करना कठिन है। फिर भी, बचे हुए करघे तथा सारे घरेलू सामान को नीलाम करने के पश्चात् भी, कारनेगी इतना धन नहीं जुटा पाए कि समुद्र-यात्रा का व्यय उठा सकें। स्थिति निराशामय ही थी कि मार्गरेट की एक पुरानी मित्र ने उद्धार किया। इस मित्र का नाम श्रीमती जॉन हैण्डरसन था। मार्गरेट के लिए वह 'ऐली फार्गी' थी; बचपन में वह अपनी इस सहेली कुमारी एलिसन फर्गुसन के नाम का यही उच्चारण कर पाती थी। ऐली और उसका पति मकान खरीदने के लिए दस शिलिंग (लगभग ढाई डालर) मासिक बचाकर रखते आ रहे थे। उनका यह संचय अब बीस पौंड हो गया था। सबके परामर्श के विरुद्ध भी ऐली ने यह धन मार्गरेट को देने का प्रस्ताव रखा। मार्गरेट का अपना भाई टामस भी ऐली के प्रस्ताव के विरुद्ध था; वह समझता था कि कारनेगियों के भाग्य में तो अब केवल विनाश ही लिखा था।

मार्गरेट ने गद्गद हो पूछा, "पर ऐली, तुम्हारे घर का क्या होगा?"

श्रीमती हैण्डरसन ने उत्तर दिया, "वह तो पीछे भी बन सकता है—

अपनी बचपन की सहेली के लिए मैं इससे कम भी क्या करूं !"

श्रीमती कारनेगी की आंखों में आंसू भर गए। "और जॉन—क्या वह भी सहमत हैं ?" उसने पूछा।

"हां, पर प्रश्न तो यह है कि इतने से काम चल जाएगा ?"

मार्गरेट ने उत्तर दिया, "आशा तो यही है। कंजूसी करके हम किसी प्रकार पार लग ही जाएंगे। और ऐली, तुझे धन्यवाद देने के लिए मैं शब्द कहां से पाऊंगी ! और मैं वचन देती हूं कि हम जब भी खुरच-खुरचाकर इकट्ठा कर पाएंगे तुम्हारे इस धन को चुकता कर देंगे।"

मार्गरेट कारनेगी की शीघ्र होनेवाली विदाई को जानकर डन्फर्मलिन में शोक की लहर दौड़ गई। अनेक घरों में इसपर आंसू बहे। वह सब परिचितों की मित्र तथा बुद्धिमती परामर्शदात्री रही थी तथा विपत्ति में निर्बाध सहायता देने के लिए तैयार रहती थी। परन्तु अमेरिका जाने के विचार की वह परिवार-भर में सबसे अधिक प्रबल समर्थक थी। उसका पति पर्याप्त उदास था, परन्तु विछोह का सबसे अधिक दुःख एण्ड्रयू को था। उसे न केवल प्रिय मौसा लॉडर तथा डोड एवं दूसरे सम्बन्धियों के बिछुड़ने का दुःख था, परन्तु स्वयं नगर के विछोह का भी विषाद था। चालीस वर्ष पश्चात् उसके ये शब्द थे, "एक हिन्दू के लिए बनारस, मुसलमान के लिए काबा तथा ईसाई के लिए येरुशलम का जो महत्त्व है, वही मेरे लिए डन्फर्मलिन का है।" उसको अमेरिका के लिए कुछ भी उत्साह होना सम्भव नहीं था—उस देश के लिए कि गर्व करने के लिए जिसका अपना कोई वीर नहीं था; क्योंकि वहां न कोई ब्रूस था, न वालेस और न ही बर्न्स। डन्फर्मलिन में हुई प्रत्येक अन्तिम घटना पर उसकी छाती फटने लगी—अन्तिम रात, अन्तिम नाश्ता, मठ के घंटे का अन्तिम मधुर निनाद।

१७ मई, १८४८ का वह दिन जिस दिन कि उन्होंने अपना प्राचीन घर छोड़ा, उसे कभी न भूला। वह तेरहवें वर्ष में था और उसका सुन्दर छोटा भाई टामस मोरिसन कारनेगी पांचवें वर्ष में था। 'फर्थ ऑफ फोर्थ' नदी में स्थित बन्दरगाह पर आते समय एण्ड्रयू गाड़ी की खिड़की पर खड़ा गीली आंखों से पीछे देखता रहा; डन्फर्मलिन के सब परिचित चिह्न बीच में पड़ी एक पहाड़ी के पीछे धीरे-धीरे ओझल होते गए, सबसे अन्त में ओझल हुआ पुरातन मठ का

बुर्ज। मौसा लॉडर, प्रिय डौड, और मामा टामस जल तक पहुंचाने आए थे। घाट पर एण्ड्र्यू अकस्मात् ही दौड़कर मौसा लॉडर से लिपट गया और चिल्ला उठा, "उफ! मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता—नहीं छोड़ सकता!" किसीने उसे दुलारकर हटाया और जहाज पर चढ़ाया। और इस प्रकार नई दुनिया में जा बसने का यह उपक्रम हुआ।

: २ :

संकट के दिन

ऐलेगेनी १८४८ में एक सर्वथा आकर्षण-रहित नगर था। दुर्गन्ध-भरा, कीचड़ से लथपथ, ऊबड़-खाबड़ बसा हुआ, गलियों में कूड़े-करकट के ढेर, प्रायः प्रतिवर्ष बाढ़ों से पीड़ित तथा जब-तब हैज़े का शिकार; परन्तु उसके नागरिक अव्यवस्थित नहीं थे। एण्ड्रयू ने बन्धु डोड को लिखे एक पत्र में बड़े गर्व से बताया था कि यहां बाईस हज़ार की जनसंख्या में पुलिस के केवल चार सिपाही हैं। इसके अधिकांश मनुष्य प्रातः-सायं ऐलेगेनी नदी के पार पैदल पहुंचकर पिट्सबर्ग में काम करते थे।

कारनेगियों का उनके सम्बन्धियों, श्री तथा श्रीमती टामस होगन और मौसी ऐटकिन ने हार्दिक स्वागत किया। ये सब रिबैका स्ट्रीट में रहते थे। इनमें से कोई समृद्ध तो नहीं हो पाया था परन्तु वे स्थिरता अनुभव करते थे अतएव अपने-आपको सुस्थित एवं सुखी समझते थे। मौसा टौम होगन बर्तनों की एक दुकान में क्लर्क थे और एक छोटे-से दोतल्ला सुखदायक मकान में सुविधापूर्वक निर्वाह कर रहे थे। मौसी ऐटकिन के पति का कुछ वर्ष पूर्व देहान्त हो चुका था; वे अब एक छोटी-सी पंसारट की दुकान की स्वामिनी थीं। मौसा टौम के भाई एण्ड्रयू होगन मौसी ऐटकिन के मकान के पिछवाड़े में एक छोटे-से कमरे में रहते और वहीं बुनाई करते आ रहे थे; वे अब स्थान बदल रहे थे। मौसी ऐटकिन ने यही कमरा कारनेगी-परिवार को प्रस्तुत किया।

"किराया क्या होगा, अन्ना ?" विलियम ने पूछा।

"कुछ भी नहीं, जब तक कि तुम कुछ संभलते नहीं," दयामयी मौसी ने उत्तर दिया। और यद्यपि विल्ली ने आनाकानी की परन्तु वह कुछ और कर भी तो न सकता था।

अतएव अब विलियम ने फिर अपना हाथ-बुनाई का धन्धा संभाल लिया, वैसे ही जैसेकि वह स्कॉटलैण्ड में कर चुका था; परन्तु अब बाधाएं

पहले से भी अधिक थीं; क्योंकि अमरीका में यांत्रिक बुनाई हाथ-बुनाई का स्थान विदेशों से भी अधिक द्रुत गति से ले रही थी। यहां विलियम डन्फर्मलिन से अधिक सस्ते मेजपोश, सूत की शतरंजी बुनने और उन्हें घर-घर पहुंचकर बेचने का प्रयत्न करने लगा। इस बीच उसकी पत्नी ने जूते गांठने का पुराना काम पकड़ लिया—वह श्री फिप्स का काम करने लगी—फिप्स की जूते बनाने की दुकान समीप ही थी। श्री फिप्स दुकान पर काम करनेवाले दो-तीन व्यक्तियों तथा मार्गरेट कारनेगी-सरीखे घर पर काम करनेवाले कुछ व्यक्तियों की सहायता से न केवल आदेश-प्राप्त जोड़े ही बना लेते थे, अपितु कुछ अतिरिक्त जोड़े भी तैयार कर लेते थे। इन्हें लेकर वे फेरी लगाते और ऐलेगेनी तथा पिट्सबर्ग के पास-पड़ोस के देहात को भी छान मारते थे।

घर के कामकाज से अवसर मिलने पर, कभी-कभी आधी रात बीते तक परिश्रम करके, श्रीमती कारनेगी जूते गांठने के धंधे से प्रति सप्ताह लगभग चार डालर कमा लेती थीं। अब नन्हे टॉम की पारी थी कि वह भी हाथ बंटाए। विद्यालय से छुट्टी मिलने पर वह प्रायः सांझ के समय अपनी माता के समीप एक नीची चौकी पर बैठ जाता और सुइयों में धागा पिरोता तथा धागे पर मोम चढ़ाता जाता था; इस समय उसकी माता अपनी विलक्षण स्मरण-शक्ति के सहारे स्कॉच भाटों के पुराने गीत अथवा वाल्टर स्कॉट की लम्बी कविताओं के अंश सुनाया करती थीं। पास-पड़ोस के बालकों में मनोरञ्जन के लिए उनकी ख्याति फैल गई। और कभी-कभी तो वे एक बड़ी संख्या में उनको घेर लेते तथा स्कॉच इतिहास की कहानियों अथवा सर वाल्टर के महाकाव्यों के उत्तेजक अंशों को बड़ी उत्सुकता से सुनते।...

नौ और बीस यशस्वी शूरमाओं ने,
ब्रैंकसम हॉल में अपने ढालें टांग दीं;
नौ और बीस नामी सरदारों ने,
उन्हें उनके तुरग तबेले से रावटी में ला दिए।
नौ और बीस विश्वस्त, ऊंचे, खेतिहर,
उन सबकी सेवा में उपस्थित रहे,
वे सब सच्चे प्राणवान शूरमा थे,
सब साहसी बक्लू के सम्बन्धी।

जब कारनेगी पहले-पहल ऐलेगेनी में बसे तो नाटे, चौकोर चेहरे पर दूर-दूर लगी आंखों व सन-सरीखे भूरे बालोंवाले एण्ड्रयू का स्कॉच उच्चारण इतना ठेठ व भद्दा था कि पड़ोस के छोकरे जिनको ऐलेगेनी नदी तल के नाम पर 'तली के हूश' कहते थे, उसकी हंसी उड़ाते और 'स्कॉची' नाम से बुलाते थे। एण्डी बड़ी दृढ़ता से उत्तर देता, "हां, हां मैं स्कॉची हूं, और इसका मुझे गर्व है।" मजे की बात तो यह थी कि चिढ़ानेवाले बालकों में से अधिकांश स्वयं विशुद्ध स्कॉच थे, स्कॉच प्रवासियों के पुत्र तथा कुछ एण्डी की ही भांति प्राचीन देश में उत्पन्न। परन्तु एण्डी शीघ्र ही स्कॉच अपभ्रंश को भूल गया तथा कुछ ही महीनों में वह स्वयं 'तल का हूश' बन गया। एक दूसरी विशेष बात यह है कि इन बालकों में से कितने ही बालक भविष्य में समृद्ध तथा विशिष्ट नागरिक बने और एण्डी इनमें से कुछ की उन्नति में सहायक हुआ।

विलियम कारनेगी एक दिन अपनी प्रायः निष्फल फेरी के पश्चात् जब घर लौटा तो बिना बिके कपड़ों की गांठ को एक कोने में फेंककर आह भर कह उठा, "इसमें कुछ नहीं रखा, पत्नी! इस प्रकार तो निर्वाह योग्य भी नहीं कमा पाऊंगा। मुझे ब्लैक स्टॉक की रुई मिल में काम करना पड़ेगा।" वह पता लगा चुका था कि उसे वहां काम मिल सकता है। उसने मिल में नौकरी कर ली और कुछ दिन पश्चात् वह बोला, "आन्द्रा, मिल में तुम्हारे योग्य भी काम है।"

एण्डी कई स्थानों पर नौकरी की पूछताछ कर चुका था, परन्तु सभी स्थानों से उसे यही उत्तर मिला था कि वह अभी छोटा है। अब उसका उत्साह बढ़ा, उसने पूछा, "पिताजी, कैसा काम?"

"रील घुमाने का।"

"और मुझे इसके लिए वेतन मिलेगा?"

"तुम्हें प्रति सप्ताह एक डालर बीस सेंट मिला करेंगे।"

यह इतना कम वेतन था कि आज इसकी यथार्थता में सन्देह होता है। परन्तु एण्डी यह सोचकर खिल उठा कि वह भी परिवार का एक सहायक स्तम्भ हो जाएगा। उस दिन से वह तथा उसके पिता सूर्योदय होते ही (सर्दियों में सूर्योदय से पहले) जाग पड़ते; जल्दी-जल्दी नाश्ता करते और कारखाने का

रास्ता नापने लगते, वहां वे सायं छः बजे तक काम करते। पुत्र ने पिता की अपेक्षा अधिक धीरता से यह सब सहा। विल्ली कारनेगी एक स्वप्नद्रष्टा तथा व्यक्तित्व का पुजारी था, वह वेतन के लिए दूसरों के आदेश पर, एक निर्दिष्ट परम्परा के अनुसार काम करने के लिये सर्वथा अनुपयुक्त व्यक्ति था तथा यन्त्रों द्वारा बुनाई देख-देख उसका जी जलता था। कुछ महीनों के पश्चात् उसने कारखाना छोड़ दिया और अपने करघे पर लौट आया। वह मेजपोश बुनता और घर-घर मीलों घूमकर जब-तब एकाध बेच लेता।

धीरे-धीरे परिवार का परिचय अपने पुराने स्वदेश से आए व्यक्तियों से बढ़ा तो एण्ड्रयू की भेंट एक अन्य स्कॉच जॉन हे से हुई। इसका अपना निज का कारखाना रील बनाने का था। इसने अपने यहां बहुत अधिक वेतन—दो डालर प्रतिसप्ताह—पर नौकरी प्रस्तुत की। अब तक एण्ड्र्यू को जितने काम करने पड़े थे उन सबमें यह सबसे अधिक अरुचिकर था। एक अंधेरी दुर्गन्ध-भरी कोठरी में दिन-भर बैठे-बैठे एक छोटे-से इंजन की देख-रेख रखना और इसके बायलर में ईंधन झोंकते रहना। सर विलियम वालेस ऐसी जांच को कैसे सहता—इस कल्पना के सहारे उसने अपना धीरज बनाए रखा। काम कितना ही अरुचिकर क्यों न था, उसे अपने मां-बाप पर यह नहीं प्रकट होने देना था कि वह उससे कितनी घृणा करता है।

श्री हे कारखाने में एक कोने में बैठते और स्वयं ही अपने एकमात्र कर्मचारी थे। उन्होंने एक दिन बालक एण्डी को पुकारकर पूछा, "आन्द्रा, हिसाब में तो अच्छे हो न?"

"हां श्रीमन्! समझता मैं ऐसा ही हूं," उसने उत्तर दिया।

"और लेख भी तुम्हारा अच्छा है?"

"पर्याप्त अच्छा है, श्रीमन्!"

"देखें तो सही कैसा कुछ लिख लेते हो!" कहकर हे महोदय ने एक लेखनी एण्डी की ओर बढ़ा दी तथा एक कागज का टुकड़ा उसके सामने सरका दिया। लिखाई देखते-देखते वह बोल उठे "हां, हां, बुरी नहीं है, बुरी नहीं है। क्या तुम मेरे बिल बना लिया करोगे?"

"जी हां, अवश्य!" एण्डी के इस उत्सुक हर्षोद्गार ने प्रकट कर दिया कि वह अंधेरी कोठरी से बाहर निकल भागने के लिये कितना उत्सुक था।

उसे स्वप्न में भी यह भान नहीं हुआ था कि पहले से भी अधिक बुरा अथवा कम से कम उतना ही बुरा काम उसके लिए प्रस्तुत है। इसके बाद शीघ्र ही वह इकहरी लेखा पद्धति से श्री हे का बहीखाता लिखने लगा, परन्तु इस काम में आधे दिन से अधिक समय नहीं लगता था, शेष समय में उसे रीलों को एक तैल-कुण्ड में समापक स्नान कराने का काम सौंपा गया—इस तेल की गन्ध से वमन होने को होता था और उसको सहना अत्यन्त कठिन था। अपनी विचारधारा को वालेस तथा ब्रूस पर केन्द्रित करके भी वह इससे अपना विरोध शांत न कर पाया, परन्तु फिर भी वह किरकिरी निगलता रहा और मां-बाप को अपने कष्ट का आभास नहीं होने दिया।

सांझ के समय वह कभी-कभी फिप्स की दुकान पर जॉन फिप्स तथा दूसरे बालकों के साथ, जिनमें अधिकतर स्कॉच थे, एकाध घंटा बिताया करता था। ऐसी ही एक सांझ को जब वह अपनी मुनीमी के विषय में चर्चा कर रहा था तो टॉम मिलर ने कहा, "इकहरी लेखा पद्धति से हे के से छोटे धंधों में भले ही काम चल जाए, परन्तु सब बड़ी कम्पनियां तो अपना हिसाब दुहरी लेखा-पद्धति से रखती हैं।"

एण्डी ने यह बात पहली ही बार सुनी और इस अपेक्षाकृत अच्छी लेखा-पद्धति के विषय में उसने अधिक जानकारी चाही। परन्तु टॉम का इस विषयक ज्ञान अल्प ही था। तथापि कुछ दिन पश्चात् टॉम ने बताया, "सुना है कि एक व्यक्ति उचित शुल्क लेकर सांझ के समय नई लेखा-पद्धति सिखाता है।" कुछ दिन विचार-विमर्श करने के पश्चात् एण्डी, टॉम, जॉन फिप्स और बिल्ली कॉले ने निश्चय किया कि अपनी स्वल्प आय में से किसी प्रकार खींच-खांचकर इस पढ़ाई का शुल्क जुटाया जाय। इसके पश्चात् उन्होंने कई सांझें दुहरी लेखा-पद्धति के गुप्त भेद को सीखने में लगाई।

अरुचिकर धन्धे के कारण अमरीका में एण्ड्रयू का यह प्रथम डेढ़ वर्ष उसके जीवन का सर्वाधिक कष्टमय समय रहा। परन्तु उसके भाग्य का परिवर्तन होने ही वाला था…।

तार-व्यवसाय अभी अपने शैशव-काल में था। पूर्व से पिट्सबर्ग तक एक तार लाइन पूरी लग चुकी थी और यह व्यवसाय द्रुत गति से बढ़ रहा था। इसके स्थानीय व्यवस्थापक श्री डेविड ब्रुक्स थे। वे ऐलेगेनी में पड़ोसी थे। वे

तथा टॉम होगन सांझ को शतरंज का आनन्द लिया करते थे।

एक रात वे एक बाज़ी खेलकर दूसरी के लिए मोहरे रख रहे थे कि श्री ब्रुक्स बोले, "हमारा व्यवसाय इतनी द्रुत गति से बढ़ रहा है कि हमें वितरण के लिए एक अन्य संदेशवाहक बालक की आवश्यकता है। क्या तुम किसी ऐसे भले, पूरे भरोसे के बालक को बता सकते हो, जो हमें मिल सके।"

श्री होगन ने अपने मोहरे रखते-रखते एक क्षण सोचा और फिर कहा, "मेरा एक भतीजा है, एण्ड्र्यू कारनेगी; सम्भव है वह इस काम को कर सके। वह नये डॉलर-सा शुद्ध, निष्कपट तथा सतर्क बालक है। काम से वह नहीं घबराता।"

"उसकी अवस्था कितनी है?"

मौसा टॉम ने कुछ याद करके उत्तर दिया, "साढ़े चौदह वर्ष। अवस्था में वह अवश्य छोटा है, परन्तु अवस्था की अपेक्षा अधिक कुशाग्र तथा फुर्तीला है। ऐसे बालक को आप कितना वेतन दे देंगे?"

"प्रतिसप्ताह ढाई डालर। यदि यह सन्तोषजनक हो तो क्या आप उसको कह देंगे कि वह कार्यालय में आकर मुझसे इस विषय में चर्चा कर ले?"

"मैं कह दूंगा।"

दोनों मित्रों की अगली बाज़ी के समाप्त होते ही श्री होगन कारनेगी-निवास की ओर लपके। यद्यपि देर हो गई थी, परन्तु श्रीमती कारनेगी अभी तक जूते गांठ रही थी। मौसा टॉम के समाचार ने एक उत्साहवर्धक तर्क-वितर्क खड़ा कर दिया था। एण्डी का वदन उल्लास से दमकने लगा। अहा! उन नलकियों के कुण्ड से छुटकारा मिलेगा। उसे लगा कि उसके लिए एक नये संसार का प्रवेश-द्वार खुल रहा है। परन्तु उसके पिता संशयालु थे।

उन्होंने आनाकानी करते हुए कहा, "ब्रुक्स महोदय को क्या पता कि आन्द्रा अभी कितना छोटा है। जितना वेतन उन्होंने देने को कहा है उससे तो यही अनुमान होता है कि उन्हें अधिक बड़े व तगड़े बालक की आवश्यकता है।"

टॉम ने उत्तर दिया, "मैंने उन्हें बता दिया कि अवस्था में एण्डी छोटा अवश्य है, परन्तु वह असाधारण प्रतिभाशाली बालक है। उन्हें किसी बड़े

बालक की आवश्यकता नहीं है, मुझे निश्चय है कि एण्डी से वे सन्तुष्ट हो जाएंगे।"

श्री कारनेगी सन्देह से सिर हिलाते बोले, "टामस, तुमने सारी सम्भावनाओं पर ध्यान नहीं दिया है। उसे सब प्रकार के स्थानों पर भेजा जाएगा, उनमें से बहुत-से ऐसे स्थान होंगे जिनमें कि एक बालक को नहीं जाना चाहिए। उसे अंधेरी रातों में बाहर, शायद देहात में भी, तार लेकर जाना होगा। और पहली बात तो यह है कि वह नगर को भली भांति जानता भी तो नहीं है···।"

उत्सुकता से कांपता एण्ड्रयू बीच में ही बोल पड़ा, "मैं इसे जान सकता हूं—मैं प्रतिक्षण इसका परिशीलन करता रहूंगा—और अपनी देखभाल मैं कर ही सकता हूं!"

"ना, नहीं!" उसके पिता ने कहा, "तुम तो इसे जाने ही दो।"

उस समय उसकी माता ने, जो काम करते-करते चुपचाप विचार-मग्न थी, अपना निर्णय सुनाया। वह बोली, "मैं तो यही समझती हूं कि आंद्रा के लिए यह काम अच्छा रहेगा। नलकियों के कारखाने में वह सदा काम करता रहेगा, यह तो आशा नहीं रखनी चाहिए। वहां उन्नति का कोई अवसर नहीं है।"

"और मैं वहां से निकल भागना चाहता हूं," उद्वेग से भर्राए गले से एण्डी बोला, "कभी-कभी मैं सोचता हूं कि तेल की वह दुर्गन्ध अब एक क्षण-भर भी मुझे सह्य नहीं होगी।"

उसके पिता ने आश्चर्य से उसे देखा। उनको इस विरक्ति का भान नहीं था।

माता ने पूछा, "तुमने हमें क्यों नहीं बताया?"

"मैंने तुम्हारा दिल दुखाना नहीं चाहा।"

अब उसने दृढ़ता से कहा, "मैं तो यही समझती हूं कि तुम्हें श्री ब्रुक्स का प्रस्ताव मान लेना चाहिए।"

मौसा टौम बोले, "श्री ब्रुक्स चाहते हैं कि वह कल उनसे मिल ले। तार-घर फोर्थ तथा वुड स्ट्रीट्स के कोने पर स्थित है।"

एण्ड्रयू को उस रात सोना कठिन प्रतीत हुआ और वह अगले दिन बहुत

पहले उठ बैठा।

नाश्ते के समय उसके पिता बोले, "श्री ब्रुक्स से मिलने के लिए मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। परन्तु इस विषय में पहले मैं श्री हे से परामर्श कर लेना चाहता हूं।"

एण्डी को लगा कि उसके पिता एक साधारण बात का बतंगड़ बना रहे हैं। यदि उसपर छोड़ दिया जाता तो वह स्वयं श्री ब्रुक्स के कार्यालय में जाकर कह देता, 'जी हां, मैं इस काम को करूंगा' परन्तु पिता के प्रति उसके हृदय में इतना आदर था कि वह कुछ न बोला और श्री कारनेगी श्री हे से परामर्श के लिए लपके।

निष्कपट श्री हे ने कहा, "उसे खोकर मुझे असुविधा तो होगी परन्तु इसमें एण्ड्रयू का लाभ होने की सम्भावना है। इसलिए मेरी सम्मति है कि वह इस परिवर्तन को कर ले। यदि तारघर उसे न ले तो वह लौटकर यहां आ सकता है।"

इस बीच एण्डी नीली जाकेट और पतलून की बढ़िया वेशभूषा पहने रगड़कर मुंह धोए तथा धूसर बालों में कंघी किए तैयार था; उसकी माता उसकी तैयारी पर निर्णयात्मक दृष्टिपात करके निरीक्षण में संलग्न थी। उस सुहावने वासन्ती प्रभात में वह और उसके पिता पिट्सबर्ग में स्थित तारघर तक दो मील पैदल चलकर गए। फोर्थ तथा वुड स्ट्रीट्स के कोने पर पहुंचकर उन्होंने देखा कि श्री ब्रुक्स का कार्यालय दूसरी मंजिल पर है। सीढ़ी के प्रवेशद्वार पर पहुंचकर एण्ड्रयू ने मार्ग में सोचे हुए निश्चय के अनुसार कार्य किया।

"पिताजी!" रुक-रुककर तथा पिता के सामने खड़ा होकर वह बोला, "आप तो कृपया यहीं ठहरिए न। मुझे यह काम स्वयं करने दीजिए।" उसने यह नहीं बताया कि उसे क्या आशङ्का है—अर्थात् यह कि उसके पिता उसके छोटे कद का होने की ओर ध्यान दिलाएंगे और श्री ब्रुक्स के साथ ऐसी उपेक्षा से बात करेंगे कि काम मिलने का उसका अवसर वस्तुतः बहुत क्षीण हो जाएगा। उसने विनयपूर्वक कहा, "पिताजी! कृपा कीजिए, यह सब मैं स्वयं करना चाहता हूं।"

पिता ने उसे अनुसंधानपूर्वक देखा और तब कहा, "बहुत अच्छा, बेटे! मैं यहां तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।" इस प्रकार वे प्रवेश-द्वार के बाहर खड़े हो

गए और एण्ड्रयू व्यवस्थापक से भेंट करने चला गया।

श्री ब्रुक्स इतने सौम्य निकले कि बालक तत्काल ही आश्वस्त हो गया। उसने अपनी व्यावसायिक बातचीत में न्याय पर रहने का यत्न किया।

उसने बताया, "पिट्सबर्ग से मैं भली भांति तो परिचित नहीं हूं, परन्तु शीघ्र ही इसे जान सकता हूं। मैं जानता हूं कि मैं छोटा हूं और सम्भवत: पद के अनुकूल पर्याप्त मजबूत भी न होऊं, परन्तु मुझे विश्वास है कि मैं कर लूंगा। मैं केवल इतना ही चाहता हूं कि मुझे परीक्षा देने का अवसर मिले।"

व्यवस्थापक ने पूछा, "क्या ढाई डालर साप्ताहिक वेतन सन्तोषजनक है?"

"जी हां, जब तक मैं अधिक न कमा पाऊं।"

"तुम काम कब से आरम्भ कर सकते हो?"

इसका निर्णय करने के लिये एण्डी को दो क्षण से अधिक नहीं लगने थे। "आप चाहें तो मैं इसी क्षण काम आरम्भ कर सकता हूं।"

"यही ठीक है," कहकर व्यवस्थापक ने उच्च स्वर में पुकारा, "जॉर्ज!" साथ के कक्ष से एक बड़ा-सा लड़का निकलकर आया।

ब्रुक्स महोदय बोले, "देखो जॉर्ज, यह हमारा नया संदेशवाहक एण्ड्रयू कारनेगी है। एण्ड्रयू, जॉर्ज मैक्लेन नगर तथा हमारी कार्य-पद्धति से परिचित होने में तुम्हारी सहायता करेगा।"

जॉर्ज एण्ड्रयू को कुछ तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देख रहा था। उसने पूछा, "इसका हम क्या करेंगे? उसको सौंपे गये काम की दृष्टि से तो वह छोटा है।"

श्री ब्रुक्स ने संक्षेप से कहा, "इसका निर्णय तुम मुझपर छोड़ो। अब एण्ड्रयू को वहां भीतर ले जाओ और संकेतकों से तार ले लो। आज उसे अपने साथ ले जाओ। वह देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो।"

संकेतक कक्ष में जॉर्ज के साथ एण्डी का कुछ समय बीता था कि उसे अपने पिता का ध्यान आया।

"अरे भाई!" वह बोला, "मैं पिताजी को तो पटरी पर ही खड़ा छोड़ आया हूं। मुझे नीचे जाकर उन्हें बताना होगा।"

वह सीढ़ियों से नीचे दौड़ा गया। चिल्लाकर उसने बताया, "पिताजी, सब कुछ तय हो गया; मुझे जगह मिल गई और मुझे अभी तुरन्त काम करना है।"

उसका प्रफुल्ल वदन ही उसके पिता को बता रहा था कि वह कितना प्रसन्न है।

वे बालक के कन्धे पर हाथ धरकर बोले, "बेटे! तुम्हारी प्रसन्नता में मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी माता को सन्तोष होगा। मैं जानता हूं तुम अपनी ओर से कोई कसर नहीं रखोगे।"

: ३ :

सन्देशवाहक लड़का

जैसाकि एण्ड्र्यू ने पीछे अनुभव किया, वह दिन उसे पथप्रदर्शक लगा—जीवन को एक मोड़ देनेवाला। अब अंधेरी कोठरी तथा दुर्गन्धमय तैल-कुण्ड से छुटकारा पाकर, दिन के प्रकाश और नगर के गली-कूचों, कारखानों एवं गोदामों की चहल-पहल में पहुंचकर एण्डी प्रसन्न हो गया और काम की उसको इतनी लगन लगी कि उसे घर भोजन करने का भी अवकाश कभी ही मिल पाता था, जिससे वह इसके विषय में परिवार में चर्चा करता। वह तत्काल नगर, उसकी गलियों के नक्शे और गलियों में स्थित कारोबारों को क्रमशः कण्ठस्थ करने में जुट गया। नगर के प्रमुख व्यक्तियों—व्यापारियों, कारोबारों के सञ्चालकों और व्यवसायियों—से वह परिचित हो गया। इनमें से एक परिचित का उसे विशेष गर्व था; वे थे वकील एडविन एम० स्टैंटन। ये पीछे राष्ट्रपति लिंकन के युद्ध-सचिव बने।

तारघर का कारोबार फैला तो ब्रुक्स महोदय ने एक और लड़के की आवश्यकता जतलाई। एण्ड्र्यू ने कहा, "सम्भवतः मैं एक को ला सकूं," और वह ऐलेगेनी में अपने एक पड़ोसी डेविड मैककार्गो को ले आया। जॉर्ज मैक्लेन चला गया तो एण्ड्र्यू ने 'तल के हूशों' में से तीन और बालक ला दिए—राबर्ट पिटकाएर्न, हेनरी ओलिवर तथा विल्ली मोरलैण्ड। कारोबार के नियत समय से पूर्व कार्यालय को झाड़ने-बुहारने के लिए इन्हें बारी-बारी से पर्याप्त पहले आना होता था। जब ईस्टर्न टेलिग्राफ कम्पनी के अधीक्षक रीड, जो स्वयं डन्फर्मलिन के निवासी थे, पिट्सबर्ग आए, तो वे इन स्कॉच बालक संदेशवाहकों के दल से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इनको एक-सी वर्दी दे दी—गहरे हरे रंग की कुर्ती और पाजामा बनवा दिया। इस वेष में वे नगर की गलियों में विशेष आकर्षण के केन्द्र हो गए।

एक निश्चित सीमा से बाहर तार-वितरण के लिये संदेशकों को अतिरिक्त

मुद्रा लेने की अनुमति थी। बालकों में विवाद खड़े हो गए, कुछ ने दूसरों पर आरोप लगाया कि ऐसे वितरण में वे अपने भाग से अधिक लेने की तिकड़म भिड़ाते हैं। कटुता यहां तक बढ़ती प्रतीत हो रही थी कि उनकी मित्रता संकट में पड़ गई। यह देख एण्डी ने अपनी विशिष्ट नीतिमत्ता से दल से एक दिन कहा, "हमें ऐसा तो नहीं करना चाहिए; हम यह करें कि संदेश कौन बांटता है इस-पर तो ध्यान न दें और मुद्राओं का एक साझे का कोष बना लें और महीने के अन्त में उसको बराबर बांट लें।"

व्यापार-जगत् में प्रयुक्त 'पूल' शब्द से वह अभी परिचित नहीं हो पाया था, परन्तु वह जो भी कुछ था, यही है। दूसरों ने प्रस्ताव पर विचार किया और सहमत हो गए। इतना विशेष कर दिया कि कोषाध्यक्ष एण्डी बने। उसके पश्चात् केवल एक उलझन नयी आई जोकि मिठाइयों तथा केकों के चालू खातों की थी। अब तक बालक यह सामान अपनी मुद्राओं से खरीदते थे, अब वे इन्हें पड़ोसी नानबाई से उधार खरीदने लगे। यद्यपि कुछ बालक अपने हिसाब से अधिक ले लेते थे, तथापि नानबाई को आशा रहती थी कि उनके लाभांश से उसका पावना चुकता हो जाएगा। अब एंडी ने नानबाई को सूचना दे दी कि वह दो-तीन अति लोलुप बालकों के उठाए ऋण का उत्तरदायी नहीं होगा। बोब पिटकाएर्न को मिठाइयों की सबसे अधिक लालसा रहती थी। जब एंडी ने अपव्यय के लिए उसे फटकारा तो उसने बड़ी गम्भीरता से बताया, "एण्डी मेरे उदर में तो कोई सजीव वस्तुएं हैं—जब तक मैं इन्हें मिठाई नहीं खिला देता वे मेरे उदर को भीतर ही भीतर कुरेदती हैं।"

बालों का यह दल कैसा था! रोबर्ट पिटकाएर्न बढ़ते-बढ़ते पेनसिल-वेनिया रेलरोड के उप-प्रधान के आसन पर विराजमान हुआ, इस अन्तर में उसने अपने खाते में भी रुपया लगाया और अन्त में वह पेनसिलवेनिया के समृद्धतम व्यक्तियों में गिना गया। डेविड मेकक्रार्गो ने भी रेलपथ का धन्धा अपनाकर एलियन वैली रेलवे तथा अन्य रेलपथों का निर्माण किया। हेनरी ओलिवर एक बड़े निर्माता-कारोबार का अध्यक्ष बना, मेनेसोटा लौह-धातु-क्षेत्र के विकास में सहायक हुआ और मृत्यु समय करोड़पति रहा। विलियम मोरलैण्ड पिट्सबर्ग के एक प्रमुख वकील अटार्नीके रूप में फला-फूला।

एण्ड्रयू लगभग एक वर्ष तक संदेशवाहक के काम पर रहा था कि एक

दिन निचली मंजिल में स्थित सार्वजनिक कार्यालय के सञ्चालक ग्लास महोदय ने श्री ब्रुक्स से कहा, "मैं चाहता हूं कि जब मैं किसी काम से बाहर जाऊं तो तरुण कारनेगी कुछ देर मेरे कार्यालय में बैठ जाए। एण्डी उच्चतर दायित्व के कार्यभार के इस आकस्मिक आमंत्रण से चौंका तो सही, परन्तु इस प्रकार उसको भेजे जानेवाले संदेशों को स्वीकृत करने और संकेतकों के कक्ष से निकलनेवाले तारों के वितरण के लिये संदेशवाहकों को उचित रूप से सौंप दिए जाने का ध्यान रखने का अवसर मिला। ग्लास महोदय उन दिनों राजनीति से खेलने लगे थे। इसके पश्चात् एण्डी को उनकी अनुपस्थिति में कार्यालय की देखभाल के लिए प्रायः बुलावा मिलने लगा।

अब बालकों को सवा ग्यारह डालर मासिक वेतन मिलने लगा था। आगामी वेतन के दिन जब संदेशवाहक अपना वेतन लेने के लिए पंक्ति बांधकर खड़े हुए तो एण्डी यह देखकर व्याकुल हो गया कि और सबको वेतन दे दिया गया और उसे पंक्ति से बाहर धकेल दिया गया। भय से उसका सिर चकरा गया। क्या उसे कार्यभार से मुक्त कर दिया जानेवाला है? उससे कौन-सा अपराध हो गया? परन्तु जब सब बालक कक्ष से बाहर चले गए तो व्यवस्थापक ने उसे बतलाया कि तुम्हारे वेतन में सवा दो डालर की वृद्धि हो गई है। और यह कहकर उसे साढ़े तेरह डालर थमा दिए।

वह शनिवार की सांझ थी। एण्डी ने अपनी स्मृति से बताया कि वह अधिकतर दौड़ता हुआ घर पहुंचा।-ऐलेगेनी पुल को उसने घोड़ागाड़ी की सड़क पर दौड़कर पार किया, कारण कि पैदल रास्ता चलनेवालों से इतना भरा हुआ था कि वहां वह अपनी इच्छानुसार वेग से न दौड़ सका। परन्तु चलते-चलते उसने एक नाटकीय प्रदर्शन की योजना बना डाली। रिबैका स्ट्रीट में पहुंचकर सांस लेने के लिये वह धीमा पड़ गया ····चलकर घर पहुंचा और बड़ी उपेक्षापूर्वक सदा के सवा ग्यारह डालर मां को दे दिए। दूसरे बालक उसे सदा कंजूस समझते थे, क्योंकि उसने अपने ऊपर कभी कुछ भी व्यय नहीं किया। वे नहीं जानते थे कि कारनेगी कितने संगठित हैं, परिवार के तीनों कमाऊ कितनी सावधानी से अपनी एक-एक कौड़ी साज-सज्जा तथा वस्त्र खरीदने के लिए और अपनी पुरानी मित्र श्रीमती हैंडरसन से लिए बीस पौण्ड ऋण को चुकाने के लिए जोड़ रहे थे।

एण्डी की माता इस कोष के लिए, जब कभी बचा पाती चांदी का आधे डालर का सिक्का जुराब में सरकाकर जोड रही थी। जब अन्त में ये दो सौ सिक्के हो गए तो एण्डी उन्हें पिट्सबर्ग खींच ले गया, बीस पौण्ड की हुण्डी खरीदी और इसे श्रीमती हैंडरसन को भेज दिया। यह आनन्द मनाने का दिन था; कारनेगी परिवार ऋणमुक्त हो गया था…।

परन्तु आज एण्डी ने, यद्यपि उसका रहस्य उसमें से फूटा पड़ रहा था, अपने सौभाग्य की बात किसीसे तब तक न कही जब तक कि वह और उसका नौ वर्ष का भाई टॉम विश्राम के लिए अटारी में अपने छोटे-से शयन कक्ष में न पहुंचे। जब उसने अपना रहस्य फुसफुसाहट में प्रकट किया और चांदी के दो डालर तथा पच्चीस सेण्ट का एक टुकड़ा, दो भिन्न-भिन्न जेबों से निकालकर दिखाए—वह नहीं चाहता था कि वे आपस में टकराकर बजते और प्रश्नों का कारण बनते—तो टॉम घटना के प्रताप से इतना स्तब्ध रह गया कि बोलती बन्द हो गई। अन्त में उसने किसी तरह पूछा "एण्डी, अब इनका क्या करोगे ?"

बिस्तार में लोट-पोट होते एण्डी ने उत्तर दिया, "मां को तो दूंगा ही। मैं केवल लोगों को महान आश्चर्य में डालना चाहता हूं। टॉम, मैं अब ऊपर चढ़ चला हूं; किसी दिन हम मिलकर व्यापार करेंगे—कारनेगी ब्रदर्स (के नाम से)।"

टॉम ने जानने के लिए पूछा, "कैसा व्यापार ?"

"जो हो, अभी तो मैंने निर्णय नहीं किया; परन्तु हम खूब धन कमाएंगे… और पिताजी व माताजी अपनी गाड़ी की सवारी किया करेंगे…।" वह योंही तब तक बड़बड़ाता रहा जब तक कि एक धीमे खुर्राटे ने यह नहीं जताया कि अब सुननेवाला सो चुका है।

अगले दिन प्रातःकाल कलेवे के समय जब एण्डी ने दो डालर और पच्चीस सेंट रखे तो उसके माता-पिता को अपनी आंखों पर बड़ी कठिनता से विश्वास हुआ। उसकी माता की आंखों में आंसू उमड़ आए, और उसके पिता ने उसके कन्धे पर एक हाथ रखकर धीरे से कहा, "आन्द्रा ! मुझे तुमपर गर्व है।" एण्ड्र्यू ने पीछे कभी बताया कि जीवन में कितनी ही सफलताएं या सम्मान मिले परन्तु किसीने मुझे इतना रोमांचित नहीं किया जितना कि इस साधारण-

सी विजय ने किया।

बालक सन्देशवाहक अपना वेतन पूरी तरह कमाकर ही लेते थे। उन्हें पारी-पारी से एक दिन छोड़कर दूसरे दिन सांझ को कार्यालय बन्द होने तक काम पर रहना पड़ता था। और उन रातों में एण्डी कभी ही ग्यारह बजे से पहले घर पहुंचता होगा। एक-एक दिन छोड़कर उन्हें सायं ६ बजे छुट्टी मिल जाती थी। वर्फीले तूफानवाली रातों और प्रभातों में ऐलेगेनी पुल को पैदल पार करना कड़वा घूंट पीना था, परन्तु आने-जाने के लिए व्यय करने की तो कोई बात ही विचार में न आ सकती थी।

सांझ को काम पर रहने का बदला एण्डी को एक दूसरे रूप में मिल रहा था। पिट्सबर्ग थियेटर के व्यवस्थापक के तार प्रायः देने होते थे। इसके भव्य भीतरी भाग की प्रसिद्धि एण्डी सुन चुका था—दीवारों पर सुनहरी घुमावदार सजावट, पीतल की डोरी से बंधे गहरे लाल मखमली पर्दे और महान स्फटिक-मय झाड़। एक सांझ को जब उसे थियेटर का तार देना था तो उदाराशय व्यवस्थापक ने उसे सबसे ऊपर के मंच तक जाने दिया (वहां के आसन सुरक्षित नहीं रखे जाते थे) और वहां वह वशीकृत-सा बैठा कुछ देर अभिनय देखता रहा। उसके पश्चात् तो जब कभी उसे थियेटर के व्यवस्थापक के नाम का तार सांझ तक भी देना होता तो वह वितरण-समय को नाटक के सायं-कालीन आरम्भ समय तक बढ़ा लेने की युक्ति भिड़ा लेता था; उन दिनों यह समय आज के समय से कुछ पहले हो जाता था।

यहां उसको एक नया संसार दिखाई दिया। उसने अपने जीवन में शेक्सपियर की एक भी पंक्ति न पढ़ी थी और उन दिनों शेक्सपियर नाटक-प्रेमियों के कृपापात्रों में से एक था। ध्यान और उत्सुकतावश सांस रोके हुए एण्डी ने जगमगाती दृश्यावली और समारोह देखे और उस समय के प्रसिद्ध अभिनेता-अभिनेत्रियों—जुनियस ब्रुटस बूथ, वालेक्स, आदि के मुंह से एवन के वैतालिक की अमर पंक्तियां सुनीं। केवल अपनी धारणा-शक्ति के बल पर ही, कागज पर पढ़े बिना ही, उसने नाटकों से लम्बे-लम्बे उद्धरण कण्ठस्थ कर लिए थे। तब से उसने शेक्सपियर को आदर का जो स्थान दिया वह केवल बर्न्स और स्कॉट के पश्चात् था।

एण्डी अभी तक बहुत कम पुस्तकें पढ़ पाया था, क्योंकि पिट्सबर्ग अथवा

ऐलेगेनी में कोई सार्वजनिक अथवा वितरण पुस्तकालय नहीं था और परिवार पुस्तक खरीदने की स्थिति में नहीं था। कर्नल जेम्स एण्डरसन के पास, जो निर्माता के धन्धे से निवृत्त होकर ऐलगेनी में रह रहे थे, लगभग चार सौ पुस्तकों का एक पुस्तकालय था। अब उनका यह विचार हुआ कि इससे श्रमिक बालक भी लाभ उठा लें—वे भी कभी श्रमिक बालक रहे थे। कर्नल स्वयं पुस्तकाध्यक्ष बने; प्रत्येक शनिवार को कोई भी बालक पुस्तकालय से चुनकर पुस्तक ले लेता और आगामी शनिवार तक उसे अपने पास रख सकता था। उस दिन ठीक दशा में लौटा देने पर वह दूसरी पुस्तक ले सकता था। योजना इतनी लोकप्रिय हुई कि उदारचेता कर्नल एण्डरसन ने इसका विस्तार करने का निर्णय कर लिया। वे न्यूयार्क गये और वहां इतनी पुस्तकें खरीदीं कि पुस्तकों की संख्या अठारह सौ हो गई। अब उनका विचार हुआ कि यदि नगर स्थान दे दे तो वे 'दि मेकेनिक्स' तथा 'एप्रेंटिसेज लाइब्रेरी' नाम से एक पुस्तकालय स्थापित कर दें। नगर परिषद् स्थान देने पर सहमत हो गई; एक वैतनिक पुस्तकाध्यक्ष को पुस्तकालय सौंप दिया गया और काम चल निकला।

परन्तु नयी संस्था का एक नियम एण्डी के लिए दुर्भाग्य था। विधिवत् प्रतिज्ञाबद्ध शिक्षार्थियों के लिए पुस्तकालय निःशुल्क था, परन्तु शेष सबको पुस्तक लेने का अधिकार प्रतिवर्ष दो डालर शुल्क देने पर मिल सकता था। एण्डी ने पुस्तकालय में जाकर पुस्तकाध्यक्ष से पूछा, "क्या संदेशक बाल शुल्क दिए बिना पुस्तकें ले सकता है?" पुस्तकाध्यक्ष ने पूछा, "क्या तुम प्रतिज्ञाबद्ध हो?"

"नहीं श्रीमन्! परन्तु···।"

"संदेशवाहक बालक हाथों से तो कोई काम नहीं करते।" पुस्तकाध्यक्ष ने बीच में ही टोकते हुए ऐसे कहा, मानो यह अंतिम निर्णय ही हो।

प्रत्युत्तर में एण्डी ने कहा, "हाथ से तो शायद नहीं, परन्तु अपनी टांगों से तो वे बहुत-से काम करते हैं।"

पुस्तकाध्यक्ष ने कहा, "तथापि दोनों काम एक-से तो नहीं है।" बहुत क्षुब्ध होकर एण्डी ने इस बात को जनता के सामने रखने का निर्णय किया। इसलिए उसने 'पिट्सबर्ग डिस्पेच' में एक पत्र मुद्रित कराया और शिकायत की कि केवल-मात्र विधिवत् प्रतिज्ञाबद्ध शिक्षार्थियों के लिए ही पुस्तकालय के प्रयोग

को सीमित कर नये व्यवस्थापकों ने 'उदार दानी के आशय को गलत समझा है। यह विचार करना भी कठिन है कि दानी यह चाहता था कि दुकानों में नौकरी करनेवाले वालों को केवल इसलिए वंचित रखा जाय कि वे प्रतिज्ञा-बद्ध नहीं हैं, और उनमें से अधिकांश दो डालर का आवश्यक शुल्क दे नहीं सकते।' पत्र पर उसने इन शब्दों में हस्ताक्षर किए—'श्रमिक बालक, प्रतिज्ञा-बद्ध नहीं।'

छापे में आने का एण्डी का प्रथम साहस था, और जब एक बार उसने इसको चख लिया तब तो उसने प्रायः अपनी लेखनी चलाई। पुस्तकालयाध्यक्ष ने शीघ्र ही, समाचार-पत्र के स्तम्भ में ही, उत्तर दिया कि 'निःशुल्क सूची को उन्हीं तक सीमित रखना आवश्यक हुआ जिनके लाभ के लिए दान दिया गया था।' जैसीकि सम्भावना थी एण्डी ने सम्पादक के नाम दूसरा पत्र लिखकर तत्काल प्रत्युत्तर दिया। इस पत्र में उसने लिखा—'प्रश्न यह है कि क्या दान का अभिप्राय 'शिक्षार्थी' शब्द के संकुचित अर्थ के अनुसार उन्हीं व्यक्तियों के लिए था कि जो व्यक्ति किसी व्यापार-व्यवसाय की शिक्षा ले रहे हों और प्रतिज्ञाबद्ध हों अथवा यह सभी श्रमिक बालकों के लिए दिया गया था—चाहे वे बद्ध हों या न हों। यदि पहली बात ठीक है तो व्यवस्थापकों ने निश्चय ही उदार दानी के अभिप्रायों को गलत समझ लिया है।

—श्रमिक बालक"

इस टिप्पणी के प्रकाशित हो जाने पर पुस्तकाध्यक्ष ने निश्चय ही कर्नल एण्डरसन से परामर्श किया होगा, क्योंकि तीन दिन पश्चात् 'डिस्पैच' के सम्पादकीय पृष्ठ पर एक पंक्ति इस प्रकार छपी—'व्यापार से असम्बद्ध श्रमिक बालक कृपया इस कार्यालय में दर्शन दे।'

एण्डी पहुंचा। उसे पुस्तकालयाध्यक्ष के पास भेज दिया गया और वहां उसको बता दिया गया कि नियम को शिथिल कर दिया गया है। सब श्रमिक बालक, चाहे वे बद्ध शिक्षार्थी न भी हों, अब निःशुल्क सूची में है। अतएव कारनेगी-निःशुल्क-सार्वजनिक-पुस्तकालयों की आधारभूत विचारधारा के लिए हम कर्नल जेम्स एण्डरसन के कम ऋणी नहीं हैं। ये पुस्तकालय राष्ट्र के लिए कितने वरदान सिद्ध हुए हैं! एण्ड्र्यू कारनेगी ने आगे चलकर स्वयं लिखा, "जिनका मैं उस साहित्य-रसास्वादन के लिये ऋणी हूं जिसको कि मैं मनुष्य

द्वारा अर्जित करोड़ों की सम्पत्ति से भी नहीं बदलना चाहता।" जब कारनेगी समृद्ध हो गया तो उसने ऐलेगेनी को एक भवन तथा पुस्तकालय भेंट किए और भवन के सम्मुख कर्नल का स्मारक-स्तम्भ खड़ा करवाया। इस स्मारक पर खुदे हुए लेख का एक भाग इस प्रकार है :

पश्चिमी पेनसिलवेनिया में निःशुल्क पुस्तकालयों के संस्थापक कर्नल जेम्स एण्डरसन की स्मृति में...यह स्मारक उन श्रमिक बालों में से अन्यतम एण्ड्रयू कारनेगी ने कृतज्ञतापूर्ण स्मृति में स्थापित किया कि इस प्रकार जिनके लिए ज्ञान तथा विमर्श के बहुमूल्य कोष का वह द्वार खुल गया था जिसमें प्रविष्ट हो युवक उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ सकते हैं।

सांझ के समय एण्डी अपने साथियों—जान फिप्स, टॉम मिलर, जिम्मी विलसन और बिल्ली काउली के साथ फिप्स महोदय की जूता गांठने की दुकान पर कभी-कभी अवश्य आ बैठता था, परन्तु उसकी वे एकान्त सांझें जिनमें कि वह घर पर रहता था, प्लूटार्क कृत 'लाइव्स', मैकाले तथा लेम्ब के निबन्ध, प्रेस्कोट-लिखित स्पेनवासियों द्वारा मैक्सिको तथा पीरू की विजय के इतिहास, और विशेषतया बेनक्राफ्ट-कृत 'हिस्ट्री ऑव दि युनाइटेड स्टेट्स' (संयुक्त राज्य अमरीका का इतिहास)—जिसका उसने दूसरी सब पुस्तकों से अधिक तन्मयता से अध्ययन किया—पढ़ने में बीतने लगीं। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि उसने तकनीकी विषयों, विशेषतया लोह-निर्माण-सम्बन्धी कुछ पुस्तकें भी ध्यान से पढ़ीं—लोह-निर्माण जोकि उसके भावी भाग्य की भविष्यवाणी थी, यद्यपि उस समय किसीने उसे नहीं समझा।

उसने मोसा जॉर्ज लॉडर तथा तरुण जॉर्ज—अपने बचपन के लाड़ले बन्धु डोड—से पत्र-व्यवहार बनाए रखा। उसके पत्रों ने, जिनमें कि संयुक्त राज्य अमरीका की स्वतन्त्रता तथा साहित्यिकता पर गर्व की भरमार रहती थी, बन्धु डोड के हृदय में वह बीज बोया जोकि कुछ वर्ष पश्चात् उसके अमरीका-प्रवास के रूप में फलीभूत हुआ।

विलियम कारनेगी स्वीडन बोर्गिन चर्च में सम्मिलित हो गया था और उसकी पत्नी ने, स्वयं दूर रहते हुए भी, उसकी आस्था में कभी हस्तक्षेप नहीं किया। एण्डी इस चर्च के 'सण्डे स्कूल' में कई वर्ष उपस्थित होता रहा—यहां एक छोटा-सा 'सण्डे स्कूल पुस्तकालय' था जिसमें अधिकतर स्वीडन बोर्गिन विषयों

की पुस्तकें थीं, एण्डी ने कुछ समय इस पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष के रूप में भी सेवा की और सण्डे स्कूल की पत्रिका 'ड्यूड्रोप' के लिए कभी-कभी लेख भी लिखे। एक बड़ी बात यह है कि इन छोटे निबन्धों में से एक में उसने युद्ध का प्रतिवाद किया था जो उस समय लिखा गया था जबकि वह अठारह वर्ष की आयु का था और जिस समय कि क्रीमिया में इंगलैण्ड रूस के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। एण्डी मण्डली के साथ भी गाता था। उसको संगीत की अच्छी परख थी, परन्तु मण्डली के नायक के शब्दों में, उसकी आवाज में कुछ कमी थी। तथापि, सदा की भांति, इस अनुभव से भी उसे लाभ हुआ—वे प्राय: जिन 'वेच' गानों को गाते थे उनमें उसकी रुचि हो गई तथा अच्छे संगीत के प्रति मान व उसमें रस लेने की प्रवृत्ति का विकास हो गया।

उसके माता-पिता स्कॉच होते हुए भी विचारधारा में उदार थे, यह बात उस दिन स्पष्ट हो गई जबकि एक शरद् ऋतु में शनिवार के दिन ऐलेगेनी नदी का पानी जम जाने से सख्त और चिकना बन गया था। एण्डी को भली भांति स्मरण था कि पवित्र दिन—रविवार—को आमोद-प्रमोद के विषय में स्कॉटलैण्ड के अधिकांश निवासी कितने दृढ़ होते हैं; और वह हिम-अवसर्पण का बड़ा शौकीन था। उस सांझ को उसने सकुचाते हुए मां-बाप से कहा, "प्रात: चर्च से पहले कुछ देर हिमावसर्पण कर लेने में कुछ हानि तो नहीं है?"

उसकी उदारमना माता ने तत्काल उत्तर दिया, "तुम चाहे जितनी देर तक हिमावसर्पण करो—मेरा तो यही विचार है।"

उसके पिता ने संशोधन करते हुए कहा, "पत्नि ! मैं इतना तो आगे नहीं बढ़ूंगा—; अच्छा, सवेरे थोड़ी देर तक हिमावसर्पण करने में तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु मुझे आशा है कि मेरे साथ चर्च जाने के लिए तुम समय पर घर पहुंच जाओगे।"

इसलिए उस दिन एण्डी कुछ पहले जाग पड़ा और जमी हुई नदी पर उसने कुछ हर्षमय घण्टे बिताए।

: ४ :

सीढ़ी पर ढ़ चला

संदेशवाहक लड़के के रूप में एण्ड्र्यू की नौकरी एक वर्ष से कुछ अधिक समय तक रही। आरम्भ से ही तार-उपकरणों ने उसका चित्त चुरा लिया और जब कभी अवसर पाता वह संकेतकों को संकेत भेजते व प्राप्त करते हुए ध्यान से देखता और सुनता था। उसने मोर्स वर्णमाला सीख ली और जिस दिन प्रातःकाल वह कार्यालय को बुहारने की पारी पर पहले आता तो वियोजित उपकरण पर द्रुत-तीक्ष्ण दबाव से बिन्दु और लकीर की स्थानापन्न लम्बी हलकी-सी आवाजों का अभ्यास करता था। उसने उन पड़ोसी स्टेशनों को संकेत देने का भी दुःसाहस किया जिनके कि संकेताक्षर उसने सीख लिए थे और कार्यालय की गपशप में जिनके विषय में उसे यह ज्ञात हो गया था कि वहां भी कोई किशोर ही कार्य करता है। अपने-आपको नौसिखिया बताकर उसने इन लोगों से कुछ शब्दों का आदान-प्रदान भी किया। एक दिन प्रातःकाल जब वह अकेला ही था तो उसने सुना कि पिट्सबर्ग को संकेत दिया और जोर से दुहराया जा रहा है और उसने उत्तर देने का साहस किया। यह फिलेडेल्फिया से भेजा गया संकेत था।

फिलेडेल्फिया से संकेत मिला, "मृत्यु की घोषणा का एक तुरन्त-संदेश देना है; क्या तुम ले सकते हो ?"

एण्डी ने उत्तर दिया, "हां।"

उन दिनों के संग्राही उपकरण कागज की एक पट्टी पर बिन्दुओं और रेखाओं को अंकित कर देते थे। एण्डी ने संदेश की प्रतिलिपि की और वितरण के लिए दौड़ गया। वह इस बात से कुछ चिन्तित था कि उसके इस दुःसाहस के विषय में ब्रुक्स महोदय क्या सोचेंगे ! उसने क्षमा मांगते हुए कहा, "यह एक सर्वथा आवश्यक संदेश था श्रीमन् ! और मैंने सोचा—अच्छा यही है कि मैं इसे तुरन्त संभाल लूं।"

"बहुत ठीक !" श्री ब्रुक्स ने दुलार से कहा, "तुम जब कभी अकेले यहां रहो तो ऐसे ही कर सकते हो; परन्तु," चेतावनी देते हुए बोले, "बहुत सावधान रहना, भूल करने की क्षमता हममें नहीं है।"

उस दिन से संकेतक जब कभी भोजनार्थ जाते तो वे एण्डी को कार्यालय में अकेला छोड़ जाने लगे और वह संदेशों को न केवल खिड़की पर लेने लगा, अपितु उन्हें भेज भी देता था। अब उसका वेतन बढ़कर चार डालर प्रति सप्ताह हो गया था। शीघ्र ही उसने अनुभव किया कि फीते पर उभरनेवाले बिन्दुओं और लकीरों पर निर्भर हुए बिना ही उपकरणों की टिक-टिक सुनकर वह आनेवाले संकेतों को ग्रहण कर सकता है—इसलिए जब उसने यह चर्चा सुनी कि केण्टकी में एक संकेतक बालक सर्वथा कान से ही संदेश ग्रहण कर सनसनी उत्पन्न कर रहा है, एण्डी ने बड़ी सरलता से विवरणों पर विश्वास कर लिया।

ह्यूज नाम का एक वृद्ध व्यक्ति कार्यालय में प्रतिलिपिक था, जिसका काम फीते पर से संदेश को पढ़कर लिखना था। जब एण्डी संकेतक का काम करने लगा तो वह बड़ा उद्विग्न हुआ और संदेशवाहक बालक का प्रतिलिपिक बनने में बड़बड़ाने लगा। इसलिए एण्डी ने केवल उसको वास्तविकता जतलाने के लिए, जब संदेश आया तो फीते का चलना रोक दिया और संदेश को ध्वनि से ही ग्रहण करने लगा।

ह्यूज ने अपना अपमान अनुभव किया। वह प्रतिवाद में बोला, "तुम्हें ऐसा करने का अधिकार नहीं है; ऐसा कभी नहीं हुआ।"

"कॅटकी में ही जिम्मी लियोनार्ड यही कुछ कर रहा है," एण्डी ने प्रत्युत्तर में कहा। इसी बीच वह संदेश सुनता और उसे लिखता भी गया। "यह आसान है।"

वृद्ध व्यक्ति ने हठ करते हुए कहा, "सब गड़बड़ा जाएगा और इसके लिए तुम्हें झिड़कियां खानी पड़ेंगी।"

परन्तु इसके विपरीत एण्डी की वेतन-वृद्धि हो गई। इस कार्यालय का कारोबार शीघ्र बढ़ रहा था। एक अन्य संकेतक की आवश्यकता हुई, और एण्डी को पच्चीस डालर मासिक वेतन पर वह नौकरी मिल गई।

कुछ ही दिन पश्चात् ब्रुक्स महोदय ने एण्डी को अपनी मेज पर बुलाया और

पूछा, "एण्डी, जानते हो ग्रीन्सबर्ग कहां है ?"

"हां श्रीमन्, यहां से पूर्व में।"

"वहां का संकेतक, श्री टेलर, कुछ सप्ताहों की छुट्टी चाहता है, और हमें उसके स्थान पर किसी व्यक्ति की आवश्यकता पड़ेगी, क्या तुम वह काम कर सकोगे ?"

"हां श्रीमन् !" एण्डी ने निःसंकोच उत्तर दिया।

"ठीक है, अच्छा तो हम तुम्हारी परीक्षा के लिए तुम्हें वहां भेजेंगे।"

जब एण्डी यह समाचार घर पर लाया तो कारनेगी-परिवार में बड़ी चहल-पहल रही। उसकी माता ने तत्काल उसके वस्त्रों की चिन्ता की। उसने कहा कि उसे नई कमीज़ मिलनी चाहिए। परन्तु उसके पिता घटना के संकेत के विचार में ही स्तब्ध रह गए।

"उत्तरदायित्व तो देखो ! सत्रह वर्ष का भी वह नवम्बर में होगा ! आन्द्रा, क्या तुम अपने-आपको इस काम के सर्वथा योग्य समझते हो ?" उनके उद्गार थे।

एण्डी ने बड़े आत्मविश्वास से उत्तर दिया, "जी हां, मैं जानता हूं, मैं यह कर सकता हूं।"

"बहुत अच्छा, मुझे निश्चय है कि तुम इस सम्मान के योग्य सिद्ध होओगे," उसके पिता ने कहा।

यात्री घोड़ागाड़ी से ३० मील की यात्रा एक दुर्लभ मनोरंजन रहा—विशेषतया सारे मार्ग में पेनसिलवेनिया रेलरोड के लिए गहरे गढ़े खोदते और ढेरों मिट्टी के बांध बांधते श्रमिकों का कौतुकपूर्ण दृश्य। यह रेलरोड फिलडेल्फिया से पिट्सबर्ग तक सीधी रेल पटरी बिछा रही थी। एण्डी ने उस समय सपने में भी कभी यह न देखा था कि वह शीघ्र इस बड़े उद्योग से सम्बद्ध हो जायगा।

ग्रीन्सबर्ग का होटल वह पहला सार्वजनिक स्थान था जहां कि एण्डी ने पहले-पहल भोजन किया था और उसकी दृष्टि से वह भोजन बहुत ही अच्छा था। संकेतक टेलर को अवश्य बहुत आश्चर्य हुआ होगा जबकि बिना मूंछ-दाढ़ीवाले, गुलाबी गालोंवाले, सन के से बालोंवाले नाटे कद के बालक ने कार्यालय में आकर अपने-आपको उसका स्थानापन्न बताया होगा। परन्तु वह

तरुण कारनेगी से तार पर बातचीत कर चुका था और उसकी योग्यता से कुछ-कुछ परिचित था। और कारनेगी ? वह तो किसी अच्छी नौकरी के लिए इतना उत्सुक था कि वह सांझ को देर तक कार्यालय में इसलिए रुकता था कि कोई भी सम्भव संकेत न छूटने पाए। एक दिन सायंकाल जबकि बादल गरज रहे थे और वह बैठा पुस्तक पढ़ रहा था कि इतने में बिजली चमकी और उसने 'कुंजी' को छू दिया। उसे ऐसा लगा कि किसी दैत्य ने एक नोकदार डंडे से उसे पीटा हो—वह स्टूल समेत पृथ्वी पर बिखर गया, उसकी नसें फटी जा रही थीं। इसने इतना चौंका दिया था कि घन-गर्जन के समय वह विशेष रूप से सावधान रहने लगा।

ग्रीन्सबर्ग में एण्डी की ख्याति-सी फैल गई। लोग उसके कार्यालय में केवल इसलिए आने लगे कि देखें कि वह कान से संदेश कैसे ग्रहण कर लेता है। वहां उसने अपना काम बड़ी प्रशंसा के साथ पूरा किया और जब वह पिट्सबर्ग में लौटकर आया तो ईस्टर्न टेलिग्राफ कम्पनी के व्यवस्थापक श्री मैककल्ला ने मानस्वरूप बर्न की कविताओं के संग्रह की एक सुन्दर पुस्तक भेंट में भेजी। वह किसी दूसरी भेंट से इतना प्रसन्न न होता।

पिट्सबर्ग के पांचों समाचारपत्र उन दिनों पूर्वी अमरीका तथा विदेश के समाचारों के संग्रह के लिए अपने-अपने संवाददाताओं को तारघर भेजा करते थे। अब वे अपने लाभों को पुञ्जित करने का निर्णय करके केवल एक संवाददाता भेजने लगे। इस संवाददाता के सुझाव पर एंडी सब समाचारों की पांच-पांच प्रतियां कर देता था। इस कार्य के लिए उसे प्रति सप्ताह एक डालर मिलता था और इस प्रकार उसकी मासिक आय ३० डालर हो गई।

कारनेगी-परिवार की आर्थिक स्थिति अब इतनी दृढ़ हो गई कि वे किराये के मकान के स्थान पर अपना मकान खरीदने योग्य हो गए। एण्ड्रयू होगन की कुटिया तथा रिबैका स्ट्रीट की एक भवन-पंक्ति दो वर्ष की अवधि में देय साढ़े पांच सौ डालर में मिल रहे थे और उन्होंने ये सब ले लिए।

एंडी साढ़े सत्रह वर्ष का था कि ओहायो में आई बाढ़ से स्ट्यूबनवेल तथा वीलिंग के मध्य पच्चीस मील का तार बह गया। इससे मध्य पश्चिम का पूर्व से सम्पर्क टूट गया। एण्ड्रयू को स्ट्यूबनवेल इसलिए भेजा गया कि वह दुबारा तार लग जाने तक किसी प्रकार सम्बन्ध बनाए रखे। पूर्व से मिलनेवाले संदेशों

को वह लगभग एक-एक घण्टे के अन्तर से छोटी नौकाओं द्वारा वीलिंग भेज देता था। ये नौकाएं लौटती हुई कोलम्बस, सिनसिनेटी, लूईविल, सेंट लूई तथा दूसरे स्थानों से आए संदेशों के गट्ठर लातीं। एण्डी इन संदेशों को तार द्वारा भेज देता था। इस प्रकार उसने एक सप्ताह तक तार-सेवा को अविच्छिन्न बनाए रखा।

उन दिनों वहीं उसे एक पत्र अपने पिताजी से मिला। इससे उसे सूचना मिली कि वे वीलिंग तथा सिनसिनेटी में विक्री की आशा से कुछ मेज़पोश लेकर नौका द्वारा अमुक दिन वहां पहुंच रहे हैं। जब नौका पहुंची तो एंडी घाट पर था, उसे कुछ देर पिताजी की खोज करनी पड़ी कि उसने देखा कि वे उसे नौका पर चढ़ आने का संकेत दे रहे हैं। उसके पिता उसको निचली मंज़िल पर एक कोने की ओर पोत-द्रव्यों में ले गए।

उन्होंने उसे बताया, "मैं चोरी की आशंका से यहां अपने सामान से परे नहीं जाना चाहता था।"

उनके पुत्र ने व्याकुलता से पूछा, "क्या आपने कमरा नहीं लिया ?"

"नहीं, मैंने सोचा मुझे मितव्यय करना चाहिए, इसलिए मैं नौका की छत पर ही यात्रा कर रहा हूं।"

"उफ पिताजी !" कहते हुए एण्डी का गला रुंध गया।

पिता ने विरोध के स्वर में कहा, "वस्तुतः यह इतना बुरा तो नहीं ही है। मेरे साथ कम्बल है ही और मैं तो यही समझता हूं कि मज़े में सोऊंगा। बेटा ! तुम जानते हो, बिक्री कितनी कठिन होती है और मुझे सावधान रहना चाहिए।"

"अच्छा पिताजी !" एण्डी आंसू छोड़ते हुए बोला, "अब शीघ्र ही आप और माताजी अपनी गाड़ी में यात्रा करने लगेंगे।"

पिता चुपचाप उसका हाथ थामे रहे; परन्तु आंखें गीली थीं। और जब पन्द्रह मिनट पश्चात् नौका छूटने को हुई तो पिता ने पुत्र के हाथ को व्यग्रता से दबाते हुए फुसफुसाहट में कहा, "आन्द्रा ! मुझे तुमपर गर्व है।"

टामस ए. स्कॉट नाम के एक प्रसिद्ध पुरुष उन दिनों पेनसिलवेनिया रेल-रोड के पिट्सबर्ग-मंडल के अधीक्षक थे। वे ऐलटूना में स्थित अपने प्रवर अधिकारी, प्रधान अधीक्षक श्री लॉम्बर्ट के तार-सन्देशों के आदान-प्रदान के लिए

तारघर आते रहते थे। इस समय वे इस तरुण संकेतक को देखते और प्रायः रुककर उससे बातचीत भी करते।

एक दिन श्री स्कॉट का एक सहायक तार लेकर वहां आया और एण्डी से बोला, "आज प्रातःकाल स्कॉट महोदय तुम्हारी चर्चा कर रहे थे।"

"सचमुच ? उन्होंने क्या कहा ?" एंडी ने तत्काल सतर्कता से पूछा।

"उन्होंने पूछा तुम्हारा क्या विचार है, क्या वह मेरे लेखक तथा संकेतक कार्य पर आ सकता है ? तुम जानते ही हो कि रेलपथ शीघ्र ही निजी तार-व्यवस्था चालू करनेवाला है। मैंने उन्हें बताया कि यह असम्भव है, और यह भी बताया कि तुम अपनी वर्तमान नौकरी पर पूरी तरह सन्तुष्ट हो।"

"रुको ! इतनी शीघ्रता से नहीं," एंडी ने हाथ उठाकर बात करते हुए कहा, "यदि मुझे लेना चाहें तो मैं आने के लिये तैयार हूं। जाओ और उन्हें यह बताओ।"

फल यह हुआ कि १ फरवरी, १८५३ से वह पैंतीस डालर मासिक वेतन पर स्कॉट महोदय के काम पर नियुक्त हो गया। उन्नति के इस वेग से वह आतङ्कित हो उठा।

अब उसकी माताजी जूते गांठने का धन्धा छोड़ सकती थीं...और उसने शीघ्र ही डेविड मैक्कार्गो तथा रॉबर्ट पिटकाएर्न को रेलपथ में काम दिलवा दिया। बॉब ऐलटूना स्थित प्रधान अधीक्षक लॉम्बर्ट का सहायक नियुक्त हो गया। ऐलटूना तब केवल छोटा-सा गांव था, परन्तु वस्तुतः पेनसिलवेनिया रेलपथ का मस्तिष्क ही था।

एण्डी पिट्सबर्ग के वैतनिकों के लिए नक़द धन लेने के लिए प्रति मास ऐलटूना जाया करता था। उसके ऐसे दूसरे चक्कर में ही हठी, मितभाषी प्रधान अधीक्षक ने उसे अपने घर चाय पर आने का निमन्त्रण देकर आश्चर्य में डाल दिया। द्वार पर श्री लॉम्बर्ट ने अपनी पत्नी को अतिथि का परिचय देते हुए कहा, "यह श्री स्कॉट का एण्डी है।" और घर पर वे इतने रूखे नहीं लगे जैसे कि कार्यालय में लगते थे। एण्डी को श्री स्कॉट इतने भाए कि वह इस प्रदत्त अनुबन्ध से पूरी तरह संतुष्ट था। एक दिन रेलपथ के अध्यक्ष श्री जे० एडगर टामसन पिट्सबर्ग स्थित कार्यालय में आए तो उन्होंने तरुण सहकारी के कक्ष में झांकते हुए पूछा, "क्या श्री स्कॉट के एण्डी तुम ही

हो ?" यह उसका एक नाम ही पड़ गया।

एक दिन जब एंडी कार्यालय में पहुंचा तो उसे ज्ञात हुआ कि पूर्वी मण्डल पर हुई एक दुर्घटना के कारण पश्चिम को जानेवाली एक्सप्रेस गाड़ी विलम्बित हो गई है और पूर्व की ओर जानेवाली सवारी गाड़ियां धीरे-धीरे सरक रही हैं। उन्हें प्रत्येक मोड़ पर झंडीवाले को भेजना पड़ता है, तथा दोनों ओर की मालगाड़ियां बगल की पटरी पर रुकी खड़ी हैं। इकहरी पटरी के रेलपथों पर गाड़ियां चलाने की पद्धति अभी पुरानी ही चली आ रही थी।

श्री स्कॉट कहां हैं, यह किसीको पता न था···सम्भवतः किसी काम से उन्हें बाहर चले जाना पड़ा हो। एंडी इस स्थिति से इतना क्षुब्ध हुआ कि वह इसे ठीक करने तथा अतिव्यस्त कर्मचारियों के तनाव को कुछ कम कर देने के लोभ का संवरण न कर सका। वह पहले स्कॉट महोदय के निर्देशों पर चलकर ऐसी संकटपूर्ण स्थितियों को संभाल चुका था, इसलिए अब वह अपने उत्तरदायित्व पर संगम स्थानों का नाम ले-लेकर गाड़ियों को छोड़ने लगा और सारी व्यवस्था अनायास ही चल निकली थी कि अधीक्षक महोदय कार्यालय में आ पहुंचे।

शीघ्रता से एंडी की डेस्क पर पहुंच उन्होंने पूछा, "कहो, क्या समाचार हैं ?"

उत्तर देते हुए एण्डी की बोलती ही बन्द हो गई थी। उसने कहा, "स्कॉट महोदय, आप जब कहीं नहीं मिले तो आपके नाम ये आदेश मैंने दे दिए।"

उसने आदेशों की प्रतिलिपियां दिखाईं और पटरी पर, माल व सवारी, प्रत्येक गाड़ी की वर्तमान स्थिति बतलाई। अन्त में अधीक्षक एंडी के मुंह को कुछ आश्चर्य से देखता रह गया; परन्तु उसने कहा कुछ नहीं और अपने कक्ष में चला गया। बालक को अभी संशय में ही छोड़ गया कि उसका यह साहसिक कार्य कैसा समझा जाएगा। अगले दिन जब तक एक माल एजेण्ट श्री फ्रैंसिस्कस ने हंसते हुए श्री स्कॉट से हुई चर्चा का वर्णन नहीं किया तब तक (उसकी नसों का तनाव ढीला नहीं हुआ) उसका मन शान्त नहीं हुआ। फ्रैंसिस्कस महोदय ने बताया कि श्री स्कॉट ने उससे कहा, "जानते हो इस भूरे बालोंवाले मेरे भूत ने क्या किया ?"

मैंने कहा, "नहीं।"

"मैं नरक में पड़ूं यदि उसने लेशमात्र भी अधिकार के बिना प्रत्येक गाड़ी को मेरे नाम पर न चलाया हो।"

"और क्या यह सब उसने ठीक से चलाया?" "हां! हां!—सब ठीक।" और यहीं पर बात समाप्त हो गई।

उस दिन से स्कॉट महोदय एण्डी पर अधिकाधिक उत्तरदायित्व डालने लगे। एक बार वे दस दिन से अधिक अनुपस्थित रहे, और लॉम्बर्ट महोदय के अनुमोदन से अपने तरुण क्लर्क को सारा मण्डल सौंप गए। यह एक बीस वर्ष के युवक के प्रति अद्भुत विश्वास की बात थी। उसके कार्यकाल में एक छोटी-सी दुर्घटना-एक निर्माण-गाड़ी की हुई, और एण्डी ने उन कर्मचारियों से बड़ी कठोरता बरती जिनकी असावधानी से यह दुर्घटना हुई थी; उसने मुख्य अपराधी को तो निकाल ही दिया तथा अन्य दो की नौकरी स्थगित कर दी। जब स्कॉट महोदय लौटे तो एंडी को उनसे ज्ञात हुआ कि यह उसकी परले सिरे की कठोरता थी और उसने भारी तथा स्थायी पश्चात्ताप किया—जिन व्यक्तियों से उसने कठोरता बरती थी उनको किसी न किसी प्रकार बदला देने का यत्न किया।

१८५५ के अन्तिम दिनों में, अभी वे अपने घर का मूल्य चुकता न कर पाए थे कि विलियम कारनेगी का कुछ दिन रोगी रहने के पश्चात् पचास वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। एंडी के शब्दों में, 'ठीक उस समय जबकि हम योग्य हो रहे थे कि उन्हें कुछ विश्राम लेने देते और सुविधा पहुंचाते।"

भद्र एवं निरभिमानी पिता की मृत्यु पर परिवार में शोक छा गया। उसके ज्येष्ठ पुत्र की सदा यह मान्यता रही कि उनसे अधिक बढ़िया और स्नेह-पात्र व्यक्ति उसे कभी नहीं मिला।

उनके रोग तथा मृत्यु ने एण्ड्रयू तथा उसकी माता पर एक नया आर्थिक बोझ डाल दिया—माता ने फिर से जूते गांठने का धन्धा अपना लिया। ऐसी परिस्थिति थी कि एक दिन श्री स्कॉट ने एण्डी से कहा, "एण्डी! क्या तुम्हारे पास पांच सौ डालर बचा रखने को हैं?"

एण्ड्रयू का वेतन बढ़कर चालीस डालर प्रतिमास हो गया था और वेतन का वितरण उसके हाथ में ही था; इसलिये वह अपना वेतन दुहरे ईगल अंकित सोने के दो सिक्कों में ले लिया करता था—इन्हें वह विश्व की सुन्दरतम कलाकृति

मानता था। परन्तु वे क्षणिक अपरिहार्य आवश्यकताओं की पूर्ति में ही विलीन हो जाया करते थे। इसलिए जब उसके मुखिया ने उपरोक्त प्रश्न किया तो उसे लगा कि उसके पास तो बचा रखने के लिये पांच सौ सेंट भी नहीं हैं।

तथापि उसके उत्तर देने से पहले ही स्कॉट महोदय ने अपने सहायक की भौंचक दृष्टि की एक झपकी से उपेक्षा करते हुए कहा, "क्योंकि, यदि तुम्हारे पास हों तो इसके विनियोग का एक स्थान तुम्हें बता सकता हूं; आदम एक्सप्रेस कम्पनी का मूलधन बाज़ार में इस समय सर्वोत्तम—निश्चय ही सुनहरी—है, जो प्रतिमास प्रतिशेयर एक डालर मासिक लाभ देता है : उस मूलधन के दस शेयर। एक व्यक्ति मुझे ऐसा ज्ञात है कि वह शीघ्र ही नक़द धन लेने के लिये बाध्य है और इसलिए उसे अपना यह मूलधन छोड़ना ही पड़ेगा। क्या तुम इतना धन जुटा सकते हो?"

एण्डी ने जब यह सोचने का प्रयत्न किया कि कहां से वह पांच सौ डालर लाए तब उसका सिर चकरा गया। उसे यह सुअवसर हाथ से निकलने नहीं देना चाहिए, विशेषकर तब जबकि उसका मालिक सौदे को स्वयं न हड़पकर उसे देने का त्याग कर रहा है।

उसने कहा, "श्रीमन्! मैं किसी भी तरह इसकी व्यवस्था कर ही लूंगा।"

रिबेका स्ट्रीटवाले घर पर पांच सौ डालर दिए जा चुके थे और एण्डी को आशा थी कि सम्भव है कि पूरी राशि के ऋण के बदले इस घर को गिरवी रखा जा सके। केवल एक ही ऐसा व्यक्ति था जो सम्भवतः यह जोखिम लेने को तैयार हो सके। स्कॉट महोदय के निर्णय पर पूरा भरोसा रखकर एण्डी की माता ने कहा, "मैं भाई विलियम से धन मांग लाऊंगी।" वह वाष्प-नौका पर सवार हो पांच सौ मील की यात्रा के पश्चात्, ओहायो नदी पर नीचे की ओर स्थित ईस्ट लिवरपूल में पहुंची। वहां विलियम मौरिसन एक धनी-मानी व्यक्ति बन गया था—एक छोटा न्यायाधिकारी और पास-पड़ौस के किसानों के लिए एक प्रकार का विनियोग दलाल। उसने घर पर धन दे दिया और उसकी बहिन विजय के साथ पिट्सबर्ग लौटी।

परन्तु एण्ड्र्यू इस धन को कुछ दिन पश्चात् ही स्कॉट महोदय को सौंप सका और जब उसने सौंपा तो उसको एक अप्रत्याशित समाचार सुनने को

मिला कि उस व्यक्ति रेनाल्ड्स ने मूलधन के दाम बढ़ा दिए हैं; वह अब छः सौ डालर चाहता है।

एण्ड्र्यू कुछ देर स्तब्ध रहा पर स्कॉट महोदय ने आगे कहा, "इस समय तो अतिरिक्त सौ डालर की व्यवस्था मैं कर दूंगा। तुम मुझे जब जैसे सुविधा हो चुकता कर देना।"

दिन बीतते गए और एक दिन एण्डी की डेस्क पर एक भारी, श्वेत कागज से बना लिफाफा रखा था; इसके एक कोने पर एडम्स एक्सप्रेस कम्पनी की गोल मुहर उभरी हुई थी। इसपर बड़े मर्मभेदी अक्षरों में 'एण्ड्र्यू कारनेगी महोदय' लिखा था। और इसके भीतर न्यूयार्क स्थित गोल्ड एक्सचेन्ज बैंक के नाम दस डालर का एक चैक रखा था—जोकि उसका पहला मासिक लाभांश था। जब तक एण्ड्र्यू जीवित रहा वह जे० सी बैबकॉक—खजांची—के लम्बे चमकीले हस्ताक्षरों को न भूला या वह पूंजी-विनियोग से हुई उस पहली आय को न भुला सका जोकि कुछ ऐसी प्राप्ति थी कि जिसके लिए उसने अपने हाथ से काम करके पसीना न बहाया हो।

"मैंने पा लिया," वह बुदबुदाया, "यह है वह मुर्गी जो सोने के अंडे देती है।"

उसने उस चैक को सप्ताह के अन्त तक रखे रखा और अपने चारों साथियों—टॉम मिलर, जॉन फिप्स, जिम्मी विल्सन और विल्ली कॉले को दिखाया। उस समय वे सब जंगल में सैर-सपाटे पर थे। उन्होंने उसके नाम के साथ लगे 'महोदय' शब्द का तो खूब रस लिया, तथापि वे लाभांश के चैक से बहुत अधिक प्रभावित हुए।

"यह है मार्ग बढ़ चलने का," जॉन फिप्स बोला।

"तुम ठीक कहते हो, जॉन," जिम्मी विल्सन ने अनुमोदन में कहा। "मैं भी ऐसे अवसरों की ताक में रहूंगा।"

टॉम मिलर ने उत्साह प्रकट करते हुए कहा, "हम सभी ध्यान रखें और परस्पर सूचना भी देते रहें।"

"और यदि किसीको कुछ ऐसा पता लगे—ऐसे विनियोग का कि जो उसकी क्षमता से अधिक हो तो—यदि ले सकें तो हम सब उसे ले लें।" एण्ड्र्यू बोला।

"एक महान विचार है यह," टॉम ने समर्थन किया। इसके पश्चात् कई

वर्ष तक जब कभी व्यवहार्य हुआ उन्होंने ऐसा ही किया।

श्री फिप्स की जूता गांठने की दुकान पर सांझ को उसके इने-गिने कर्मचारियों के घर चले जाने पर यह टोली बड़े सजीव विवाद किया करती थी—ये विवाद सदा चालू समस्याओं पर होते थे। जिनमें उग्र, श्रमिक-पक्षपाती एण्डी सोत्साह इस पक्ष का समर्थन करता था कि प्रत्येक प्रश्न पर जनता की सम्मति ली जानी चाहिए। एक बार तो उसने डेढ़ घंटे तक—कम से कम टॉम मिलर का पीछे यही कहना था—इस पक्ष के समर्थन में जोशीला भाषण दिया कि न्यायाधीशों का चुनाव जनता के मत से हो—इस पक्ष की अव्यावहारिकता को उसने पीछे स्वयं अनुभव किया। कह नहीं सकते कि वह इसपर अभी कितनी देर तक आगे भाषण देता यदि एक संदेशवाहक हांफता हुआ आकर यह न कहता, "कारनेगी महोदय, आपकी आवश्यकता है; डेनी स्थान पर दुर्घटना हो गई है।" यह सुनते ही कारनेगी ने अपना टोप और कोट संभाले और वह 'तुममें से कोई परिवार में सूचना दे दे कि मैं कहां जा रहा हूं' कहता हुआ, दौड़ता हुआ ओझल हो गया।

अन्त में ये पांचों ही, नगर में अपने प्रकार की अग्रगण्य क्लब 'वेबस्टर लिटरेरी सोसाइटी' के सदस्य बन गए—उन्हें इस बात का गर्व था कि उन्हें सदस्यता के योग्य समझा गया।

तरुणाई में एण्ड्रयू को पत्रकारिता की लालसा थी। उसका विचार हुआ कि वह विशेष रूप से सम्पादक बनेगा। कुछ वर्ष पहले वह 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' में सार्वजनिक विषय पर एक पत्र लिख चुका था और अब उसने 'पिट्सबर्ग डिस्पैच' को एक पत्र भेजा जिसमें 'पेनसिलवेनिया रेलरोड' के प्रति उस नगर की उपेक्षा वृत्ति की आलोचना की। पत्र बिना नाम छपा, परन्तु रेलरोड के बड़े वकील श्री स्टोक्स ने सम्पादकों को लेखक का नाम बताने के लिये मना लिया। फल यह हुआ कि श्री स्टोक्स ने लेखक को एक सप्ताहान्त ग्रीन्सबर्ग स्थित मकान पर आने का निमन्त्रण दिया। एण्ड्रयू ने सकुचाते हुए स्वीकार कर लिया। उसे शंका थी कि वह ऐसी क्या बात कर अथवा कह सकेगा जो श्री स्टोक्स-सरीखे प्रतिभाशाली तथा सुशिक्षित व्यक्ति को आकर्षित कर सके। परन्तु यह उसकी भूल थी।

एक अपरिचित घर में अतिथि बनकर रात बिताने का उसका यह पहला

अवसर था। अपने विचार के अनुसार स्टोक्स-निवास की भव्यता का उसपर गहरा प्रभाव पड़ा, विशेषतया पुस्तकालय में स्थित अंगीठी पर के मर्मर पत्थर के टांड से। तोरण के केन्द्र में एक खुली पुस्तक की प्रतिकृति काटकर बनाई गई थी जिस पर नीचे लिखी पंक्तियां खुदी हुई थीं :

वह जो तर्क नहीं कर सकता, मूर्ख है;
वह जो तर्क करना नहीं चाहता, हठी है;
और वह जो तर्क करने का साहस नहीं करता, दास है।

जिस समय एण्डी उस सुन्दर रचना को आंखें फाड़कर देख रहा था, उसकी आत्मा रूखी पंक्तियों के आघात से क्षुब्ध हो उठी। उसने मन ही मन कहा, 'किसी दिन मेरा भी पुस्तकालय होगा और अंगीठी की टांड पर यही शब्द उत्कीर्ण होंगे।' और समय आने पर ये शब्द दो टांडों पर खोदे गए—न्यूयार्क तथा स्काटलैण्ड स्थित कारनेगी-भवनों में।

अब वह अधिकाधिक निमन्त्रित किया जाने लगा और इस प्रकार उसे सामयिक सामाजिक रीति-नीति के सही प्रयोग का सर्वथा अपेक्षित प्रत्यक्ष शिक्षण मिलने लगा। मुख्य माल-एजेण्ट की पत्नी श्रीमती फ्रैंसिस्कस उसका बड़ा सत्कार करती थी, यद्यपि वह इतना लज्जालु था कि बहुत दिनों पश्चात् ही वह उसे अपने घर भोजन खिलाने के लिए प्रेरित कर सकी।

१८५६ में लॉम्बर्ट के स्थान पर श्री स्कॉट मुख्य अधीक्षक नियुक्त हुए और उन्हें अपना कार्यालय ऐलटूना में ले जाना पड़ा। वे एण्डी को साथ लेते गए। उसकी माता तथा टॉम भी निश्चय ही एण्ड्रयू के साथ गए। श्रीमती कारनेगी ने अब फिर जूते गांठना छोड़ दिया और अब जबकि ऐलटूना में उन्हें एक सुहावनी कुटिया किराये पर मिल गई तो एण्डी ने निर्णय किया कि माताजी एक नौकरानी भी रखें।

उसने माता से कहा, "आपने जीवन-भर कठोर श्रम किया है और अब समय आ गया है कि आप अपनी सुविधा से ही कामों में हाथ लगाएं।"

इसपर जो विस्फोट हुआ वह उसकी आशंका से भी अधिक बढ़ा-चढ़ा था।

"क्या ? एक अपरिचिता को घर में लाऊं ! जो चाहे जिस वस्तु में हाथ डालती रहे !" वह चिल्ला उठी, "यह मैं कभी न चाहूंगी। इतने वर्षों तक मैंने अपने बच्चों के लिये घर की रखवाली की है, उनके लिए भोजन पकाया है,

उनके कपड़ों की मरम्मत की, उन्हें धोया और अब तुम मुझसे कहते हो कि हाथ पर हाथ धरकर बैठ रहूं। तुम मुझे अलमारी में बिठाओगे। मैं यह सब नहीं सह सकूंगी, बच्चे! तुम बालकों की रुचि का भोजन पकाना किसी स्त्री को नहीं आएगा।"

बगलें झांकते हुए एण्डी का जब बोल निकला तो उसने प्रार्थना की, "प्यारी अम्मा! टॉम तथा मेरे लिए आपने सब कुछ किया; आप ही हमारे लिए सब कुछ रहीं। अब हमें भी आपके लिये कुछ कर लेने दीजिए; हम एक-दूसरे के साथी बनें और एक-दूसरे की भलाई सोचते रहें। समय आ गया है कि अब आप 'महिला' बनकर रहें। किसी दिन शीघ्र ही आपको अपनी गाड़ी पर सवारी करनी है। इस अन्तर में अपनी सहायता के लिए एक लड़की को रख लीजिये। टॉम तथा मेरी यही इच्छा है।"

यद्यपि बहुत खिन्न होकर ही, पर अन्त में उन्होंने मान लिया। जब नौकरानी आ गई तो वे ऐलटूना में प्रायः बड़ों के समाज में आने-जाने लगीं। स्वयं शिक्षित होने के कारण, उनमें वह सन्तुलन और स्वाभाविक चित्तशुद्धि विद्यमान थी कि जिसके आधार पर वे किसी भी परिस्थिति में सफल हो सकती थीं और वे जीवन के इस नये पहलू का रस लेने लगीं, जिसमें कि बाग लगाना और फूल भी सम्मिलित थे।

स्कॉट महोदय की पत्नी का देहान्त हो गया था और वे अपनी भतीजी कुमारी रिबैका स्टिवार्ट को घर के अधिष्ठातृत्व के लिए ले आए थे। यह सुभग तरुणी एण्ड्र्यू से कुछ वर्ष बड़ी थी, जोकि एक बड़ी बहिन के स्थान पर सामाजिक रीति-नीति के सम्बन्ध में अपेक्षित संकेत मृदुलता से देती रहती थी। वे दोनों पहाड़ियों में लम्बी सैर पर चले जाया करते थे और वह जब-तब उसे भोजन पर बुलाती रहती थी। ऐसे एक अवसर पर अब एक उन्नतिशील रेल कर्मचारी टॉम मिलर भी अतिथि था। स्कॉट महोदय नगर से बाहर गए हुए थे। वे मेज पर बैठे थे—कुमारी स्टिवार्ट और नौकरानी दोनों कुछ देर के लिये बाहर गए थे—कि एण्ड्र्यू ने, जो अभी जीवन की अद्भुतताओं का नया ही खिलाड़ी था, क्रीम के बर्तन को बड़े आदर से उठाया और फुसफुसाहट में कहा, "सचमुच की चांदी, टॉम।"

: ५ :

लुढ़कती हिमकन्दुक

रेलरोड पर एक अभियोग चला। श्री स्टोक्स को संदेह हुआ कि इसमें एण्ड्र्यू को साक्षी बनाया जाएगा। तैयारी के लिये समय अपेक्षित था; अतएव वे चाहते थे कि अभियोग का विचार स्थगित रहे। उन्होंने प्रबन्धक स्कॉट से कहा कि वे अपने तरुण सहायक को कुछ समय के लिए राज्य से बाहर कर दें। इस व्यवस्था के अनुसार एण्ड्र्यू ने ओहायो राज्य के क्रेस्टलाइन की यात्रा की और वहां कुछ दिन टॉम मिलर तथा जिम्मी के साथ सैर-सपाटे में बिताए ये दोनों वहां रेलरोड के कर्मचारी थे। जॉन फिप्स की घोड़े से गिरकर अभी हाल में हुई मृत्यु से वे सब उदास थे। यह इस युवक-मण्डली में पहला भंग था और ऐसे संकट के लिए वे बिलकुल भी तैयार न थे। धीरे-धीरे जॉन का छोटा भाई हेनरी एंडी का बहुत प्रिय तथा उसके कुछ उद्योगों में भागीदार बन गया।

जब एंडी घोड़ागाड़ी द्वारा ओहायो में से होकर क्रेस्टलाइन को जा रहा था तब हरा थैला हाथ में लिए एक देहाती-सा व्यक्ति उसके पास पहुंचा। उसने कहा, "ब्रेकमैन ने बताया है कि आप पेनसिलवेनिया रेलरोड से सम्बन्ध रखते हैं।"

"जी हां, ठीक है।" उत्तर मिला।

अपरिचित ने बताया, "मेरा नाम थियोडोर वुडरफ है। रात्रि-यात्रा के लिए उपयुक्त गाड़ी का एक नमूना मैं लाया हूं—जो मेरी अपनी कल्पना है। क्या आप देखेंगे?"

"अवश्य।"

श्री वुडरफ ने थैले में से नमूना निकाला जोकि शयन-कक्ष का एक भाग था। इसमें प्रत्येक ओर आमने-सामने स्थित दो-दो आसनों की पंक्तियां थीं। आमने-सामने आसनों को एक संयोगी कमानीदार गद्दे तथा पतली बिसात की सहायता से बिस्तर बनाया जा सकता था। खिड़कियों से ऊपर एक

दूसरा बिछौना था जिसको दिन में तो कुशलता से भित्ति में छिपाए रखा जा सकता था, और रात के समय सांकलों पर टिकाकर नीचे किया जा सकता था। जब इसपर सोना नहीं होता था तो यह बिछौने तथा कपड़ों के गोदाम का काम देता था। संक्षेप यह है कि इसमें लगभग वे सभी बातें थीं, जिनको कि हम १८७० से पुलमैन शयन-गाड़ियों में देखते आ रहे हैं।

लगभग बीस वर्ष तक तो रेलपथों पर कुछ नाममात्र की शयन-गाड़ियां चली थीं; परन्तु स्वाभिमानी व्यक्ति उनमें सोने से घृणा करते थे और महिला तो कोई कभी सोई ही नहीं। वे बक्सागाड़ी से कुछ ही अच्छी होती थीं। इनमें प्रत्येक ओर टांड बांधने के दो तीन रस्से होते थे, और यात्री प्रायः इन टांडों पर लेट जाते थे—प्रायः कपड़े पहने ही। हां, कुछ अपने जूते अवश्य उतार लेते थे।

प्रस्तावित वुडरफ-गाड़ी सर्वथा भिन्न वस्तु थी। नमूना देखकर एण्ड्र्यू की उत्सुकता बढ़ी, उसने मन ही मन कहा कि इसमें कुछ ऐसा है कि जिससे यात्रा में क्रान्ति हो जाएगी। उसने कई प्रश्न पूछे।

वुडरफ ने कहा, "आपको यह भी बता दूं कि न्यूयार्क सेण्ट्रल ने इसका आधे मन से परीक्षण किया है, यद्यपि बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियों में। इसको उचित अवसर नहीं मिला।"

एंड्र्यू ने पूछा, "यदि मैं बुलाऊं तो क्या आप ऐलटूना आ सकेंगे?"

"निश्चय ही, मैं आऊंगा।"

"अच्छा, तो मैं लौटते ही स्कॉट महोदय के सम्मुख यह बात रखूंगा। अपना पता मुझे आप दे दीजिए।"

एण्ड्र्यू जब तक ओहायो में रहा उस शयन-गाड़ी का भूत उसपर सवार रहा। जब वह ऐलटूना लौटा तो स्कॉट के कार्यालय में झपटकर घुस गया और मुकदमे के विषय में कुछ पूछे बिना ही चिल्ला उठा, "स्कॉट महोदय! एक बड़ी सूझ हाथ लगी है—एक गाड़ी जिसमें वस्तुतः बिस्तर पर लेटा जा सकता है और रात को नींद ली जा सकती है।"

सुनते हुए प्रबन्धक मुस्कराकर पीछे की ओर झुक गए। वे बालक की उमंगों से भली भांति परिचित थे; परन्तु वे यह भी जानते थे कि प्रायः उनका आधार ठोस होता है।

"तुम्हें निश्चय इसपर भरोसा है, तरुण ! अच्छा तो अपने मित्र से कहो कि नमूना यहां ले आए और मैं इसे देख लूंगा।" वे बोले।

तार द्वारा सूचना मिलने पर जब वुडरफ ऐलटूना पहुंचा तो उसका नमूना देखकर स्कॉट बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पूछा, "आप क्या चाहते हैं ?"

खोजी ने उत्तर दिया, "यही कि आपकी कम्पनी गाड़ियां बनाए और उन्हें चलाए और उनपर मुझे रॉयल्टी दे।"

विस्तार की बातों पर विचार हुआ और श्री स्कॉट ने दो गाड़ियां तुरन्त बनवाने का निर्णय किया। एण्ड्र्यू वुडरफ महोदय के साथ बाहर चला गया और उसे तब बड़ा आश्चर्य हुआ जबकि खोजी ने बाहरी कार्यालय में उसकी ओर मुड़कर कहा, "कारनेगी महोदय, क्या आप इस कारोबार में मेरा साझी बनना चाहेंगे ?"

एंड्र्यू कुछ देर के लिये स्तब्ध रह गया। उसके पास नकद धन तो प्रायः था ही नहीं, परन्तु आदम्स एक्सप्रेस के मूलधन जैसा यह दूसरा अवसर उपस्थित था—जिससे कि लाभांशों की धारा उसकी दिशा में बहने लगती और इसे हाथ से निकलने नहीं देना था।

उसने कहा, "कदाचित् मैं चाहूं; कुछ बताओ तो तुम कैसे चाहते हो ?"

"मैं सोचता था कि मैं तुम्हें अपनी कम्पनी में आठवां भाग आपको खरीद लेने दूं—मैं इस कम्पनी का संगठन तत्काल कर रहा हूं।"

उसने धनराशि बताई और एंड्र्यू ने नकद धन के अभाव को स्वीकार किया। कुछ तर्क-वितर्क के पश्चात् वुडरफ ने सुझाव दिया कि मूलधन के मूल्य को किश्तों में चुका देना। पहली किश्त २१७·५० डालर की होगी। और एंड्र्यू इतनी धन-राशि ऋण लेकर ही जुटा सकता था। वह स्थानीय महाजन श्री लॉयड के पास गया (यह एक बड़ा स्नेही छः फुटा व्यक्ति था जो उसे जानता और चाहता था) और उससे पूछा कि विनियोग के लिये क्या वह धन दे सकेगा ?

अपने तरुण मित्र के कन्धों पर अपनी भारी-भरकम बांह टिकाते हुए उसने पूछा, "क्या निश्चय ही यह कोई लाभदायक विनियोग होगा ?"

"जी हां, शयन-गाड़ी-कम्पनी में विनियोग की बात है। हमारी रेलपथ कम्पनी रॉयल्टी के आधार पर दो गाड़ियां बनवाने लगी है।"

श्री लॉयड ने उत्तर दिया, "निस्संदेह, मैं तुम्हें धन उधार दूंगा; तुम्हारा दायित्व लेना एक विश्वसनीय एवं नेक दायित्व है।"

इस प्रकार जीवन में पहली वार उसने प्रॉमिसरी नोट पर हस्ताक्षर करके किसी कम्पनी के हिस्से खरीदे। इसके पश्चात् उसने इस घटना को सदा अपने भाग्योदय की घटना समझा। मूलधन की किश्तें तो शीघ्र ही लाभांश के धन से चुकता होने लगीं। पेनसिलवेनिया ने और भी शयन-गाड़ियां बनाईं और इसी प्रकार दूसरे रेलपथों ने भी। जब वह पच्चीस वर्ष का हुआ तो शयन-गाड़ियों में लगे मूलधन से उसकी आय पांच हजार डालर वार्षिक हो गई थी। उसने कहा, "सैंचोपांजा के शब्दों में वह निश्चय ही आशीर्वादों का पात्र है जिसने पहले-पहल नींद का आविष्कार किया।"

कारनेगियों को ऐलटूना में रहते तीन वर्ष बीते थे कि एक दिन १८५६ की पतझड़ में स्कॉट महोदय अपने सहायक से बोले, "एंडी! वे मुझे रेलरोड कम्पनी का उपाध्यक्ष बनाने की बात सोच रहे हैं। अगले सप्ताह इस विषय में श्री थॉमसन से बातचीत करने के लिए फिलडेल्फिया जा रहा हूं।"

समाचार सुनकर एंड्रयू उदास हो गया। जब उसके अभिनन्दनीय, एक प्रकार से आदर्शभूत मुखिया को छीनकर फिलडेल्फिया भेज दिया जाएगा तो उसपर क्या बीतेगी? अब तक उसका कोई पृथक् अस्तित्व नहीं था; वह श्री स्कॉट का परिशिष्ट-मात्र था। क्या मुखिया फिलडेल्फिया में मेरे लिए नौकरी नहीं ढूंढ़ लेंगे, उसको प्रबल आशा थी कि ऐसा ही होगा। वह किसी दूसरे के अधीन काम करने से डरता था।

जब प्रबन्धक यात्रा से लौटे तो उन्होंने एण्डी को कार्यालय में बुलाया।

उन्होंने बताया, "सब बातें तय हो गई हैं। उपाध्यक्ष बनाकर मुझे फिलडेल्फिया में भेज दिया जायगा। मेरे स्थान पर श्री लेविस मुख्य प्रबन्धक होंगे।"

ज्यों-ज्यों वे बताते गए, एंड्रयू की नसों का तनाव बढ़ता गया।

अन्त में मुखिया ने कहा, "अब रही तुम्हारी बात! पिट्सबर्ग मण्डल के अधीक्षक पिट्स महोदय की पदोन्नति करके फिलडेल्फिया में यातायात विभाग में भेज दिया जाएगा। और मैंने अध्यक्ष महोदय से उसके उत्तराधिकारी के रूप में तुम्हारी सिफारिश की है। तुम्हारा क्या विचार है? क्या

तुम पश्चिमी मण्डल को संभाल सकोगे ?"

एंडी का सर चकराया, पर केवल क्षण-मात्र के लिए। सफलता तथा पदोन्नति ने उसके आत्मविश्वास को असन्दिग्धता तक पहुंचा दिया था। उसका चौबीसवां जन्म-दिवस अभी कुछ दिन पश्चात् पड़ता था······लार्ड जॉन रसल के विषय में कही जाती बात उसके ध्यान में आ गई—वह यह कि यद्यपि वह निरा राजनीतिज्ञ तथा भूमिजीवी मनुष्य था तथापि यदि उससे कहा जाता तो वह अगले ही दिन चैनेल नौसेना के नायक का पद संभाल सकता था—इसी प्रकार वालेस तथा ब्रूस भी करते······।

"जी हां, मैं समझता हूं मैं संभाल सकता हूं," एंडी ने उत्तर दिया, परन्तु इसकी ध्वनि यह थी कि 'मैं जानता हूं, मैं संभाल सकता हूं।'

"ठीक है, श्री थॉमसन ने तुमको परीक्षा का अवसर देना स्वीकार कर लिया है," स्कॉट ने कहा और पूछा, "तुम्हारे विचार में तुम्हें वेतन कितना मिलना चाहिए ?"

"वेतन !" नया अध्यक्ष चिल्ला उठा—इसका तो उसे ध्यान ही नहीं था। उसने ऊंचे स्वर में कहा, "मेरी अनुरक्ति वेतन में नहीं है। मैं पद चाहता हूं। आपके पहले पद पर पिट्सबर्ग मण्डल को संभालना ही पर्याप्त यश का काम होगा। मेरा वेतन आप जो चाहें रखें—चाहे वही जो मैं इस समय ले रहा हूं।" (यह पैंसठ डालर मासिक था।)

स्कॉट महोदय ने उसकी सरलता पर आई हंसी को रोका। वे बोले, "जब मैं इस पद पर था तो पन्द्रह सौ डालर वार्षिक लेता था। श्री पिट्स अठारह सौ डालर ले रहे हैं। मेरे विचार में तुम्हें पन्द्रह सौ से आरम्भ करना ठीक होगा और कुछ समय पश्चात् यदि तुम सफल रहे तो, अठारह सौ तक की वृद्धि मिले। क्या यह सन्तोषजनक रहेगा ?"

उत्तर में सिर के झुकने और हाथ के संकेत ने बता दिया कि नये अधिकारी की दृष्टि में यह तुच्छ बात थी।

अपने सौभाग्य के समाचार को सुनाने की उत्सुकता में एक बार वह फिर घर की ओर लपका। वह दौड़ना चाहता था; परन्तु वैसा करना पेनसिलवेनिया रेलरोड के पिट्सबर्ग मण्डल के अधीक्षक के लिए गौरव की बात न होती। उसकी माता इस समाचार से केवल थोड़ी-सी देर तक आविष्ट रहीं। आन्द्रा

सरीखे बालक से इससे कम की क्या ग्राशा की जा सकती थी। ग्रौर ग्रब उसके सामने पिट्सवर्ग लौट जाने की समस्या खड़ी हो गई। उसने कहा, "लौटकर पुराने मित्रों तथा सम्बिन्धियों में जा पहुंचने से प्रसन्नता तो होगी, परन्तु मैं काजल से डरती हूं।"

एण्ड्र्यू ने ग्रपने सोलह वर्षीय भाई से पूछा, "ग्रब, टौम, तुम मेरे सचिव बनना पसन्द करोगे ?"

"बहुत ग्रच्छा !" टौम कह उठा। वह एक निपुण संकेतक बन गया था ग्रौर एक मण्डल के ग्रधीक्षक को कितने ही तार-संदेश भेजने ग्रौर ग्रहण करने होते हैं।

एण्ड्र्यू जब ग्रधीक्षक के ग्रासन पर बैठकर ग्रादेश देने लगा तो उसने यत्न किया कि कहीं वह बहुत ग्रधिक मुखर न हो उठे। उसे सन्देह था कि कुछ पुराने कर्मचारी, किसी न किसी प्रकार इस ऊंचे पद पर पहुंचे छोटे नये राजा के विरुद्ध ग्रापस में ग्रसन्तोष व्यक्त करते थे; इसने उसे इस बात को सिद्ध कर दिखाने के लिए ग्रधिक पक्का कर दिया कि उसका डीलडौल कैसा ही क्यों न हो, इस पद की पूर्ति के लिये वह पर्याप्त बड़ा है। इस शरद् ऋतु में उसे कितने ही ग्रवसर मिले कि वह ग्रपनी विशिष्टता को प्रमाणित कर सका। संकट पड़ने पर मण्डल-ग्रधीक्षक से ग्राशा रखी जाती थी कि वह दिन-रात काम पर रहे। यदि रात को दुर्घटना हो जाती तो उसे तुरन्त सूचना मिलती ग्रौर 'सफाई' की देख-रेख के लिये घटनास्थल पर उसे पहुंचना होता।

ग्रौर कैसी कड़ी सर्दियां थीं वह ! उन दिनों रेल-पटरियों की पकड़ के लिए ढले लोहे की 'कुर्सियों' का प्रयोग होता था। ग्रति शीत ऋतु में ढलवां लोहा भुरभुरा होकर सुगमता से टूटने लगता है। उस शीत ऋतु में टूटने ग्रौर पटरी से गाड़ी के गिरने की घटनाग्रों का तांता ही लगा रहा। कड़ी सर्दी की एक रात में तो ऐसी कम से कम सैंतालीस 'कुर्सियां' जहां-तहां टूटीं। नया ग्रधीक्षक उस शीताक्रमण की वेला में पूरे ग्राठ दिन तक घर से बाहर रहा ग्रौर टूट-फूट व पटरी के उतरने की घटनाग्रों के निरीक्षण में लगा रहा।

पीछे उसे ऐसा लगा कि वह सम्भवत: एक ग्रविवेकी काम लेनेवाला रहा होगा, क्योंकि उसने स्वयं कभी थकावट को जाना ही नहीं, उसको एक विरल वर यह मिला हुग्रा था कि 'बक्सकार' के फर्श पर ग्रथवा कहीं भी वह लेट

जाता और तत्काल सो जाता, चारों ओर चाहे कितना ही शोर क्यों न मच रहा होता—और नींद कितनी ही अल्पकालीन क्यों न होती वह सदा आश्वस्त होकर उठता। इसके अतिरिक्त, एक नये तथा उत्तरदायित्वपूर्ण पद को भली भांति निभाने के लिए उत्सुक, एक विवेकी महत्त्वाकांक्षी युवकवाले उत्साह से भरपूर था।

जब वे पिट्सबर्ग लौटे तो वहां के धुएं तथा काजल को देखकर, निश्चय ही, उन्हें धक्का लगा। उन्होंने परस्पर कहा, "यह तो पहले से भी अधिक बुरा है"—और यह भी कह सकते हैं कि आज की अपेक्षा उन दिनों अधिक बुरा था। मार्गरेट कारनेगी की गृहस्वामिनी आत्मा, किसी भी वस्तु को स्वच्छ रखने की असम्भवता से खिन्न थी।

एक दिन एण्ड्र्यू कार्यालय में बोला, "मैं चाहता हूं कि हम लोग देहात में रहें।"

"पर आप रहते क्यों नहीं?" रेलरोड के प्रमुख माल एजेण्ट तथा स्कॉट महोदय के एक भतीजे डी० ए० स्टेवार्ट ने पूछा। "होमवुड में आ जाओ। वहां मेरे आवास से सटा हुआ एक स्थान है, जिसे अभी खरीदा जा सकता है। मनोरम अवस्थान, बहुत दूर नहीं; पड़ोस में केवल लगभग एक दर्जन परिवार, सब उच्च कोटि के। यदि तुम चाहो तो तुम्हारे वहां आकर देख लेने तक मैं उसपर विकल्प प्राप्त कर लूं।"

एण्ड्र्यू तथा उसकी माताजी स्थान का निरीक्षण करने गए और देखकर प्रसन्न हुए। वृक्षों के कुञ्ज में स्थित यह एक दोतल्ली कुटिया थी—एक गांव में जहां चारों ओर हरियाली, जंगल और घाटियां थीं और जिसमें से एक छोटी खाड़ी लहराती गुज़र रही थी। नगर में कारनेगी-निवास कुछ छोटे घरों में से एक था, परन्तु परिवार के लिए वहां पर्याप्त स्थान था। यहां मार्गरेट ने अपने जीवन के सर्वाधिक हर्षमय वर्ष बिताए, अपनी मित्रता का क्षेत्र बढ़ाया और ऐलटूना की पुष्पवाटिका से भी अधिक बड़ी पुष्पवाटिका लगाई।

और मकान में 'तार' का तार भी जोड़ा गया, जिससे कि तरुण अधीक्षक को रात में अथवा रविवार को भी किसी समय, संकट के अवसर पर बुलाया जा सके।

पड़ोसी स्टेवार्ट परिवार से उनकी घनिष्ठता बढ़ती गई। अन्त में श्री

स्टेवार्ट कारनेगी इस्पात व लोहे के कारोबार में साझी हो गए, साथ ही एक अन्य तरुण पड़ोसी जॉन वेण्डरवोर्ट भी साझी बना—इससे एण्ड्रयू की पहले-पहल यहीं भेंट हुई थी। यह प्रिय 'वैण्डी' पीछे से कुछ विदेश-यात्राओं में एण्ड्रयू का साथी रहा। होमवुड में कारनेगी के आ बसने के कारण कम से कम एक व्यक्ति और वहां आ बसा—वह था परीक्षित तथा सच्चा मित्र, संगीत-पठन तथा पर्यटन के प्रति प्रेम के कारण उसका समान शील, टामस एन० मिलर। एण्ड्रयू कारनेगी की एक प्रीतिकर विशेषता, उसकी मित्र बना लेने की क्षमता थी। मित्रों के प्रति उसकी निष्ठा गहरी और चिर-स्थायिनी थी। वह कभी भूलता नहीं था। उसकी ढलती आयु में सर्वाधिक सुखमय कुछ वे दिन थे जबकि दीर्घकालीन वियोग के पश्चात् उसकी अपनी तरुणाई के मित्रों से पुनः भेंट हुई।

होमवुड के मनीषी तथा सुसंस्कृत समाज ने उसका हार्दिक स्वागत किया। वयोवृद्ध विद्वान जज विलियम विल्किन्स उपनगर का महापुरुष था; वह यद्यपि अब सेवा-निवृत्त था, सेनेट का सभासद्, युद्ध-सचिव तथा रूस में अमरीका का मन्त्री रह चुका था। उसकी पत्नी राजनयिकों तथा कूटनीतिज्ञों के वंश की थी और कवि बायरन की दूर की सम्बन्धिनी थी। आतंकजनक इस परिचिति ने तथा श्रीमती एडिसन एवं उसकी पुत्री लीला की परिचिति ने एण्ड्रयू के आत्मसन्तोष को झटका दिया और जैसाकि जीवन में पीछे उसने स्वीकार किया उसको 'उच्च शिक्षितों एवं मुझ-सरीखे व्यक्तियों के मध्य एक अवर्णनीय तथा अगाध खाई' का अनुभव कराया। जज विल्किस की बैठक में समालापों ने उसे डार्विन, हर्बर्ट स्पेन्सर तथा जॉन स्टुअर्ट मिल की रचनाएं पढ़ने में प्रवृत्त किया और कुमारी एडिसन के सम्पर्क ने उसकी भाषा तथा व्यवहार में बची-खुची रूक्षता को दूर कर दिया।

'पश्चिम' में—जिसमें कि पिट्सबर्ग तथा पास-पड़ोस को अभी तक सम्मिलित समझा जाता था—युवक अभी तक वेश में कुछ असावधानता बरतते थे, ढीले-ढाले 'कालर' लगाते तथा भारी जूते पहनते थे। दिखावा मानी जानेवाली प्रत्येक वस्तु से वे घृणा करते थे। रेलपथ का एक अवर अधिकारी कभी-कभी चमड़े के दस्ताने पहन लेता था। उसपर ताने कसे जाने लगे। तरुण कारनेगी के ऐसे विचारों को कुमारी एडिसन ने धीरे-धीरे दूर किया;

उसने उसके आग्रहीपन को भी कुछ दबाया, जोकि उद्धतता की भयंकर सीमा तक बढ़ गया था। वह कभी अशिष्ट नहीं रहा—अपनी तुच्छ प्रारम्भिक अवस्था, अथवा, विलक्षण बात तो यह है कि, अपने में संस्कार तथा सुधार की आवश्यकता ने उसे कभी लज्जित नहीं किया। आत्मविश्वास के साथ-साथ उसमें सत्यशीलता, निष्कपटता तथा सुजनता की भावनाएं विद्यमान थीं जिनके कारण वह अभिनन्दनीय एवं लोकप्रिय हुआ।

एक दूसरा पड़ोसी विलयिम कोलमैन था। वह पिट्सबर्ग का एक धनिक नागरिक, लोह-उद्योगपति, कलाओं का संरक्षक तथा 'पिट्सबर्ग ओपेरा हाउस' का चिर स्वामी था। परन्तु होमवुड एवं पिट्सबर्ग के निवासी युवकों के लिए तो कोलमैन महोदय की सुखी सम्पत्ति उनकी पांच सुन्दरी पुत्रियां थी—इनमें से दो अन्त में टामस एन० मिलर तथा टामस एम० कारनेगी की पत्नियां बनीं।

१८५९ में जब उत्तर-पश्चिमी पेनसिलवेनिया में तेल मिला तो श्री कोलमैन तथा एण्ड्र्यू ऐलेगेनी-घाटी तक अनुसंधान-अभियान पर गये। वे कई दिन तक उस ऊबड़-खाबड़ निर्जन जंगली प्रदेश में, जब कभी जो कुछ मिलता खाते व सोते, टक्कर मारते रहे। उस समय के तैल-अन्वेषकों में उतना पागलपन नहीं दिखाई दिया जितना कि पीछे की तैल-हलचल के समय प्रकट हुआ। लोग छोटी धन-राशि की बात सोचते तथा कम धन-राशि को ही लगाते थे। यही कारण था कि श्री कोलमैन तथा एण्ड्र्यू कुछ मोल-भाव करने के पश्चात् एक खेत को जो अच्छे जुए के सौदे के रूप में परीक्षित प्रदेश के पर्याप्त समीप था, चालीस हज़ार डालर में पूरी तरह खरीदने में सफल हो गए। एण्ड्र्यू कारनेगी, चाहे स्कॉच था, नये उद्योगों में धन लगाने में कभी डरा नहीं। अपनी निजी योग्यता में पूर्ण विश्वास तथा सफलता की ओर अविचल चढ़ाई के कारण उसे अपने भाग्य पर अनजाने ही भरोसा हो गया था—और इस सबका परिणाम यह हुआ कि भाग्य-परीक्षा के लिए वह सदा इच्छुक रहा।

जिस व्यक्ति ने वह खेत बेचा था सम्भवतः सौदे से उस समय तो वह भी भली भांति सन्तुष्ट था। क्रेताओं ने सारी जोखिम ले ली और उसको इतना धन दे दिया था कि वह जीवन-भर सुख-सुविधा से रहता। परन्तु तीन-चार वर्ष पश्चात्, जब एक दर्जन या कुछ अधिक कुएं प्रचुर राशि में समृद्ध काला

पेनसिलवेनिया तेल उगलने लगे और उस सम्पत्ति का मूल्य स्थूल रूप से पचास लाख डालर कूता गया तो पूर्व-स्वामी ने मन में तीव्र असन्तोष अनुभव किया होगा।

यह अधिकतर होमवुड समूह ही था जिसने कि उस खेत के स्वामी के रूप में कोलम्बिया ऑयल कम्पनी संगठित की थी—जिसमें कोलमैन (जिसका कि निश्चय ही बड़ा टुकड़ा था), कारनेगी, वैण्डरवोर्ट, टॉम मिलर तथा अन्य सम्मिलित थे। किशोर आयु के टॉम कारनेगी को भी बड़े भाई ने कुछ धन उधार देकर इसमें थोड़े-से हिस्से दिए थे।

वस्तुतः वह उन लोगों के लिए 'अवसर' का स्वर्ण युग था जिनमें अपने द्वार पर उसकी की गई खड़खड़ाहट का प्रत्युत्तर देने का साहस तथा प्रत्युत्पन्न-मतिता थी। इसके पश्चात् कारनेगी को विनियोग के लिए धन की कमी कभी नहीं रही। उसने एडम्स एक्सप्रेस तथा वुडरफ के और हिस्से खरीदे और वह 'वेस्टर्न यूनियन टेलिग्राफ' के हिस्से खरीदने लगा। लुढ़कती हिमकन्दुक की भांति उसका 'भाग्य' ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों-त्यों अधिकाधिक समेटता गया।

: ६ :

बुल रन तथा डन्फर्मलिन

तरुण कारनेगी राष्ट्रीय महत्त्व की घटनाओं तथा समस्याओं में गहरी रुचि रखता और उनका सूक्ष्मता से निरूपण करता था। दासता तथा राज्यों के अधिकारों के प्रश्न को लेकर उत्तर तथा दक्षिण के मध्य बढ़ते जा रहे मन-मुटाव पर कुछ दिनों से उसको भारी चिन्ता हो रही थी। उसको यह विश्वास नहीं होता था कि उसका प्रिय राष्ट्र रूप वेड़ा राजनीति के पुलिन से टकराकर छिन्न-भिन्न होनेवाला है। इस संकट से वह वस्तुतः इतना क्षुब्ध हो गया था कि राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड के शब्दों में वह एक 'अप्रिय एकपक्षाव-लम्बी' वन गया था। सन् १८६१ के वसन्तारम्भ में, जवकि राष्ट्रपति लिकन के चुनाव का यह परिणाम हुआ कि दक्षिणी राज्य संघ को छोड़ रहे थे, वह एक रविवार को अपने सुहृदय स्टोक्स महोदय के घर पर ग्रीन्सवर्ग में रहा और वहां अपने आतिथेय के इस प्रतिपादन पर उसे आघात पहुंचा कि (राज्यों के संघ से) अपसरण को रोकने के लिए वल-प्रयोग करने का संघ-सरकार को कोई अधिकार नहीं है।

एण्ड्र्यू चौंका और वोला, "स्टोक्स महोदय! छः सप्ताह भी न बीतने पाएंगे कि हम आप-सरीखों को फांसी पर लटकाने लगेंगे।"

स्टोक्स खिलखिला उठे और वह लज्जित हो गया! साथ के कक्ष में स्थित पत्नी को पुकारते हुए वे बोले, "नैन्सी! नैन्सी! सुनो तो, यह स्कॉच भूत क्या कह रहा है! यह कहता है कि मुझ-सरीखे व्यक्तियों को वे छः सप्ताह वीतने से पहले ही फांसी पर लटकाने लगेंगे।"

परन्तु छः सप्ताह वीत भी न पाए थे कि स्टोक्स महोदय संघ-सेना में मेजर वन गये। 'अपसरण' को कुचलने के लिए वल-प्रयोग के विरुद्ध उनका कथन रिपब्लिक शासन के विरुद्ध एक कट्टर डेमोक्रेट का कथन-मात्र था। इस मामले को उन्होंने एक दलगत झगड़ा ही समझ रखा था। परन्तु फोर्ट

सम्टर पर चली गोली ने उन्हें डराकर अनुभव करा दिया कि यह युद्ध ही है। उन सरीखे दूसरे अनेक थे जो विच्छेद की गुरुता को पहले समझ नहीं पाए थे।

पेनसिलवेनिया-रेलपथ के कर्मचारियों को शीघ्र ही युद्ध-सेवा में जाना पड़ा। स्कॉट को युद्ध का सहायक-सचिव बनाकर यातायात विभाग सौंप दिया गया और उसने तत्काल अपने 'तरुण विश्वासपात्र', एंड्र्यू कारनेगी को अपने सहायक के पद पर बुला लिया। उसे सैनिक रेलपथ तथा तार-व्यवस्था सौंप दी और रेल-कर्मचारियों की एक सेना संगठित करने का उत्तर-दायित्व उसपर डाल दिया। मैसेचुसेट्स से दक्षिण की ओर जानेवाली पहली टुकड़ी पर भीड़ ने उस समय आक्रमण किया जबकि वह (टुकड़ी) बाल्टीमोर में से गुजर रही थी। उस नगर से दक्षिण की ओर वाली रेल पटरी को, पुल जलाकर और सड़क तोड़-फोड़कर, काट दिया गया था। १६ अप्रैल से एक सप्ताह तक वाशिंगटन और उत्तर का आपसी सम्पर्क बन्द रहा। यह एक बहुत भयानक स्थिति थी।

कारनेगी का पहला काम उस रेलपथ का पुनरुद्धार करना था। फिर उसने बड़ी कठोरता से इंजीनियरों, सड़क बनानेवालों और परिवहन की प्रतीक्षा कर रही टुकड़ियों में से झपटकर लिए हुए सैनिकों की एक सेना खड़ी कर ली और सप्ताह की समाप्ति पर रेलगाड़ियां धीरे-धीरे दक्षिण की ओर सरकने लगीं। उसने अपने सैनिकों को तो रेल की सड़कों को दुबारा कंकरीट डालकर शीघ्र ही सम्भावित अधिक भारी यातायात को वहन करने के लिए अधिक मजबूत बनाने में लगा दिया और स्वयं सुधरे हुए रेलपथ पर पहले-पहल गुजरनेवाली सैनिक रेलगाड़ी के इंजन के सायवान में सवार होकर वाशिंगटन की ओर गया। कहीं फिर तोड़-फोड़ न हुई हो, इस आशङ्का से वे बहुत सावधान होकर चल रहे थे और अभी वाशिंगटन से कई मील इधर ही थे कि एण्ड्र्यू ने देखा कि इकहरे तार को खम्भों से ढील देकर खूंटों द्वारा भूमि में चिपका दिया गया है।

उसने चालक को वहीं रुकने का आदेश दिया, "यहीं रुको, मैं उस तार को खोलना चाहता हूं।"

चालक ने इंजन की भाप को बन्द करके (क्योंकि अभी तक गाड़ियों में

वायवीय रोधक नहीं लग पाए थे) इंजन को वापस लौटाते हुए पूछा, "क्या तार काट दिया गया है ?"

एंड्रयू ने उत्तर दिया, "नहीं तो, अभी तो किसी प्रयोजन से इसे भूमि पर चिपका ही दिया गया है। माला की तरह लटकता रहे तो भी यह काम तो देगा ही, परन्तु इस प्रकार भूमि से सटा देने पर यह काम नहीं देगा।"

वह सायवान से कूदा, खूंटे पर जा पहुंचा और अपने दोनों हाथों से पूरा बल लगाकर उसने तार को भूमि में से खींच लिया। उसने यह सोचा भी न था कि कसा हुआ तार अचानक खुलेगा तो क्या होगा। यह ऊपर को उछला और उसके मुंह पर टकराया; एंड्रयू नीचे गिर पड़ा और उसके गाल पर एक गहरा घाव हो गया और उसमें से बहुत-सा खून बह गया। अपने मुख पर रक्त से सना रूमाल रखे वह सैनिकों के साथ-साथ वाशिंगटन में गया। वह हंसी-हंसी में गर्व किया करता था कि गृहयुद्ध में यूनियन के लिए पहले-पहल उसीने अपना रक्त बहाया था।

वाशिंगटन पहुंचने पर उसने देखा कि युद्ध-विभाग में संकेतकों की कमी है। उसे आदेश मिला कि युद्ध-सेवा के लिये चार संकेतक जुटाए। उसने तार द्वारा इस आदेश को अपने बचपन के मित्र डेविड मैककारगो को भेज दिया—वह इस समय पेनसिलवेनिया-रेलरोड में तार विभाग का अधीक्षक था। एक घण्टे के भीतर ही मैककारगो ने उत्तर दे दिया और चार संकेतकों के नाम बतला दिए जो तार-लाइन के विभिन्न स्थानों से तत्काल वाशिंगटन को चल पड़ेंगे। वे आयु में अठारह से तेईस वर्ष तक के थे। उनमें सबसे अधिक आयु का स्ट्राइस था जो सरकारी तार विभाग का अधीक्षक बना।

कारनेगी का दूसरा कर्तव्य यह था कि पोटोमैक नदी के पार और वरजीनिया में संचार टूटा पड़ा था, उसको पुनः चालू करे जिससे कि राजधानी की रक्षा के लिए संघ सेना उस क्षेत्र में पहुंच सके। पोटोमैक नदी पर के पुराने 'लौंग ब्रिज' को फिर से बनाया जाना था—निस्संदेह लकड़ी से ही—और यह काम एक सप्ताह में ही पूरा हो गया जबकि मुखिया समेत सब व्यक्ति चौबीसों घण्टे लगे रहे। सारांश यह है कि तरुण अधीक्षक ने ध्वस्त रेलपथों, पुलों और तार लाइनों की मरम्मत कराने और नये बनाने में छः सप्ताह लगाए। १८६१ की ग्रीष्म ऋतु में असाधारण गर्मी पड़ी थी और एक दिन

लगातार परिश्रम से चूर कारनेगी को हलकी-सी लू लग गई थी। उसके पश्चात् जीवन-भर अमेरिका की गर्मियां कारनेगी को दुःखदायी रहीं और उसे सावधान रहना पड़ा कि वह अधिक देर तक धूप में न रहे।

२१ जुलाई को वुल रन के युद्ध के दिन, जिस युद्ध ने कि यूनियन की आंखें खोल दी थीं, कारनेगी वाशिंगटन से बीस मील पर बर्क स्टेशन पर था, यहां से वह रेल द्वारा मोर्चे पर सेनाएं, शस्त्रास्त्र और खाद्य-सामग्री भिजवा रहा था। राजधानी पूरी तरह आश्वस्त थी; अधिकारियों की सम्मति थी कि धृष्ट दक्षिणी सरलता से जीत लिए जाएंगे और तुच्छ विद्रोह शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाएगा।

बर्क स्टेशन पर उस दिन कारनेगी को कड़ा परिश्रम करना पड़ा। अस्पताल-वाली गाड़ियों द्वारा लाए गए घायलों की संख्या बढ़ती जा रही थी और वह रोगियों को लौटाकर नगर व पास-पड़ौस के चिकित्सालयों में पहुंचाने के लिए वाशिंगटन से इंजनों व गाड़ियों को मंगाने में व्यस्त था। युद्ध-क्षेत्र से पहले समाचार तो आशाप्रद मिले, परन्तु तीसरे पहर परिस्थिति में अशुभ परिवर्तन स्पष्ट होने लगा। स्टेशन से गुजरनेवाले लौटते सैनिकों का तांता लग गया। इनमें से कुछ तो अपनी टुकड़ियों के संग थे और बहुत-से भटके हुए। शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि महान विजय के स्थान पर भारी विपद् आ पड़ी है। घायलों से भरी रेलगाड़ियां बार-बार वापस पहुंचाई गईं। सड़कें पीछे हटती सैनिक टुकड़ियों तथा विजय का दृश्य देखने के लिए गए (कुछ सपरिवार भी थे) कांग्रेस सदस्यों और अधिकारियों की गाड़ियों से रुंध गईं। सांझ हो गई और भयंकर भगदड़ बन्द न हुई। जब कारनेगी वाशिंगटन जाने के लिए गाड़ी पर सवार हुआ तो बन्दूकों की आवाज समीप ही सुन पड़ने लगी थी। उसके पश्चात् वह कई सप्ताह तक राजधानी में रहा और प्रशासन तथा सेना के कई उच्च व्यक्तियों से परिचय बढ़ाता रहा। इनमें राष्ट्रपति लिंकन भी थे; ये कारनेगी से अपने सामान्य, सरल तथा आकर्षक व्यक्तित्व में मिले और कारनेगी पर गहरा प्रभाव पड़ा।

वाशिंगटन में अधिकारियों का पहले यही विश्वास रहा कि युद्ध केवल एक चिनगारी है जो कुछ दिनों में बुझ जाएगी और इसीलिए स्कॉट और कारनेगी आदि रेल-कर्मचारियों को केवल संकट-समय के लिये दौड़ा दिया गया। वुल

रन की अचेतन कर देनेवाली पराजय ने अधिकारियों की सारी विचारधारा को पलट दिया। अब दिखाई दिया कि युद्ध एक या दो या तीन वर्ष तक खिंच सकता है और स्कॉट तथा कारनेगी अपनी रेलपथ-सेवाओं से दूर इतने समय तक नहीं रह सकते। कारण कि युद्ध को सफलतापूर्वक लड़ने के लिए सुव्यवस्थित रेलपथ, विशेषतया पेनसिलवेनिया सरीखा महत्त्वपूर्ण रेलपथ—आवश्यक थे। इसलिए स्कॉट तथा कारनेगी अपने-अपने कामों पर लौट गए और सरकारी रेल तथा तार विभाग का काम स्थायी नियुक्तों ने संभाल लिया।

पिट्सवर्ग में लौटकर कारनेगी ने अपने काम-काज को संभाल लिया, परन्तु उस समय के अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी अधिकारियों की भांति वह अपने दूसरे बाहरी स्वार्थों तथा विनियोगों की टोह में रहने लगा।

उसके बाद शरद् ऋतु के अन्त में वह कई सप्ताह तक बहुत रोगी रहा और जब कार्यालय में लौटा तो उसे इतनी शिथिलता अनुभव हुई कि पुनः शक्ति-संचय के लिये छुट्टी लेनी पड़ी। छुट्टी मिल गई; तीन महीने की! और अवकाश के इस समय को विताने के स्थान के विषय में तो कारनेगी के मन में कोई सन्देह था ही नहीं! मई के अन्तिम दिनों में उसने तरुण जार्ज लॉडर—बन्धु 'डॉड' को लिखा कि वह तथा उसकी माता मिलने-जुलने के लिए डन्फर्मलिन पहुंच रहे हैं।

२८ जून को जब वे लिवरपूल जाने के लिए जहाज़ पर चढ़े तो सदा का साथी टॉम मिलर भी साथ था जो ब्रिटेन होकर पर्यटन के लिए निकला था। जब गाड़ी लिवरपूल से उत्तर की ओर दौड़ने लगी, शेवियट पहाड़ियों में रेंगने लगी और स्कॉटलैण्ड में प्रविष्ट हुई तो एण्ड्रयू और उसकी माता उच्च कोटि के सुखोद्वेग से कील गए। लहराते पीले फूलों से ढकी पहाड़ियों को पहले-पहल देखकर मार्गरेट कारनेगी गुनगुना उठी, "अहा! वह देखो 'ब्रूम'! 'ब्रूम'!" और उसके आंसू बह निकले। और उसका पुत्र? उसने पीछे से बताया, "मुझे लगा कि मैं उस पुण्य भूमि पर लोट जाऊं और उसे चूम लूं।"

डन्फर्मलिन में बहुत-से सम्बन्धियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया और उनकी आवभगत के लिये आपस में होड़ लगाई। श्रीमती कारनेगी तो अपने मौरिसन परिवार में ठहरीं और एण्ड्रयू सीधा मौसा जार्ज लॉडर के दुकान के ऊपरवाले कमरे पर चला गया। वहां दोनों युवक अभी तक आपस में

वैसे ही "डौड" और "नैग" थे जैसेकि वे बचपन में थे। यात्रा के आरम्भ में ही एक सायंकाल तीनों ने मिलकर 'डगलस' नामक एक प्राचीन शब्द-बहुल दुःखान्त नाटक के एक दृश्य का ठीक वैसे ही आलाप किया जैसेकि वे डौड और नैग की किशोरावस्था में किया करते थे; और उन्होंने देखा कि नाटक की सारी पंक्तियां लगभग वैसी ही शब्दशः स्मरण हैं।

बन्धुओं में से वृद्धतमा आण्टी चार्ली को एण्ड्रयू के बचपन की कुछ विशद स्मृतियां थीं। उसने एण्ड्रयू को बताया, "तुम बड़े लोलुप शिशु थे; तुम्हें दो-दो चमचों से खिलाना पड़ता था और उसमें से एक भी जब तुम्हारे मुंह से सरक जाता था तो बड़े ज़ोर से चिल्ला पड़ते थे।" एण्ड्रयू उन्नति में कितना आगे बढ़ गया था—यह आंटी (मौसी) की समझ से बाहर की बात थी। उसके आगमन को वह बहुत महत्त्वपूर्ण समझती थी। उसने कहा, "किसी दिन तो यहां लौटकर तुम 'हाई स्ट्रीट' में अपनी दुकान खोलोगे ही। उसका दामाद हाई स्ट्रीट में फल-सब्ज़ी बेचता था और उसके लिए वही अन्तिम मानव सफलता थी।

श्रीमती हैंडरसन—ऐली फारगी—वह दयालु मित्र जिसने कि कारनेगी-परिवार को बीस पौंड उधार दिए थे और जिन बीस पौंडों की सहायता से वह परिवार अमेरिका को प्रवास कर पाया था, अभी तक जीवित थीं और वह तथा जोहन का अच्छे-खासे ढंग से निर्वाह कर रहे थे। उन बीस पौंड के बाहर चले जाने से कुछ वर्ष तो अवश्य पीछे पड़ गए थे; पर वे अब डनफर्मलिन के मापदण्ड के अनुसार सुविधापूर्ण जीवन-यापन कर रहे थे। पिछले कई वर्षों से उनकी आय में बीस पौंड की अच्छी वृद्धि हो गई थी जोकि एण्ड्रयू कारनेगी उनके निःस्वार्थ कार्य के प्रति गहरी कृतज्ञतावश ऋण पर 'ब्याज' के रूप में प्रति वर्ष भेजता आ रहा था। अब उसने सुझाव दिया, "मैं सोचता हूं, अब तो मैं उस ऋण को चुकता ही कर दूं।"

श्रीमती हैंडरसन ने उत्तर दिया, "आन्द्रा, ऋण के विषय में तंग होने की आवश्यकता नहीं, मैं तो ब्याज से ही पूर्ण सन्तुष्ट हूं।"

एण्ड्रयू ने प्रतिवाद में कहा, "पर मैं तो अब मूलधन चुकता करने योग्य हूं।"

परिस्थितिगत परिहास से चमकती आंखोंवाली वृद्धा ने प्रत्युत्तर दिया, "आन्द्रा, मूलधन की क्यों चिन्ता करते हो; वह तो अच्छे रूप में लगा है।"

इस प्रकार 'ब्याज' का प्रदान चलता ही रहा।

घर लौटा तो देखा कि १८६२ की ग्रीष्म ऋतु संघ सरकार के लिए बुरी रही। युद्ध-क्षेत्र में वह सफल नहीं थी और युद्ध के परिणाम के सम्बन्ध में गहन सन्देह होने लगा। कारनेगी को यह जानकर धक्का लगा था कि स्कॉटलैंड अथवा कम से कम डन्फर्मलिन में लोग अधिकतर 'दक्षिण' के पक्ष में थे। मौसा जार्ज लॉडर ही अकेले थे जो यूनियन के पक्ष को न्यायपरक समझते थे।

अपने रोग की पुनरावृत्ति के कारण एण्ड्रयू ने मौसा लॉडर के घर पर कई सप्ताह बिस्तर पर ही गुज़ारे। अमेरिका के मामलों पर उनकी अनेक चर्चाएं हुईं और एक दिन उसके मौसा ने उससे कहा था, "आन्द्रा, मैं जानता हूं कि मैं बहुत अधिक मांग रहा हूं; परन्तु यदि तुम बचत का धन मेरे लिए अमेरिका में लगा सको तो मैं बहुत उपकार मानूंगा।"

इस प्रकार थोपे जा रहे उत्तरदायित्व से एण्ड्रयू चौंका; उसने पूछा, "मौसा ! मैं इस धन को कहां-कहां लगाऊं ?"

उत्तर मिला, "आन्द्रा ! तुमसे अधिक कौन जानेगा ! परन्तु यदि तुम इसे संयुक्तराष्ट्र के बौंडों (बन्धकपत्रों) में लगाओगे तो मुझे और भी अधिक प्रसन्नता होगी। क्योंकि तब मैं कह सकूंगा कि उसके आपत्काल में भी मैंने रिपब्लिक में अपनी आस्था बनाए रखी।"

कारनेगी ने कुछ धन तो अपने मौसा के कथनानुसार सरकारी बौंडों में लगाया, परन्तु उसका एक भाग उसने अपने विविध उद्योगों में लगाया। परिणाम यह हुआ कि मौसा लॉडर को अपना धन तिगुना होकर वापस मिला।

अवर जार्ज ने, जोकि एक मौन-लज्जालु तरुण स्कॉट था और लार्ड केल्विन की संरक्षता में प्रशिक्षित, योग्य यन्त्रविद्या-विशारद था, अमेरिकन व्यापार तथा उसके स्रोतों के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे और एण्ड्रयू ने भांप लिया कि ससके बन्धु की गुप्त लालसा यह है कि वह नयी आश्चर्य-भूमि को देखे तथा सम्भव हो तो अपने भाग्य की वहां परीक्षा करे।

एण्ड्रयू ने कहा, "डोड, अपने प्रशिक्षण तथा योग्यता के आधार पर तुम वहां बड़े-बड़े काम कर सकते हो।"

डोड ने निश्चित उत्तर तो नहीं दिया, परन्तु समय आया कि वह समुद्र पार पहुंचकर कारनेगी के महान इस्पात-साम्राज्य का एक विशिष्ट अंग बन गया।

: ७ :

एक भग्न संकल्प

जब वह ऐलटूना में था तो कारनेगी को अपने जीवन में पहला लौह पुल रेलपथ के कारखानों में दिखाई दिया—यह एक छोटा पुल था जिसके द्वारा पटरियों को एक छोटी खाई के पार उतारते थे। इसका आविष्कार कम्पनी के इंजीनियरिंग कर्मचारी-विभाग के एच० जे० लिन्विल ने कारखाने में काम करने-वाले एक यान्त्रिक प्रतिभाशाली जोन एल पाइपर के सहयोग से किया था। उन्होंने उसका 'स्वत्व' संयुक्त रूप से पंजीबद्ध कराया था। 'पाइप'—(कारखाने तथा कार्यालय में उसको इसी नाम से सब पुकारते थे)—रेलपथ का पुल-निर्माता था, यद्यपि उसकी सब रचनाएं अब तक लकड़ी से ही की गई थीं। किसी पुल के जल जाने—जोकि एक सामान्य घटना थी—अथवा बह जाने पर वह जिस शीघ्रता से उसके स्थान पर नया पुल खड़ा कर देता था, उस शीघ्रता के लिये वह प्रसिद्ध हो गया था। अध्यक्ष टामसन कहा करते थे, "किसी जले पुल पर सारे इंजीनियरिंग-दल को लगाने की अपेक्षा अकेले 'पाइप' को नियुक्त करना मैं पसन्द करता हूं।"

अब पाइप लोह-पुलों का प्रबल समर्थक हो गया था। वह बार-बार कहता था, "काष्ठ-पुलों का युग बीत गया, एण्डी। अब तो लोहे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। किसी भी प्रथम वर्ग के रेलपथ पर अगले बीस वर्षों में एक भी काष्ठ-पुल बचा न रहेगा। कल्पना तो करो ऐसे पुल की जो न तो जले और न ही किसी आकस्मिक बाढ़ में बहे।"

एक पुल-निर्माता भागीदारी कम्पनी का संगठन करने के लिए उसने तथा रेलपथ के प्रधान पुल-अधीक्षक आरों शिफ्लर ने १८६२ में कम्पनी की नौकरी छोड़ दी। परन्तु उन्हें अपेक्षतया कुशल कारोबारी अफसरों और अधिक धन की आवश्यकता थी। लिन्विल तथा कारनेगी को इस दल में सम्मिलित कर लिया गया और कारनेगी ने 'कीस्टोन ब्रिज कम्पनी' संगठित की जिसमें पांच

भागीदार थे—टॉमस एन० स्कॉट पांचवां था—प्रत्येक ने १२५० डालर डाले। केवल ६२५० डालर की पूंजी से पुल-निर्माता कम्पनी का संगठन आज विचारकों को भले ही असंगत प्रतीत हो, परन्तु उस समय प्रत्येक वस्तु सस्ती पड़ती थी, कारोबार थोड़ी मात्रा में किया जाता था और बहुत-से बड़े कारोबार उस समय इतनी थोड़ी पूंजी से खड़े किए गए कि वह हमें एक बहुत ही निर्बल आधार प्रतीत होती। भागीदारों को जब-तब ऋण लेना पड़ता था; परन्तु उन्होंने ऋण को सदा नियत समय पर चुकाया। वे सब आपस में इस बात पर एकमत थे कि कोई काम 'घटिया न हो'; प्रत्येक पुल उनकी रचना-सामर्थ्य के अनुसार सर्वोत्तम हो। 'एन ऑनेस्ट ब्रिज' कार्लाइल से उधार लिया हुआ यह मुहावरा कारनेगी के प्रिय मुहावरों में से एक था।

कीस्टोन कारोबार की परीक्षा के प्रारम्भिक अवसरों में से एक उस समय उपस्थित हुआ जब कि पेनसिलवेनिया के पश्चिमी विस्तार का निर्माण करने वाली एक रेलपथ कम्पनी ने पिट्सबर्ग के ठीक पश्चिम में स्थित स्टुबनवेल में ओहायो नदी पर तीन सौ फुटी महराबवाला पुल बनाने का ठेका लिया। इस्पात अभी अमरीका में बनने नहीं लगा था और पिटवां लोहा भी बड़ी मात्रा में नहीं बनाया जा रहा था। इतनी लम्बी मेहराब का ढलवां लोहे का पुल बनाना एक दुस्साहस का काम था, परन्तु उन्होंने जोखिम उठाना स्वीकार कर लिया। रेलपथ का एक उच्च अधिकारी चौराहे पर पहुंचा और उसने ढलवें लोहे के बड़े-बड़े शहतीर पड़े देखे तो बोला, "मुझे तो विश्वास नहीं होता कि ये भारी ढले हुए (स्तम्भ) स्वयं अपने भार को भी उठाए ख रसकेंगे या नहीं। ओहायो नदी के पार रेलगाड़ी को पहुंचा पाना तो और भी अधिक कठिन होगा।"

परन्तु वह भूल रहा था; वह पुल कई वर्षों तक, जब तक कि उसे हटाया नहीं गया, दृढ़ रहा। तथापि पुल कम्पनी ने काम के शीघ्र ही पश्चात् पिटवें लोहे का प्रयोग आरम्भ कर दिया, पहले बन्धन की सिरे की रस्सियों के लिए और फिर पीछे कुछ दूसरे भागों के लिए।

इस ठेके पर विनियोक्ताओं को पर्याप्त लाभ मिल जाने की आशा थी परन्तु मुद्रास्फीति तथा युद्धकालीन शीघ्रता से बढ़ती गई महंगी के कारण अन्त में घाटे की आशंका हो गई। उस समय पेनसिलवेनिया के अध्यक्ष

एडगर टामसन ने स्वयं अपने अधिकार से आदेश दे दिया कि उन्हें हानि से बचाए रखने लिए कुछ अतिरिक्त धन-राशि दी जाए। दस वर्ष पश्चात् कारनेगी ने जो पहली लौह-भट्टी लगाई उसका नाम इसी कारण उसने श्री टामसन के नाम पर रखा। उसमें कृतज्ञता की भावना बहुत अधिक थी।

१८६३ में जब गृहयुद्ध के कारण आय-कर लगा—जोकि बीसवीं शती की दरों के सम्मुख बहुत ही साधारण था—तो एण्ड्र्यू कारनेगी की उस वर्ष की आय के विवरण में आय का आश्चर्यजनक जोड़ ४७,८६०'६७ डालर था जोकि सत्ताईस वर्ष की आयु के व्यक्ति के लिये एक विशिष्ट राशि थी। मण्डल-अधीक्षक के पद का उसका वेतन केवल २४०० डालर था। तैल विनियोग से सबसे अधिक लाभ हुआ। शयन-गाड़ी, कीस्टोन तथा आदम्स एक्सप्रेस—सब अच्छा लाभ दे रहे थे। शेष आय अन्य विविध विनियोगों से प्राप्त हुई थी। देखने में वह सचमुच 'स्कॉच' ही था। परन्तु उस समय खींचे गए उसके एक चित्र में वही स्निग्ध, प्रसन्नवदन दीख पड़ता है जोकि ग्यारह वर्ष पहले खींचे गए अन्तिम चित्र में है। तथापि उसके बाल कुछ काले पड़ गए थे और जबड़े पर छोटी धूसर दाढ़ी की पंक्ति दिखाई देने लगी थी। उसके ज्ञापन में ४२५० डालर की आय 'क्लोमैन' से भी दिखाई गई है। यह एक और कारबार था कि जिसने कारनेगी का धन बढ़ाया था—यद्यपि यहां दिखाया गया लाभ अपने भाई को दिए हुए धन से हुआ था।

एण्ड्र्यू क्लोमैन एक योग्य परन्तु दुराग्रही तथा झगड़ालू जर्मन यान्त्रिक था। ऐलेगेनी में उसका एक छोटा-सा ढलाई का कारखाना था तथा वह धुरियों में नाम पा गया था। युद्ध छिड़ जाने पर उसे कई सरकारी 'आर्डर' मिले, परन्तु कारोबार बढ़ाने के लिए उसके पास उपकरण तथा पूंजी की कमी थी, टौम मिलर उद्धार के लिए बढ़ा और एक छोटा-सा निगम संगठित हो गया।

मिलर ने कारनेगी को बताया, "एण्डी! मैं तुम्हें भी इसमें लेना चाहता था, परन्तु इसपर क्लोमैन ने आपत्ति उठाई। वह तुमसे भयभीत है। वह समझता है कि यदि कहीं तुम हमारे साथ आ गए तो सारे अड्डे पर तुम ही छा जाओगे अथवा छा जाने का प्रयत्न करोगे।"

परिहास को उन्होंने हंसी में टाल दिया; उन्हें स्वप्न में भी यह आभास

नहीं हुआ था कि अन्त में एण्डी भी कितना शीघ्र लोहे के कारोबार में आ जाएगा।

धुरों तथा तोप-आवरणों के सरकारी आदेश धड़ाधड़ आ रहे थे और पीछे दूसरी वस्तुओं के भी आने लगे। और भी अधिक पूंजी की आवश्यकता हुई। कुछ वर्ष पहले एक दुर्घटना में काल-कवलित जोन का छोटा भाई हेनरी फिप्स एक दिन बड़ी उत्सुकता से मिलर को कहने लगा, "लोहे के कारोबार में मैं भी प्रविष्ट होना चाहता हूं; परन्तु समझ में नहीं आता कि कैसे करूं।"

अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए टोम ने क्षण-भर सोचा...।

उसे याद आया कि हेनरी ने अवयस्क अवस्था में ही कैसे कारोबारी जीवन आरम्भ किया था। किशोर आयु में ही एक दिन उसने भाई से कहा, "जोन, क्या आप मुझे पच्चीस सेंट उधार दे सकेंगे?" भाई ने जब प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा तो वह फिर बोला, "एक बहुत आवश्यक काम है।"

जोन ने पच्चीस सेंट देने में कोई आनाकानी नहीं की। अगले दिन 'डिस्पैच' में एक संक्षिप्त विज्ञापन प्रकाशित हुआ—'एक इच्छुक बालक को काम चाहिए।' उस स्पष्ट तथा सादे वक्तव्य का एक व्यापारी संस्थान ने तुरन्त उत्तर दिया और हेनरी को संदेशवाहक लड़के के रूप में नियुक्त कर लिया। अपने माता-पिता की अनुमति लेकर हेनरी ने पढ़ना छोड़ दिया और नौकरी कर ली। तब से उसने शायद ही कोई दिन गंवाया होगा।

अब वह किसी पाउडर कम्पनी में मुनीम था, "बीस वर्ष का हो गया हूं और अब तक कहीं भी नहीं पहुंच पाया..." ये शब्द उसने एक ऐसे उदास स्वर में कहे जैसे कोई जीवन में असफल बूढ़ा बोल रहा हो।

टोम मिलर ने फिर सोचा। वह हेनरी को बचपन से देखता आ रहा था तथा जानता था कि वह प्रतिभाशाली, विवेकी तरुण है। फिर वह प्रिय शैतान जोन का भाई था। यह एक 'बड़ी' बात थी।

उसने पूछा, "क्या विनियोग के लिए कुछ धन है?"

हेनरी ने उत्तर दिया, "नहीं तो, अपने वेतन में से मैंने कभी-कभी कुछ बचाया अवश्य, पर वह सब मैंने अपने नियोक्ता के व्यवसाय में लगा दिया।"

"क्या तुम 'क्लोमैन एण्ड कम्पनी' में आना चाहते हो?"

"मैं निश्चय ही आता यदि मेरे पास कुछ मुक्त मुद्रा होती। परन्तु

निराशा से हाथ फैलाता हेनरी बोला, "मेरे पास कुछ नहीं है।"

मिलर ने कहा, "मैं तुम्हें कुछ धन उधार दे सकता हूं। देखो, कारोबार की स्थिति यह है—हमने आठ हजार डालर का निगम संगठित किया हुआ है। परन्तु इसका सारा मूलधन चुकता नहीं हुआ है। अधिकारपत्र में लिखा यह है कि कारोबार में आवश्यकता होने पर जब-जब मांग आएगी तो यह चुकाया जाता रहेगा। कम्पनी नई मशीनों के लिए कुछ और धन तत्काल वरत सकती है। मेरे पास थोड़ी-सी धन-राशि उधार देने के लिए बची हुई है और मैं कुछ शतकों का भागीदार तुम्हें बनवा सकता हूं।"

हेनरी ने इस अनुग्रह को कृतज्ञतापूर्वक ले लिया और इस प्रकार दयालु टॉम मिलर ने एक प्रगतिशील तथा निश्चित लक्ष्यवेधी कारोबार में अपना धन अपने लिए न लगाकर कम्पनी के शेयर खरीदने के लिए सोलह सौ डालर उधार दे दिए। आठ सौ डालर फिप्स को और आठ सौ डालर किसी समय के 'तल के हूशों' में से दो और, विलयम तथा ऐलैक्जेण्डर कॉले को। अन्यत्र कहीं भी व्यक्तियों का ऐसा दल मिलना कठिन है, जो बचपन से ही इतना संगठित, ऐसा अनुरक्त तथा विश्वस्त रहा हो।

युवक फिप्स को क्लोमैन एण्ड कम्पनी में लेते समय यह समझौता हुआ था कि वह कम्पनी का लेखा रखा करेगा। इसलिए दिन-भर पाउडर कम्पनी का कार्य करके वह भोजन के कुछ ग्रास गले से उतारता तथा क्लोमैन-कार्यालय की ओर लपक पड़ता। वहां वह बहुत देर सांझ तक बहियों पर परिश्रम करता रहता। जब वह उस कार्यालय में पहुंच गया तो यह लगभग अनिवार्य ही था कि टामस कारनेगी भी उसका अनुगामी बनता। लगभग समवयस्क वे दोनों इतने घनिष्ट थे जितने कि डेविड तथा जोनाथन। कुछ महीने पश्चात् जब क्लोमैन कम्पनी को फिर धन की आवश्यकता हुई तो अपने भाई के नाम पर एण्ड्र्यू कारनेगी ने धन दिया और उसका भाई उसके कारण कम्पनी का एक और भागीदार बन गया।

परन्तु चिड़चिड़ा तथा संशयालु क्लोमैन बाधक तत्त्व बना रहा। उसे सदा यह शंका रहती थी कि कोई उसे धोखा दे रहा है; इसलिए उसने शीघ्र ही एक व्यापक झगड़ा खड़ा कर दिया—और समाचारपत्रों में यह सूचना प्रकाशित करने का पागलपन भी वह कर बैठा कि एन० मिलर अब उसकी

लौह-मिल का भागीदार नहीं रहा। इसपर पूर्णतया विरक्त हुए एन० मिलर ने अपने शेयर बेच डाले।

एण्ड्रयू कारनेगी ने उससे कहा, "अच्छा तो हम अपना निजी लौह-कारखाना क्यों न खोल लें! और वस्तुओं के साथ-साथ यह हमारी पुल-कम्पनी के लिए भी लोहा बनाएगा।"

मिलर ने आपत्ति की, "पर यह तो तुम्हारे भाई टौम की कम्पनी से स्पर्द्धा करना हुआ।"

"दोनों के लिए पर्याप्त कारोबार है। उन्होंने इस समय युद्ध के ठेके लिए हुए हैं और हम अधिकतर पुलों पर निर्भर रहेंगे।"

इस प्रकार सन् १८६४ में 'साइक्लोप्स आयरन वर्क्स' की अवतारणा हुई और तब क्लोमैन वस्तुतः प्रचण्ड हो उठा! परन्तु उसे अपना गुस्सा पी जाना पड़ा, कारण कि युद्ध का अन्त हो रहा था तथा सेना के 'आर्डर' अधिक विरल तथा आकार में छोटे होते जा रहे थे। शीघ्र ही उसके भागीदार 'साइक्लोप्स' में सम्मिलित हो जाने का सुझाव देने लगे। परिवर्तन तथा घटनाओं के वेग से घबराहट हो उठी। अतएव इच्छा से अथवा अनिच्छा से, क्लोमैन ने अपने-आपको नये सम्मिलित कारोबार, 'यूनियन आयरन वर्क्स' के संचालक-मण्डल की मेज पर, टौम मिलर तथा एण्ड्रयू कारनेगी के साथ बैठा पाया, मिलर सबसे अधिक मूलधन का स्वामी था।

एण्ड्रयू मिलर से बोला, "तुम्हारे साथ दुस्सह अन्याय हुआ था, टौम; अब तुम विजयी रूप में लौटे हो।"

दोनों कारखानों को अलग-अलग ही रखा गया; परन्तु दोनों ही प्रचण्ड वेग से दनदनाकर चलने लगे।

युद्ध के अन्तिम दिनों में एण्ड्रयू कारनेगी की रेलपथ-सेवा, उसके उच्चाधिकारियों टौमसन तथा स्काट की इच्छा के विपरीत ही, समाप्त हो गई। उसके त्यागपत्र का दिनाङ्क २८ मार्च, १८६५ था। उसने पिट्सबर्ग मण्डल के कर्मचारियों के काम की प्रशस्ति व कल्याण-कामना का सूचक एक पत्र भी लिखा। उनमें वह इतना लोकप्रिय था कि विदाई के समय उन्होंने एक बढ़िया घड़ी भेंट की। उसके पद पर उसका उत्तराधिकारी पुराने ऐलेगेनी किशोरों में से ही अन्यतम बौब पिटकाएर्न बना।

ग्रौर तब, वैसी ही प्रसन्नता से जैसी प्रसन्नता से कि उन्होंने ग्रन्य दर्जनों काम किए थे, कारनेगी तथा मिलर ने 'पिट्सवर्ग लोकोमोटिव वर्क्स' संगठित किया—निश्चय ही यह ग्रल्प परिमाण में ग्रारम्भ किया गया था, जहां कभी-कभी ग्रनियमित ग्रन्तर से एक इंजन तैयार होता था। इससे पिछले वर्ष कारनेगी तथा उसका पड़ोसी कोलमैन कुछ ग्रौर तैलभूमि की प्राप्ति के लिए ग्रोहायो चले गए थे, इससे उन्हें बहुत लाभ हुग्रा, तथा विनियोग के लिए ग्रौर धन मिल गया, जिससे नये रेलपथ 'यूनियन पैसिफिक रेलरोड' का मूलधन भी खरीदा गया। यह रेलपथ प्रथम बार दोनों महासमुद्रों को रेल द्वारा मिलाने के प्रथम प्रयत्न में ग्रब चरागाहों तथा पर्वत के पार पहुंचाया जा रहा था। १८६७ के ग्रारम्भ में कीस्टोन ब्रिज कम्पनी ने सेंट लुई स्थान पर मिसिसिपी नदी पर एक तिहरी मेहराब का पुल बनाने का काम हाथ में लिया; यद्यपि इसका नक्शा केप्टेन जेम्स बी० ईड्स ने बनाया था परन्तु कीस्टोन कम्पनी के श्री लिनविल ने इसमें कुछ परिवर्तन कर दिए थे। वह लोहे का पुल ग्राज पचहत्तर वर्ष से ग्रधिक बीत जाने पर भी ग्रभी तक ग्रसाधारण मात्रा में बढ़े हुए रेल तथा दूसरे यातायात को ग्रति विस्तृत ग्रतएव पूर्वापेक्षया खूब बड़े नगर में ग्राने तथा जाने के लिए ग्रपने पार उतारता चला ग्रा रहा है।

इस समय बेग्राडं टेलर लिखित 'व्यूज ग्रफुट' नाम की पुस्तक होमवुड में लोकप्रिय थी। इसमें लेखक के यूरोप-पर्यटन का वर्णन ग्रंकित था। कारनेगी, जोकि एक उत्साही पर्यटक व दृश्यों का रसिया था ग्रौर इतिहास एवं भूगोल में रुचि रखता था, टेलर के ग्रनुभव के सदृश ग्रनुभव लेने के लिए उत्सुक हो गया। एक दिन उसने जौन वैण्डरवोर्ट से कहा, "वैण्डी! यदि ग्रभी ही तीन हजार डालर का लाभ हो जाए तो क्या इस धन-राशि को तुम मेरे साथ यूरोप-पर्यटन में व्यय करना चाहोगे?"

"मैं, चाहूंगा?" वैण्डी ने प्रत्युत्तर में पूछा, "क्या हंस तैरना चाहेगा? ग्रौर कोई ग्रायरिश ग्रालू खाना चाहेगा?"

उन दिनों तैल-शेयर्स राकेटों की तरह ऊपर उड़े चले जा रहे थे। कारनेगी के कहने से जॉन ने इस काले सोने में धन का विनियोग कर दिया, जिससे शीघ्र ही ग्रभीष्ट धन-राशि की प्राप्ति हो गई। दोनों ने हैरी फिप्स को भी, जोकि ग्रब समृद्ध हो रहा था, साथ चलने का निमन्त्रण दिया ग्रौर तीनों वसन्त के

आरम्भ में एक स्टीमर पर सवार हो गए······।

दिन बीतते गए और समृद्धि एवं औद्योगिक साम्राज्य के निर्माण का कारनेगी का कार्य चलता रहा। साथ ही अब वह अधिकतर पर्यटन में बिताने के लिए लम्बे अवकाश भी शीघ्र-शीघ्र लेने लगा। उसने अपने लेखों, भाषणों तथा कार्यों से यह बात स्पष्ट कर दी कि उसके—किसी भी व्यक्ति के—जीवन का मुख्य तथा उचित लक्ष्य लोहा या इस्पात अथवा कुछ भी और बनाना ही नहीं है—नहीं होना चाहिए, अपितु सुसंस्कृत मन एवं आचरण का विकास करना और अपने धन को मानव जाति के हितार्थ वितरण करना होना चाहिए।

घर पर रहते हुए वह कठोर एवं निर्व्याज परिश्रम करता था, परन्तु प्राणलेवा परिश्रम करने की उसकी इच्छा नहीं थी। अपने जीवन के सतत श्रम के वे दिन—अल्पवेतन के लिए दिन में देर तक, सप्ताह में छः दिन कभी-कभी सातों दिन काम करने के दिन—उसकी मानसिक पृष्ठभूमि पर अंकित थे। अब अपनी आत्मा के भरण-पोषण में लगना चाहता था। वह मन ही मन इस बात पर गर्व अनुभव करता था कि उसके कारबारों में इतने अच्छे कर्मचारी नियुक्त हैं कि वह कभी भी महीनों तक उनसे इस विश्वास के साथ अनुपस्थित रह सकता है कि उनका संचालन पूरी योग्यता तथा निष्कपटता से होता रहेगा। सच तो यह है कि साथी चुनने के लिए उसको सौभाग्य से अपने सम्बन्धियों तथा बचपन के मित्रों में ही कई योग्य तथा दृढ़चरित्र व्यक्ति मिल गए थे। और जब वह बाहर होता तो घर पर के अपने स्वार्थों को कभी भुलाता न था; वर्तमान तथा भावी व्यापारिक रुख को, पथ को आंखों से ओझल नहीं होने देता था।

लिवरपूल में फिप्स का एक सम्बन्धी जोन फ्रैंक्स इन पर्यटकों में सम्मिलित हो गया और इस चौकड़ी ने आगामी पांच महीने इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी, स्विट्जरलैण्ड तथा इटली के पर्यटन में बिताए; सदा किशोरों की सी उमंग में! घर के समाचार सदा अनुकूल रहे। कीमतों की सतत वृद्धि, नये आदेशों की निरन्तर वृष्टि, कारखानों में दुहरी पारी में काम चालू रहना—युद्धोतरकालीन तेजी पूरे प्रवाह में थी। कारनेगी ने अब प्राचीन व अर्वाचीन ऐतिहासिक स्थानों पर अवस्थित, प्रसिद्ध-प्रसिद्ध संगीतभवनों तथा नाट्यशालाओं में श्रवण एवं दृश्यावलोकन, कलानिकेतनों, गिर्जाघरों और दुर्गों की यात्रा के

अवसरों का आनन्द लूटा। वेनिस में मध्ययुगीन वेनिस-प्रजातन्त्र के मुख्य न्यायाधीशों—डोज़ों—के महल से उसकी साहित्यिक भावना को प्रबल प्रेरणा मिली। बड़े भवन में उसने तीनों साथियों को बड़े शासनाधिकारियों के आसनों पर बिठाया (फ्रैंक्स को डोज के सिंहासन पर) और तब उनके सम्मुख खड़ा होकर उसने भाषण देना आरम्भ किया :

"हे सबसे अधिक वीर, धीर और आदरणीय सज्जनो,—मेरे अति भद्र एवं प्रशस्त स्वामियो······" इस प्रकार उसने प्रभावशाली हाव-भाव दिखाते हुए आथेलो का सारा पुनर्विचार संभाषण दुहरा दिया।

वह जहां भी गया वहां यूरोप के व्यापारों, उद्योगों और यातायात पद्धति को ध्यान से देखना न भूला; इस प्रकार यात्रा से उसे व्यावहारिक लाभ भी मिला। वह यह भी नहीं भूला कि 'यूनियन पेसिफिक रेलपथ' धीरता से प्रशान्त तट की ओर बढ़ा चला जा रहा है। रोम से उसने स्कॉट को लिखा—"क्या सैण्ट्रल ट्रांसपोर्टेशन कम्पनी (वुडरफ शयन-गाड़ी कम्पनी) को यूनियन पैसिफिक से शयन-गाड़ी का ठेका लेने का यत्न नहीं करना चाहिए?" स्कॉट के प्रत्युत्तर के प्रारम्भिक शब्द ये थे, "नवयुवक! तुम निश्चय ही अवसर को हाथ से न निकलने देने का पूरा यत्न करते हो।" जॉर्ज एम० पुलमैन ने वुडरफ की शयन-गाड़ी से इतनी अधिक मिलती-जुलती शयन-गाड़ी के लिए अपना एकाधिकार पंजीवद्ध करा लिया था कि आश्चर्य होता है कि वह कैसे दे दिया गया; परन्तु कार्यालय की कार्य-पद्धति कभी-कभी समझ के बाहर रहती थी। पुलमैन यूनियन पैसिफिक के ठेके के भी पीछे पड़ा हुआ था; परन्तु रेलपथ के प्रबन्धकों ने अपना निश्चय दो साल तक टाल दिया था।

भाई टॉम का विवाह शीघ्र ही पांच सुन्दर बहनों में से एक लूसी कोलमैन से हो रहा था।

यात्रा से लौटकर एण्ड्रयू ने भाई से पूछा, "क्या तुमने अपने निवास-स्थान के सम्बन्ध में कोई निर्णय कर लिया है?"

"नहीं तो," टॉम ने उत्तर दिया।

"इसी घर को तुम ले लो तो कैसा रहे?" वे होमवुड में स्थित अपने घर के भोजन-कक्ष में नाश्ता कर रहे थे।

टॉम ने उत्तर दिया, "यदि लूसी को पसन्द हो तो मेरे लिए तो बहुत

उपयुक्त रहेगा। परन्तु आप कहां जा रहे हैं ? न्यूयार्क चले जाने का वह विचार तो अब नहीं है न ? क्या सचमुच है ?"

"हां, मैं इसे उचित समझता हूं। तुम जानते हो कि पिछले कुछ ही वर्षों में मुझे वहां कितना अधिक बार-बार जाते रहना पड़ा है। न्यूयार्क का संयुक्त-राष्ट्र में उतना ही महत्त्व है जितना कि लन्दन का ग्रेट ब्रिटेन में है। सब महत्त्वपूर्ण उद्योगों के मुख्य कार्यालय वहां हैं ही। वहां के महाजन प्रतिभूतियों के लेन-देन का सौदा, विशेषकर इंग्लिश कम्पनियों के साथ, करने के लिए मेरे पास आते रहते हैं और इस प्रकार मुझे पर्याप्त लाभ होने की सम्भावना रहती है। माताजी और मैं बार-बार यहां आते ही रहेंगे···।"

"ओहो ! तो क्या वह भी तुम्हारे साथ जा रही हैं ?"

उनकी माता बोल उठीं, "हां, भई, आन्द्रा ने केवल कल रात ही यह समाचार सुनाया, यद्यपि इसका आभास मुझे पहले ही हो रहा था। मैं होमवुड छोड़ना तो नहीं चाहती; परन्तु यदि उसके लिए यही सर्वोत्तम है तो मैं जाने के लिए तैयार हूं।"

"और मैं इधर का ध्यान रखूंगा," एण्ड्रयू कहने लगा, "यद्यपि श्री कोलमैन तथा पाइप का तो कहना ही क्या, तुम, टॉम मिलर, एवं हैरी फिप्स सरीखे भागीदारों के रहते अब यहां मेरी शायद ही आवश्यकता पड़े।"

इस बात पर, निश्चय ही, टॉम ने अरुचि प्रकट की। तथापि, पन्द्रह-सोलह वर्ष का होते हुए भी वह बड़ा अच्छा व्यापारिक प्रतिभाशाली प्रमाणित हो रहा था, अपने उत्तरदायित्व पर कारखानों की व्यवस्था करने में वह सर्वथा योग्य था।

इस प्रकार उसका तथा लूसी का विवाह—एक सफल प्रमाणित विवाह—हो गया और उन दोनों ने वह घर ले लिया। उधर एण्ड्रयू तथा उसकी माताजी न्यूयार्क चले गए और वहां के सबसे बड़े तथा बढ़िया होटल सेंट निकोलस के एक भाग में बस गए। मार्गरेट कारनेगी ने जीवन के इस नये क्रम में कोई विशेष बाधा अनुभव नहीं की। इसको रुचिकर मानने का वचन दिए बिना भी उसका निश्चय था कि वह सन्तुष्ट रहेगी। उस पहली रात को अपने सुसज्जित शयन-कक्ष में जब पहली बार लेटी तो उसकी विचारधारा लगभग बीस वर्ष पहले के उस दिन जा पहुंची जबकि उधार लिए धन की सहायता से अमरीका

में आए हुए प्रवासी निर्धन स्कॉच जुलाहे तथा उसकी पत्नी एवं दो छोटे बच्चों ने अपने-आपको न्यूयार्क की गलियों में, उस महानगरी की अद्भुतताओं को घूरते पाया था।

एण्ड्रयू कारनेगी न्यूयार्क स्थित कार्यालय में कारोबार की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धरकर बैठ नहीं रहा। वह तत्काल ही 'आइओवा' के केओकक स्थान दौड़ा गया कि वहां मिसिसिपी नदी पर बननेवाले पुल का ठेका तय कर सके। अगले वर्ष वह फिर 'मिडवेस्ट' गया कि इस बड़ी नदी पर एक और पुल, 'डबूक' पर बनाने का सौदा मुख्यतया इस तर्क पर कर सके कि कीस्टोन कम्पनी अब पुलों में ढलवें लोहे के स्थान पर पिटवां लोहा प्रयुक्त कर रही है।

१८६८ के अन्त में जब वह अपनी आय का जोड़ लगाने बैठा तो यह ५६११० डालर हुआ। तब, कुर्सी में पीठ के बल झुककर, लेखनी को अंगुलियों पर घुमाते तथा कुछ देर तक भित्ति पर टिकटिकी बांधे हुए उसने अपना वह मनोरथ शब्दों में लिख डालने का निश्चय कर लिया जोकि बहुत देर से उसके मन में एक निश्चित रूप में पक्का हो रहा था। उसने फिर आगे की ओर झुक-कर वह महत्त्वपूर्ण स्मरण-पत्र लिख डाला :

'सेंट निकोलस होटल,
न्यूयार्क
दिसम्बर, १८६८

'तेतीस वर्ष और आय पचास हज़ार डालर वार्षिक ! अब दो वर्ष में मैं अपने सारे कारोबार की ऐसी व्यवस्था कर सकता हूं कि प्रतिवर्ष कम से कम पचास हज़ार डालर तो निश्चित रूप से मिलता रहे। इससे अधिक कभी नहीं कमाऊं—समृद्धि को बढ़ाने का कोई यत्न न करूं, अपितु अतिरिक्त धन-राशि को प्रतिवर्ष परोपकार के कार्यों में व्यय करूं। सदा के लिए व्यापार-कारोबार छोड़ दूं—केवल दूसरों के लिए ही कारोबार करूं।

'ऑक्सफोर्ड में बसूं तथा साहित्यिक व्यक्तियों के परिचय में आकर सर्वांग-पूर्ण शिक्षा ग्रहण करूं (इसके लिए तीन वर्ष तक सक्रिय काम करना होगा), सार्वजनिक भाषण का विशेष ध्यान रखना है। तब लन्दन में बसना है तथा किसी समाचारपत्र अथवा सजीव आलोचना-पत्र में इतना धन लगाना है कि उसका नियन्त्रण अपने हाथ में आ जाए और सार्वजनिक कार्यों, विशेषतः शिक्षा

तथा निर्धन वर्गों के उद्धार से सम्बद्ध कार्यों, में भाग लेते हुए उस समाचार-पत्र की सामान्य व्यवस्था पर ध्यान देना है।

'मनुष्य किसीका तो पुजारी होता ही है—धनसंचय निकृष्टतम भक्ति-मार्ग है। धन की पूजा से बढ़कर अवनति के गढ़े में ढकेलनेवाली कोई पूजा नहीं है। मैं जिस काम में हाथ डालूं उसे पूरा करने में कोई कमी न रखूं। इसलिए मुझे इस बात का ध्यान रखना है कि मैं अपना जीवन वह चुनूं कि जो मूलतः सबसे अधिक विकासोन्मुख हो। कारोबार की चिन्ताओं में अति-क्षुब्ध तथा कम से कम समय में अधिक से अधिक धन कमाने की विधि पर अपनी लगभग सारी विचारधारा को केन्द्रित रखते हुए ही यदि जीवन-यापन करता गया तो मैं शायद इतना अधिक पतित हो जाऊं कि स्थायी निस्तार होने की आशा भी न रहे। पैंतीस वर्ष की आयु में मुझे कारोबार छोड़ देना है, परन्तु इन आगामी दो वर्षों में भी मैं दुपहर पश्चात् का समय विधिवत् ज्ञानोपार्जन तथा स्वाध्याय में बिताना चाहता हूं।'

उसको इस बात का स्वप्न में भी ध्यान न था कि दो वर्ष की अवधि में अथवा कभी भी कारोबार के जाल से छूट सकना कितना कठिन होगा। विश्राम का समय दो नहीं, बीस वर्ष पश्चात् आना था। तथापि, धन-उपार्जन की अपेक्षा संस्कृति को अधिक चाहने का उसका यह वक्तव्य सिद्ध करता है कि अपने जीवन में पीछे से जो यह उपदेश दिया करता था कि सम्पत्ति पर करोड़-पति का वास्तविक स्वामित्व नहीं होना चाहिए, सार्वजनिक हित में उपयोग करने के लिए वह उसका एक संरक्षक-मात्र है—कितना खरा था। निन्दकों ने उसके इस दर्शन को दम्भ बताया; परन्तु कारनेगी सचमुच यही चाहता था; और समय आया कि जब उसने अपना वचन पूरा करना आरम्भ किया, यद्यपि उसने अपना सारा धन कभी दान नहीं किया।

अध्ययन के लिए वह ऑक्सफोर्ड कभी नहीं गया, परन्तु सार्वजनिक भाषण की शक्ति को बढ़ाने तथा इतिहास, दर्शन, साहित्य एव कलाओं का ज्ञान उपार्जित करने में उसने सतत परिश्रम किया। कारोबार एवं आत्मसंस्कार के संयुक्त उद्देश्य से इंग्लैण्ड तथा दूसरे विदेशों की यात्राएं अब अपेक्षाकृत शीघ्र-शीघ्र होने लगीं। उसका खिंचाव दोनों दिशाओं में था; यद्यपि उसका वास्तविक आन्तरिक प्रेम ऊंची बातों से था, तथापि कारोबार की सफलता का प्रलोभन

अकाट्य था। विश्राम ग्रहण से पूर्व अपने लिए नियत की गई दो वर्ष की अवधि में उसने पूरे मन से परिश्रम किया। वह बाल्टीमोर एण्ड ओहायो रेलरोड के धुरन्धर जॉन डब्लू० गैरेट के पास पहुंचा और ओहायो नदी के ह्वीलिंग तथा पारकर्स वर्ग—दो स्थानों पर दो पुल बनाने के ठेकों का सौदा कर आया। वह जॉर्ज एम० पुलमैन से मिला—जोकि शिकागो में अपनी शयन-गाड़ियों के निर्माण का काम आरम्भ करनेवाला था—और चरित्र-निर्णय में भूल न करनेवाली अपनी प्रतिभा-शक्ति के सहारे उसने पुलमैन में विद्यमान व्यापारिक महत्ता की मात्रा भांप ली।

उसके साथी रोष से बोले, "इस व्यक्ति पर अधिकारोल्लंघन के आरोप में अभियोग चलाना ही पड़ेगा।"

कारनेगी ने प्रत्युत्तर दिया, "नहीं, मेरा विचार यह नहीं है। आप जानते ही हैं कि कानूनी अभियोग व्यापारालयों में वर्षों तक कैसे खिचे चले जाते हैं और सारा रुपया वकील ले जाते हैं। शिकागो में पुलमैन की अवस्थिति के कारण मिडिलवेस्टर्न तथा सुदूर पश्चिमी रेलपथों पर उसको हमसे अधिक उत्कृष्ट अवसर मिला हुआ है और इससे बढ़कर बात यह है कि औद्योगिक क्षेत्र में बड़े-बड़े काम करना इस तरुण के भाग्य में लिखा है। अच्छा यही है कि यदि हो सके तो हम उससे मिल जाएं।"

सौभाग्य से ही १८६६ की ग्रीष्म ऋतु की एक सन्ध्या के समय कारनेगी ने अपने-आपको जॉर्ज पुलमैन के लगभग साथ ही साथ सेंट निकोलस (होटल) की सामने की सीढ़ियों पर चढ़ते पाया। अगले दिन न्यूयार्क में 'यूनियन पैसिफिक' के संचालकों की बैठक होनी थी; इसके पश्चात् उन्होंने शयन-गाड़ी का ठेका देना था।

कारनेगी ने सोल्लास कहा, "पुलमैन महोदय, नमस्कार।" प्रत्युत्तर में पुलमैन कड़वे मन से नमस्कार फुसफुसाकर रह गया, परन्तु कारनेगी उखड़ा नहीं।

"कितनी विचित्र बात है कि हमारी भेंट यहां हुई!" उसका अगला कथन था जिसका कि उसे उत्तर भी न मिला। केवल क्षण-भर आकुल रह, कारनेगी बच्चों की सी हंसी के साथ बोल उठा, "लो, अब तो हमारा साथ हो ही गया! क्या आप नहीं मानते कि हम दोनों अच्छे-खासे मूर्ख बने जा रहे हैं?"

प्रतिद्वन्द्वी निर्माता रुक गया; उसने अपने आह्वाता को घूरकर देखा तथा पूछा, "आपका मतलब ?"

"यही यूनियन पैसिफिक का मामला। इसपर हम दोनों का संघर्ष हो, इससे क्या लाभ ? प्राप्ति की जो थोड़ी-बहुत आशा है, उसे भी खो बैठेंगे हम ?"

अब सुनवाई हुई। पुलमैन ने पूछा, "इस सम्बन्ध में आपका क्या प्रस्ताव है ?"

"एक हो जाओ," कारनेगी चिल्ला उठा। "यूनियन पैसिफिक के सम्मुख आपका और मेरा दल एक संयुक्त प्रस्ताव रखें और एक कम्पनी बनाएं।"

"आप इसका नाम क्या रखेंगे ?"

कारनेगी समझता था कि यही कसौटी का प्रश्न था और उसका अपना उत्तर तैयार था, "दि पुलमैन पैलेस कार कम्पनी।"

पुलमैन तत्काल पिघल गया, "आइए, मेरे कक्ष में पधारिए," उसने निमन्त्रण दिया।

और इस प्रकार सौदा हो गया। भद्र-शील थियोडोर वुडरफ नई कम्पनी के नामकरण से कुछ दु:खी अवश्य हुआ, परन्तु जब उसे बताया गया कि एकीकरण से किन-किन आर्थिक लाभों की सम्भावना है तो वह योजना से सहमत हो गया।

परन्तु अन्त में इस्पात ने कारनेगी को अपने जाल में जकड़ लिया। वह पहले ही से इस्पात थोड़ी मात्रा में बनाता चला आ रहा था; परन्तु इसका निर्माण धीमा व दुरूह था—वस्तुत: यह एक कला ही थी—जब तक कि हेनरी बेसेमर ने इंगलैण्ड में एक प्रक्रिया न खोज निकाली कि जिससे पटरियां तथा पुलों के शहतीर भी ढाले जा सकें। अब कारनेगी की भावी जीवनचर्या का एक निश्चित सांचा तैयार हो गया था।

: ८ :

इस्पात का युग

गृहयुद्ध तक अमेरिका की सब रेलगाड़ियां ढलवें लोहे की पटरी पर चलती थीं। पहली इस्पात-पटरियां १८६३ में इंगलैंड से मंगाई गईं। परन्तु गृह-युद्ध के पश्चात् अमरीका के लोह-निर्माताओं ने बेसेमर-प्रक्रिया से काम लेना आरम्भ कर दिया। कारनेगी का इस ओर विशेष झुकाव तब तक नहीं हुआ जब तक वह अपनी एक बंधक-विक्रयार्थ यात्रा के अवसर पर इंगलैण्ड में इस्पात बनता न देख आया। वह एकदम प्रोत्साहित हुआ। वह न्यूयार्क की पार्टी से दौड़कर पिट्सबर्ग पहुंचा और भागीदारों से चिल्लाकर बोला, "ढलवें लोहे का युग बीत गया। अब तो इस्पात राजा है। हमें इस्पात की पटरियां बनाना आरम्भ करना होगा—तत्काल आरम्भ करना होगा।"

उसको अनघड़ क्लोमैन से तो विरोध की आशा थी ही; परन्तु इस बात का उसे कु भी आभास न था कि उसके दूसरे भागीदार, भाई टॉम भी, उसके विरोधी होंगे। कुछ भी हो, वे लोहेवाले ही तो थे; वे अपने शील और अपनी विचारधारा को इतना अचानक नहीं बदल सकते थे। उन्होंने अभी ही एक नई ब्लास्ट भट्टी बनाई थी जोकि अमरीका में सबसे बड़ी थी (जिसका नाम टॉम की पत्नी के नाम पर लूसी रखा गया था) और इसके निर्माण में उनका ढेर-सा धन व्यय हो गया था। अन्त में वे—विशेषकर टॉम, कुछ चुप हुए, अब कुछ अधिक दकियानूसी तो यह अनुभव किए बिना न रह सके कि एण्ड्र्यू कुछ उच्छृङ्खल तथा अधीर हो उठा था। उसके समय के कुछ व्यक्तियों का तो सदा यही विश्वास रहा कि उसकी सफलता का श्रेय उतना ही उसके सौभाग्य को भी था कि जितना कि उसकी प्रतिभा तथा कठिन परिश्रम को था। टॉम कुछ अधिक अच्छी तरह जानता था, यद्यपि वह सदा अपने भाई के नूतन विचारों का साथ देने के लिए तैयार नहीं होता था।

सुख-सुविधापूर्वक अपनी कुर्सी में पीछे की ओर सहारा लेते हुए उसने

परामर्श दिया, "कुछ धीरे-धीरे बढ़ो, एण्डी ! अभी तो इस्पात के लिए बड़ी उत्सुकता है परन्तु शीघ्र ही इसकी चरम सीमा आ जाएगी। लोहा ! लोहा ही अमरीकन उद्योग का वास्तविक आधार है और बना रहेगा। हमारा काम खूब चल रहा है और लोहे में धन कमा रहे हैं। अपनी परिधि से बाहर के किसी काम में बहुत-सा धन रोक देने की क्या आवश्यकता है ?"

दूसरे भागीदारों ने टॉम का समर्थन किया और कुछ निष्फल तर्क के पश्चात् एण्ड्रयू ने कहा, "अच्छा, यदि तुम मेरे साथ नहीं आते तो मुझे एक पृथक् निगम बनाना होगा जिसमें भागीदारों का एक सर्वथा नूतन दल सम्मिलित रहेगा।"

टॉम बोला, "पर मेरा यह अभिप्राय तो नहीं है एण्डी कि मैं तुम्हारी योजना में कुछ भी धन नहीं लगाऊंगा। सम्भव है कि दूसरे साथी भी, भले ही थोड़ा ही सही, लगाएं। परन्तु हमारी यह वर्तमान कम्पनी इस उद्योग को प्रारम्भ करे—यह मेरी सम्मति नहीं है।"

"सम्भवतः तुम्हारी बात ठीक है," एण्ड्रयू ने सहमति प्रकट की।

इसलिए उसने एक दूसरा दल संगठित किया जिसमें होमवुड के पड़ोसी कोलमैन तथा स्टेवार्ट, रेलपथ के उच्चाधिकारी टामसन तथा स्कॉट, और मुख्यतम भागीदार शुष्क द्रव्यों का विक्रेता डेविड मैक्कैण्डलेस सम्मिलित हुए। एक बार जबकि रिबेका स्ट्रीट के दिनों में कारनेगी-परिवार का भाग्य निम्नतम स्तर पर था तो श्री मैक्कैण्डलेस ने मौसी ऐटकिन के द्वारा उन्हें ऋण देने का प्रस्ताव रखा था। प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया गया था, परन्तु एण्ड्रयू उस दया-भावना को कभी भूला नहीं।

लोह-उद्योगों में के उसके सब भागीदारों ने थोड़ी-थोड़ी मात्रा में मूलधन खरीदा, और भाई टॉम ने मिल के लिए स्थान का चुनाव किया, मौनौंगहीलं नदी पर पिट्सबर्ग से बारह मील ऊपर ब्रेडोक गांव में ठीक उस स्थान पर जहां कि ब्रिटिश सेनापति ब्रेडोक को सन् १७५५ में फ्रांसीसी तथा इंडियन सेना ने बुरी तरह हराया और मार गिराया था। यहां से इस्पात मिल की दो बड़े रेलपथों और मौनौंगहीलं नदी द्वारा ओहायो नदी तक पहुंच सम्भव थी।

"मैं इसका नाम, अपने रेलपथ दिनों के पुरातन प्रिय मित्र के सम्मान में, 'एडगर टॉमसन स्टील वर्क्स' रखना चाहता हूं।"

परन्तु अधिक मूलधन का स्वामी होते हुए भी एडगर इस विचार से कुछ विरक्त था। उसने कहा—"एण्डी, अमरीकन-इस्पात-रेलों से अपना नाम सम्बद्ध करने के विषय में मैं कुछ हिचकिचाता हूं। अब तक जो पटरियां बनाई गई हैं उनसे किसीको श्रेय नहीं मिला। अच्छा हो इसका कोई और नाम रख लें।"

"परन्तु हम तो बढ़िया पटरियां बनाएंगे, टौमसन महोदय!" कारनेगी ने प्रतिवाद किया। "अब इस देश में भी उतना ही अच्छा इस्पात बनाया जाना सम्भव है जितना अच्छा कि संसार में कहीं भी बन सकता है। मेरा संकल्प तो यह है कि हम पटरियों में भी वैसी ही प्रसिद्धि प्राप्त करें जैसी कि कीस्टोन पुलों तथा क्लोमैन धुरों में प्राप्त की है।"

और अन्त में टौमसन सहमत हो गया।

मिल के भवन का निर्माण अभी बहुत आगे नहीं बढ़ पाया था कि १८७३ का वित्त-संकट देश पर छा गया। बहुत-से आलोचकों के मुंह से सुन पड़ा, "आहा! अन्त में उस तेज एण्डी के भाग्य ने पलटा खा ही लिया। वह मिट जाएगा।" योजना में उसके अपने पच्चीस हजार डालर लगे हुए थे—जिसमें से अधिकांश बन्धक-पत्रों की बिक्री से मिला दलाली का धन था। यह भी भाग्य की बात थी कि उसने अपनी जन्मभूमि डन्फर्मलिन को एक स्नानघर भेंट करके लोकहित-कार्यों का आरम्भ करने के लिए भी वही वर्ष चुना। नकद धन की प्राप्ति के लिए उसने अपना पुलमैन-मूलधन तथा अन्य कई प्रतिभूतियां बेच दीं और मिल-निर्माण का काम केवल थोड़े समय ही रुका रहा। तब से इस्पात तथा लोहे पर पूर्ण रूप से केन्द्रित रहने के लिए उसने दूसरे कारोबारों के अपने हितों को एक-एक करके बेच दिया। उसने कहा, "मैंने निश्चय किया कि बुद्धिमत्ता इसमें ही है कि मैं अपना सब-कुछ एक ही दांव पर लगा दूं और फिर इसकी देख-भाल करूं।"

परन्तु वह एक रेलपथ के विनियोग में पहले ही फंस चुका था जो अब उसे कुछ कष्ट दे रहा था। अपने पुरातन मित्र स्कॉट के कहने से उसने 'टैक्सास एण्ड पैसिफिक रेलरोड' के मूलधन में पच्चीस हजार डालर लगा दिए थे; स्कॉट इसका प्रवर्तक था और अब वह कम्पनी दिवालिया हो गई थी। बहुत-सा ऋण चुकाने को शेष था। और जब अमरीका में पैदा लन्दन के एक

महाजन, जुनियस एस० मोरगन ने यह कहा कि यदि कारनेगी ऋणपत्र को सकार देगा तो वह उसे नवीकृत कर देगा, तो कारनेगी ने सकारने से इंकार कर दिया।

स्कॉट ने उसकी भर्त्सना करते हुए पूछा, "उनकी सहायता न करके क्या तुम अपने पुराने मित्रों को मिटने दोगे ?"

कारनेगी ने प्रत्युत्तर में कहा, "अच्छा तो, यदि आपके दल अथवा मेरे कारोबार, मेरे भागीदारों और उनके परिवारों के मिट जाने का प्रश्न है तो मुझे उनके पक्ष में निर्णय करना होगा। स्कॉट महोदय ! आप जानते हैं, मैंने बहुत थोड़ी पूंजी से रेलपथ के निर्माण का काम आरम्भ न करने की आपसे प्रेरणा की थी, अस्थायी ऋण लेकर हज़ार मील का रेलपथ बनाने के लिए आपको निषेध किया था। परन्तु आपने मेरी बात अनसुनी कर दी। फिर, जब मैं यूरोप से लौटा तो आपने मुझे बताया कि आपने ढाई लाख डालर का मूलधन मेरे लिए सुरक्षित रखा है और पुराने दिनों के हेतु मैंने वह स्वीकार कर लिया। मेरा अभी तक यह विश्वास है कि टैक्सास एण्ड पैसिफिक रेल-रोड अन्त में धनोपार्जन करेगी, परन्तु मैं उस पत्रक को प्रमाणित नहीं कर सकता। इसको प्रमाणित करने का अर्थ होगा मिलों में लगाए धन तथा अपने भागीदारों की सुरक्षा को संकट में डालना; और मुझे यह नहीं करना चाहिए।"

यह निर्णय करना बड़ी कठोरता थी, यद्यपि उसने वह बिना किसी हिच-किचाहट के ही किया। आज तक जितनी भी आर्थिक कठिनाइयांउ से सहनी पड़ीं, उनमें इतना कष्ट किसीमें भी नहीं हुआ था; क्योंकि स्कॉट की मित्रता फिर वैसी कभी नहीं रही। परन्तु जब संकट ने आक्रमण किया तो कारनेगी का निर्णय ठीक प्रमाणित हुआ। सब जानते थे कि वह स्कॉट के साथ टैक्सास एण्ड पैसिफिक में फंसा हुआ है और कारनेगी कम्पनियों की वित्तीय संस्था, 'एक्सचेंज बैंक ऑव पिट्सबर्ग' को भारी भय हुआ कि कहीं कारनेगी ने टैक्सास एण्ड पैसिफिक के कई पत्रकों को प्रमाणित किया हुआ हो तो इसके पतन के साथ वह भी खिच जाएगा जिससे पिट्सबर्ग-स्थित उसकी कम्पनियां संकट में पड़ जाएंगी। क्योंकि एक्सचेंज बैंक से कारनेगी-कम्पनियों ने पर्याप्त धन बन्धक-पत्रों पर उधार लिया हुआ था इसलिए बैंक के संचालकों ने कारनेगी को तत्काल अपने सम्मुख उपस्थित होने का आदेश दिया और वह इसके उत्तर

में न्यूयार्क से भागा गया।

कठोराकृति पटल (वोर्ड) के सम्मुख उपस्थित होकर उसने शान्ति से बताया, "यह सच है कि मैं टैक्सास एण्ड पैसिफिक के ढाई लाख डालर के मूलधन का स्वामी हूं, परन्तु मैं इस सबको अपने नकद धन से चुकता कर चुका हूं और मैंने उनके किसी ऋणपत्रक को प्रमाणित नहीं किया है।"

उनको इस कथन पर बड़ी कठिनता से विश्वास हुआ।

उसने दृढ़ता से कहा, "उनके एक डालर के पत्रक पर भी मेरा नाम नहीं है।" उसने आगे कहा और जीवन-भर उसकी यही सम्मति रही। "ऐसा करना सट्टा करना होता और मैं सट्टे को व्यापार-जगत् का सबसे बड़ा अभिशाप मानता हूं। 'स्टाक एक्सचेंज' जुआघर से शायद ही कुछ अथवा बिलकुल भी अच्छा नहीं है। केवल-मात्र उन्हीं ऋणों का मुझपर संयुक्त उत्तरदायित्व है जो आपने हमारी स्थानीय कम्पनियों को हमारे उपकरणों की वृद्धि के लिए दिए हुए हैं और मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि उनकी सुरक्षा के लिए जो डालर तथा सम्पत्ति का टुकड़ा-टुकड़ा मेरे पास है वह आपके सम्मुख रख दूं कि जिससे आपको विश्वास हो जाए कि ऋणपूर्ति के लिए वे पर्याप्त हैं।"

बैंक के अध्यक्ष ने बीच में टोकते हुए कहा, "ओहो! हमें उन ऋणों की रचमात्र भी चिन्ता नहीं है, कारनेगी! चिन्ता का विषय तो केवल यह टैक्सास एण्ड पैसिफिक का मामला है—हमने सुना था कि आप उनके ऋणपत्रकों को प्रमाणित कर रहे हैं।"

कारनेगी बोला, "आप मुझे कभी सट्टे में फंसा हुआ न पाएंगे। आप मुझे कभी वाल स्ट्रीट में न देखेंगे और प्रमाणित करने के सम्बन्ध में मैंने यह पद्धति रखी है कि मैं कभी किसी पत्रक पर तब तक हस्ताक्षर नहीं करता जब तक कि मैं यह न देख लूं कि देय दिनांक पर मैं इसका भुगतान कर सकूंगा और यदि उस समय न कर सकूं तो इसको पूरा करने योग्य सम्पत्ति मेरे पास है या नहीं। अपने एक पश्चिमी मित्र के शब्दों में, मैं पार उतरने योग्य जल से अधिक गहरे जल में कभी घुसता ही नहीं।"

उस सम्मेलन का फल यह हुआ कि व्यापारिक तथा वित्तीय जगत् में कारनेगी का प्रभूत आदर हुआ। वह अन्धाधुन्ध दुःसाहसिक तो था ही नहीं,

पर उस आर्थिक विपत्ति में एक भी खरौंच न खानेवाला भी वही अकेला बड़ा उद्योगपति था। उसने अपनी इस्पात कम्पनी के उन भागीदारों के भी हिस्से ले लिए जो कमी में फंस गए थे तथा जिन्हें धन की आवश्यकता थी। और जब लोहे तथा इस्पात का सारा कारोबार प्रायः ठप्प पड़ा था तो निष्क्रियता के इस अन्तर में भी, ब्रैडोक में एडगर टॉमसन मिल का निर्माण चालू रहा। कारनेगी एक अन्य अनुभूत तथ्य को भी व्यवहार में ला रहा था—वह यह कि यदि धन हो तो निर्माण मन्दी के दिनों में करना चाहिए; उस समय जबकि सब सामान सस्ता होता है; और फिर समृद्धि के दिन लौटने पर जब व्यापार आरम्भ किया जाएगा तो उसमें अवश्य लाभ होता है। निर्माण के लिए अच्छे दिनों की प्रतीक्षा करनेवालों को सामान के दाम बढ़े हुए देने पड़ते हैं; इसलिए उनका कारखाना अधिक लागत का तथा कम लाभ देनेवाला रहता है।

यह कारनेगी की दूरदर्शिता का परिणाम था कि जब १८७५ में एडगर टॉमसन मिल ने काम करना आरम्भ किया तो मिल पटरियों के दूसरे निर्माताओं से कम मूल्य पर बिक्री कर सकी और जबकि दूसरे कारखाने ठप्प पड़े थे, इसके पास बड़े-बड़े आदेश थे। कारखाने की सफलता और अधिक तब निश्चित हो गई जबकि कारनेगी ने अमेरिका के सर्वोत्तम इस्पात-निर्माता कैप्टेन 'बिल' जोन्स की सेवाएं प्राप्त कर लीं; कैप्टेन बिल वेल्स में उत्पन्न हुआ था तथा गृह-युद्ध का अनुभवी वृद्ध था; उसने एक प्रतिद्विन्द्वी संस्था को इसलिए छोड़ दिया था कि वहां उसकी योग्यता का आदर नहीं हुआ था। कारनेगी की सफलता का एक दूसरा रहस्य व्यक्तियों की अपूर्व परख कर लेने के उसके गुण में निहित प्रतीत होता है। एक प्रमुख निर्माता ने एक बार उसके विषय में कहा था, "किसी व्यक्ति को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर इस प्रकार प्रतिष्ठित करने में कि अधिक से अधिक सफलता मिले, वह मेरे जाने-पहचाने व्यक्तियों में सबसे अधिक योग्य था।" उसने बताया मैं जानता हूं कि कारनेगी ने एक ऐसे व्यक्ति को जिसको कि दूसरे सर्वथा तुच्छ अथवा नगण्य समझते थे, एक महत्त्वपूर्ण पद दे दिया, "और वह मेल ताले में अगंनियों की भांति ठीक बैठा। कुछ पदों के लिए व्यक्तियों के चुनाव के सम्बन्ध में तो, मेरी सम्मति में, उसके बराबर भी कोई नहीं था।"

कारनेगी ने साफ-साफ बता दिया था, "ग्राविष्कारक, रसायन-विशेषज्ञ, ग्रन्वेषक ग्रथवा यान्त्रिक गिना जाने का दावा तो मैं बिलकुल नहीं कर सकता।" वह केवल इतना जानता था कि सही व्यक्ति कैसे मिलते हैं ग्रौर उनसे सर्वोत्तम काम कैसे लिया जाता है। "मस्तिष्क ग्रथवा हाथ से काम का विशेष महत्त्व नहीं है," उसने बताया, "महत्त्व है हृदय से काम करने का। मूलतया योग्य व्यक्ति के हृदय को पकड़ो ग्रौर उसपर ग्रधिकार रखो तभी उसका मस्तिष्क शक्ति-भर काम में लगा रह सकता है।"

बन्धु डौड की हार्दिक श्रद्धा तो उसे प्राप्त थी ही; यह एक ग्रन्य ग्रनिवार्य व्यक्ति था जिसको कि १८७० में संस्था में सम्मिलित किया गया। उसकी इस्पात कम्पनी ने भी लोहे तथा पुल कम्पनियों की भांति ग्रपने उपयोग के लिए कोयले की खानें ले ली थीं। श्री कोलमैन को देर से उनकी कोयले की खानों में हो रहे कीट-ग्रपव्यय की चिन्ता थी ग्रौर एक बार जब वे इंग्लैंड गए थे तो वहां जार्ज लॉडर ने ग्रपनी ग्राविष्कृत एक प्रक्रिया दिखाई थी कि जिसके द्वारा इस कीट को धोकर कोक बनाया जा सकता था। कोलमैन सोत्साह घर लौटा। नैग ने लिखा, "डौड ग्रब तो तुम्हें यहां ग्राना ही होगा ग्रौर हमें ग्रपनी वह प्रक्रिया दिखानी होगी।" वह ग्राया ग्रौर उसने ग्रमेरिका में कोयला धोने का सर्वप्रथम कारखाना स्थापित किया—जिससे कम्पनियों को भारी बचत हुई। भागीदारों ने ग्रापस में कहा, "हमें इस व्यक्ति को इंग्लैंड वापस नहीं जाने देना चाहिए।" इस प्रकार लॉडर ठहर गया, कारनेगी-उद्योगों में भागीदार बना ग्रौर सम्पन्न ग्रवस्था में मरा।

डन्फर्मलिन ने इस्पात की सेना को बहुत-से रंगरूट दिए। एक दिन जब कारनेगी कारखाने में सैर कर रहा था तो ग्रधीक्षक ने कारनेगी से पूछा, "कारनेगी महोदय, क्या ग्रापको ज्ञात है कि ग्रापका एक सम्बन्धी यहां काम कर रहा है?"

"नहीं तो।" साश्चर्य उत्तर मिला।

"एक है; वह एक सधा हुग्रा यान्त्रिक भी है। ग्रभी कुछ समय पहले मुझे भी यह ज्ञात नहीं था कि वह ग्रापका सम्बन्धी है।"

"क्या मैं उससे बात कर लूं?"

"ग्रवश्य," ग्रधीक्षक ने उन्हें एक यन्त्र पर काम कर रहे युवक तक पहुंचा

दिया। "यह है वही," उसने कहा। "टॉम ये कारनेगी महोदय हैं।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?" धनपति ने पूछा।

"टामस मौरिसन, राबर्ट का पुत्र," उत्तर मिला।

"तो क्या ! मेरा बन्धु बोब ?"

"जी हां !"

"तुम यहां कैसे पहुंचे ?"

"मैंने सोचा हम स्वयं अपनी उन्नति कर सकते हैं।"

"हम !" कारनेगी ने दुहराकर पूछा, "तुम्हारे साथ और कौन हैं ?"

"मेरी पत्नी।"

मालिक ने उसे उत्सुकता से देखा और पूछा, "तुम पहले अपने सम्बन्धी के समीप क्यों नहीं आए ? मैं तुम्हें परिचय-पत्र दे सकता था तथा सम्भवतः तुम्हें इससे अच्छा प्रारम्भिक (वेतन अथवा पद) दिलवा देता।"

मौरिसन ने प्रवर व्यक्ति की आंखों में अपनी आंख डालते हुए उत्तर दिया, "अवसर मिल जाने पर तो मुझे सहायता की आवश्यकता ही अनुभव नहीं हुई।"

इस घटना का वर्णन करते हुए कारनेगी ने सहर्ष कहा था, "यह थी सच्चे मौरिसन की उक्ति ! जिसे लूसिफर की भांति आत्मनिर्भर तथा स्वतन्त्र रहना सिखाया गया था।"

अपने शक्तिशाली बन्धु के किसी भी 'प्रभाव' के बिना ही टामस कुछ वर्षों में ड्यूकेन के नये कारखाने का अधीक्षक बन गया; भागीदार बना और अन्त में वह भी लखपति बना।

कारनेगी ने स्काटलैंड के उच्च प्रदेश का स्मरण दिलानेवाले एक प्रदेश में पेनसिलवेनिया स्थित क्रेसन के समीप ऐलेगेनी पर्वत-माला की चोटी पर स्थित एक कुटी खरीदी। और बसन्त का प्रथम चिह्न प्रकट होते ही, वह और उसकी माता वहां दौड़ जाते। न्यूयार्क अथवा पिट्सबर्ग की कई अल्पकालीन यात्राएं करके, एकाध महीने पश्चात् वह स्काटलैंड अथवा यूरोप में लम्बा अवकाश मनाने चला जाता था। कई वर्ष तक उसकी माता विदेश-यात्रा में उसके साथ रहीं, यद्यपि जब वे सत्तर वर्ष के समीप पहुंची तो कभी-कभी ऐलेगेनी कुटिया में रह जाती थीं। ग्रीष्म ऋतु के अन्त में, लौटनेवाला यात्री अथवा लौटनेवाले दोनों यात्री, फिर क्रेसन पहुंच जाते और पतझड़ की समाप्ति

तक वहां रहते।

कभी-कभी जब कारनेगी घोड़े पर क्रेसन जाता तो एक लम्बा सुन्दर किशोर उसके घोड़े को तब तक थाम रखने को प्रस्तुत रहता जब तक कि कारनेगी किसी दुकान में रहता। और जब इस्पात-पति चलने लगता तो यह किशोर डाइम (दस सेंट) अथवा चौथाई डालर (पच्चीस सेंट) का सिक्का, जो भी मिलता, भेंट में ले लेता और सीटी बजाता चला जाता। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में यह बालक भाड़े की उस गाड़ी का चालक था जो क्रेसन तथा उससे कुछ मील दूर पर स्थित उसके गृह-नगर लौरेटो के मध्य चला करती थी। कारनेगी को तब इसका नाम ज्ञात नहीं था, परन्तु समय आया कि वह उसे खूब जान गया।

: ९ :

एक स्मरणीय वर्ष

सन् १८८१ का वर्ष एण्ड्रयू कारनेगी के जीवन में विशिष्ट घटनाओं से भरा रहा। उस वर्ष के प्रारम्भिक दिनों में पचास लाख डालर की पूंजी से—जिसमें एण्ड्रयू आधी से कुछ अधिक का स्वामी था—'कारनेगी ब्रदर्स एण्ड कम्पनी' संगठित हुई तो उसका वह वचन पूरा हो गया जो उसने किशोरावस्था में अपने भाई को दिया था। यह कोई साधारण निगम नहीं था; इसके स्वामी मूलधन के स्वामी नहीं अपितु 'साथी' थे। दल के बाहर किसी व्यक्ति को इसका मूलधन तभी बेचा जा सकता था जबकि एण्ड्रयू कारनेगी ही किसी नये तथा उत्कर्षोन्मुख किशोर को लेने का निर्णय करता। इसका अभिप्राय यह था कि इसका कोई भी मूलधन कभी उस बाजार में नहीं आना था जिस बाजार—'स्टॉक एक्सचेञ्ज'—से कारनेगी को अत्यन्त चिढ़ थी।

इस निगम में 'एडगर टामसन स्टील वर्क्स', 'यूनियन आयरन मिल्स,' ल्यूसी फर्नेसेज (जोकि संख्या में अब अनेक थीं) कोयले की खानें तथा कोक भट्टियां—सब सम्मिलित कर लिए गए। कारनेगी इस्पात से न केवल देश के प्रमुख रेल-पथों की हजारों मील लम्बी पटरियां ही बिछाई गईं, अपितु न्यूयार्क के उत्तुंग रेलपथों तथा बहुत-से पुलों में भी उसका प्रयोग हुआ—जिनमें एक ब्रुक-लिन ब्रिज भी था जोकि न्यूयार्क में ईस्ट नदी पर पहला बड़ा पुल था और उस समय की अद्भुत वस्तुओं में गिना जाता था।

और यही वह वर्ष था जबकि कारनेगी ने पहला सार्वजनिक पुस्तकालय, सर्वथा उचित रूप से डन्फर्मलिन को भेंट किया। संसार में कोई दूसरा नगर ऐसी भेंट का इससे अधिक अथवा इतना भी आदर न करता।

भवन के नक्शे के सम्बन्ध में जब वह शिल्पी से परामर्श कर रहा था तो शिल्पी ने कहा, "कारनेगी महोदय! मुझे आपके वंश-चिह्न का चित्र चाहिए; भवन में इसे कहीं न कहीं अवश्य स्थापित करना होगा।" जो अमेरिकन

सम्पत्ति प्राप्त कर लेते थे परन्तु उनका वंश-क्रमागत चिह्न नहीं होता था वे प्रायः किसी वंशावली-विशेषज्ञ को अपने चिह्न के निर्माण के लिए नियुक्त कर लेते थे। शिल्पी ने इसी कल्पना से यह बात कही थी कि कारनेगी ने भी ऐसा ही किया होगा। परन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं था।

"भला हो तुम्हारा, शिल्पी ! मेरा कोई वंश-चिह्न नहीं है !" प्रजातन्त्र में साग्रह श्रद्धालु ने प्रत्युत्तर दिया। और पीछे सुझाव दिया, "यदि तुम्हें किसी प्रकार का चिह्न अवश्य रखना ही है तो द्वार पर चारों ओर किरणें बिखरते हुए उदीयमान भास्कर और 'प्रकाश हो' (ज्योतिर्गमय) ये शब्द क्यों न अंकित कर दिए जाएं ?" इसलिए यही किया गया।

कारनेगी ने इंग्लैंड तथा स्कॉटलैंड में दक्षिण से उत्तर तक घोड़ागाड़ी द्वारा यात्रा करने की योजना बनाई—यह यात्रा डन्फर्मलिन में समाप्त होनी थी जहां कि पुस्तकालय-भवन का शिलान्यास करना था। इस प्रमुदित दल में संग-संग महासमुद्र को पार करनेवाले, उसकी माता तथा स्वयं कारनेगी समेत, ग्यारह व्यक्ति सम्मिलित थे। दूसरे वे साथी तथा मित्र थे—कुछ पत्नियों समेत—जो धन्धे से किसी प्रकार अवकाश निकाल सके। उत्तर की ओर की यात्रा के समय दल में सबसे अधिक सजीव व्यक्ति सम्भवतः सत्तर वर्षीया मार्गरेट कारनेगी थीं और वे चार घोड़ों के सञ्चालक के समीप ऊंचे स्थान पर बैठी थीं। किसी नाले को पार करते समय, उन्होंने अनेक बार अपने जूते व मोज़े उतारकर जलावगाहन किया। एक बार तो उसने एक शाद्वल स्थान पर अपना घाघरा कसा और हाईलैंड का उन्मुक्त नृत्य किया। स्पष्ट ही वे जानती थीं कि स्कॉटलैंड की उनकी यह अन्तिम यात्रा थी और वे उसका अधिक से अधिक लाभ उठा रही थीं।

जिस समय दल ने 'फर्थ आफ फोर्थ' नदी को नौका से पार किया (यहां लॉडर भी दल में आ मिले) तो पता लगा कि सारा देहात डन्फर्मलिन में एकत्र हो रहा है। प्राचीन नगर तक पहुंचने पर भीड़ बढ़ गई। उन्होंने पुरातन राजमहल पर स्कॉटलैण्ड, इंगलैंड तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के झंडे साथ-साथ फहराते देखे। नगर की सीमा पर एक विजय-तोरण बना दिया गया था और यहां प्रोवोस्ट, नगर-परिषद् तथा मजिस्ट्रेट अपने-अपने पद-वेश में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अभिनन्दन-पत्र पढ़ा—किसी पदाधिकारी ने

नहीं, अपितु सर्वाधिक संगत व्यक्ति, एक बुनकर ने—और पढ़ा भी खूब ! इसके पश्चात् एक मील लम्बा जुलूस—जिसमें बाजेवाले, वस्त्र मिलों में काम करनेवाली हजारों महिलाओं व कन्याओं समेत मज़दूरों के दल व संघ, ब्रिटिश तथा अमेरिकन ध्वज हाथ में लिए सम्मिलित थे—विकासमान नगर की उल्लास से सजाई गई गलियों में चल निकला और वह 'कारनेगी तुम्हारा स्वागत हो' अंकित ध्वजों एवं तोरणों के नीचे से होकर गया। वे दो स्थानों पर रुके—प्रथम तो उस प्रस्तर-कुटी पर जहां कि कारनेगी ने जन्म लिया था। और दूसरी बार उस दूसरे छोटे-से मकान पर जहां कि उसकी माता अपनी 'मिठाई की दूकान' करती थी। इस दूसरे पड़ाव पर छाई निस्तब्धता के समय, मठ-घंटे के मधुर निनाद ने इस्पात-राजा की आंखों में आंसू ला दिए।

खाने के पश्चात् पुरातन दर्शनीय स्थानों एवं विशेष स्थानों का चक्कर लगा और तब शिलान्यास-समारोह हुआ, इसमें प्रमुख भाषण रोज़बरी के अर्ल का हुआ। संरक्षकों को आशा थी कि शिलान्यास के प्रतीकात्मक उपचार को कारनेगी महोदय स्वय सम्पन्न करेंगे, परन्तु उन्होंने प्रार्थना की कि यह सम्मान उनकी माता को दिया जाए—माता के प्रति उनकी सम्मान-भावना प्रतिवर्ष बढ़ती प्रतीत हो रही थी। वह कभी-कभी माता के मस्तिष्क को अपनी उंगली से छूकर कहते, "यह है वह स्थान जहां से कि टोम तथा मैंने बुद्धि ग्रहण की है।" कारनेगी की आशा के सर्वथा अनुरूप, काले रेशमी वस्त्रों और श्वेत केशराशि के मुकुट के कारण सर्वथा विशिष्ट प्रतीयमान उसकी माता ने पूर्ण आत्मसंयम एवं शोभनीय ढंग से रीति पूरी की। एक रजत-करणी से मसाला फैलाकर उन्होंने तीन बार हत्थी को शिला पर टकराया और विशाल सभा में सबको सुनाई पड़े स्पष्ट शब्दों में कहा, "मैं इस स्मारक-शिला के समुचित न्यास की घोषणा करती हूं—इस शुभ कार्य में ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो।"

उसके पुत्र ने, जो अपने-आपको सदा एक लेखक समझता रहा, सन् १८८२ में प्रकाशित 'एन अमेरिकन फोर-इन-हैंड इन ब्रिटेन' नामक पुस्तक में इस घोड़ागाड़ी-यात्रा का वर्णन किया है।

उस १८८१ वर्ष ने एक प्रतिद्वन्द्वी को प्रकट होते देखा—मौनोंगेहीले नदी

के उस पार एडगर टामसन वर्क्स से कुछ दूर नीचे की ओर होमस्टेड में पिट्सवर्ग के प्रवर्त्तकों द्वारा एक नया इस्पात-कारखाना बनते देखा। परन्तु इस नये कारखाने को श्रमिक संकटों तथा कारोबारी ढील का शाप लगा और इस कारण आदेशों का परिमाण कम हो गया। फिर संचालक पस्पर झगड़ने लगे और अन्त में छोड़ देने के लिए सहमत हो गए। एक दूत कारनेगी के पास पहुंचा—वे घटनाचक्र को देखते आ रहे थे और इसी परिणाम की आशा में थे—और उनसे पूछा कि क्या वे होमस्टेड को ले सकेंगे? कारनेगी ने माना कि वह तैयार है। अगली बार एक शिष्ट-मण्डल ने उनसे कार्यालय में भेंट की; इस मण्डल के सदस्य सहमे हुए थे तथा इनको आशंका थी कि इन्हें परम्परागत स्कॉच रीति से दबाया जायगा।

प्रतिनिधि-मण्डल ने पूछा, "आपकी क्या-क्या शर्तें हैं?"

कारनेगी ने उत्तर दिया, "कारखाने में न्यस्त आपके एक-एक डालर के स्थान पर हम अपने डालर लगाएंगे, आपके मूलधन का मूल्य कारनेगी निगम के मूलधन में अथवा आप चाहें तो नकद धन में चुकता किया जाएगा।"

कई क्षण पश्चात् उनके सांस में सांस आया। तब वे अपने हिस्सों के बदले नकद धन लेने की बात कहने लगे। उन्होंने सोचने के लिए एक क्षण-भर भी नहीं मांगा; इस्पात के कारोबार से वे ऊब चुके थे—एक को छोड़कर सब; वह एक था श्री सिंगर जिसने पुनर्विचार के लिए चौबीस घंटे का समय मांगा। अगले दिन वह फिर आए और पूछने लगे, "क्या सचमुच आप वही चाहते हैं जो आपने कल कहा था? क्या आप मुझे भागीदार बना लेंगे?"

"निस्संदेह मैं आपको भागीदार बनाऊंगा," हंसकर अपना हाथ प्रस्तुत करते हुए कारनेगी ने उत्तर दिया, "हाथ बढ़ाओ तो, भागीदार!"

श्री सिंगर को अपने निर्णय पर कभी पश्चात्ताप नहीं करना पड़ा, यद्यपि उनके पहले भागीदार अपनी अदूरदर्शिता पर सदा पछताते रहे। इस्पात तब अपना समुचित स्थान ग्रहण करने ही लगा था। पटरियों के साथ-साथ अब इंजिन, गाड़ियां, पुल, यन्त्र, बायलर्स, पाइप, केबल, कंटीले तार—तथा सबसे बढ़कर—वह भयावह नूतन वस्तु—गगनचुम्बी भवन बनने लगे थे।

१८८१ में एक अन्य व्यक्ति भी सामने आया, पश्चिमी पेनसिलवेनिया से आए इस युवक का नाम हेनरी क्ले फ्रिक था—जिसने बड़ी बुद्धिमत्ता से कोक-

निर्माण को अपना लक्ष्य चुना था। १८८१ तक कोनैल्सविल प्रदेश के अस्सी प्रतिशत कोक-कारोबार पर उसका नियन्त्रण स्थापित हो गया था; इस क्षेत्र में संसार-भर का सर्वोत्तम कोक उपलब्ध होता है। परन्तु उसपर ऋण का भारी भार भी हो गया था। तथापि उसने एक पिट्सबर्ग कन्या से विवाह करने को भी वही वर्ष चुना। कुछ समय से अपना भागीदार बनाने के लिए कारनेगी उसपर दृष्टि लगाए हुए था। इतने योग्य व्यक्ति को संस्था से बाहर नहीं छोड़ा जा सकता था। दोनों मिले और सौदा तय हो गया, और जब फ्रिक तथा उसकी वहू मधुमास मनाने न्यूयार्क आए तो कारनेगी ने उन्हें भोजन पर बुलाया। उसकी माता एकमात्र अन्य अतिथि थीं। और भोजन के उपरान्त आतिथेय कारनेगी ने उठकर अपने अच्छे मित्रों की एवं श्रीमती फ्रिक्स के स्वास्थ्य की कामना की और कहा, "श्री फ्रिक तथा मैं भागीदार बननेवाले हैं।"

यह बात उसने अपनी माता को सुनाने के लिए कही थी; क्योंकि यहां वे ही अकेली थीं कि जिन्हें यह रहस्य ज्ञात नहीं था।

उन्होंने तत्काल कहा, "श्री फ्रिक के लिए तो बहुत अच्छी बात है; परन्तु इससे हमें क्या लाभ होगा?"

पीछे शीघ्र ही १ जनवरी, १८८२ को एच० सी० फ्रिक कोक कम्पनी संगठित हुई, इसका १० प्रतिशत से अधिक मूलधन कारनेगी-समूह ने लिया। तथापि अन्त में यह इतना बढ़ा कि कारनेगी-समूह का भाग प्रधान हो गया, यद्यपि समवाय की नीति अब भी फ्रिक के एकाधिपत्य में रही—साथ-साथ वह कारनेगी-इस्पात में अपना भाग बढ़ाता रहा।

कप्तान बिल जोन्स ने होमस्टेड का कारखाना संभाल लिया—वह अब इस्पात-संसार में इतना प्रसिद्ध व्यक्ति हो गया था कि उसे एक बार लन्दन आकर 'ब्रिटिश आयरन एण्ड स्टील इन्स्टीट्यूट' के सम्मुख निबन्ध पढ़ने का निमन्त्रण मिला। कारनेगी जोन्स को अपने प्रिय ढंग से—लाभांश से चुकता कर देने की शर्त पर कम्पनी का कुछ मूलधन देकर—भागीदार बनाने का प्रयत्न कर चुका था। परन्तु जोन्स ने इसका इस आधार पर विरोध किया कि कम्पनी का एक भाग बन जाने पर कर्मचारियों में उसकी स्थिति को हानि पहुंचेगी।

उसने कहा, "वे सोचेंगे इसे घमण्ड हो गया है।"

कारनेगी ने पूछा, "तो फिर आप क्या कहते हैं ? आप हमारे लिए जो कुछ कर रहे हैं उसका किसी भी प्रकार अभ्युपगम तो होना ही चाहिए।"

"अच्छा, तो आप मुझे बहुत अधिक वेतन भी तो दे सकते हैं।" जोन्स ने उत्तर दिया।

"अच्छा, तो यही सही !" मुखिया ने डेस्क पर हाथ मारकर कहा। "आज से तुम्हें उतना ही वेतन मिलेगा जितना कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति को मिलता है।"—यह उस समय पचास हज़ार डालर वार्षिक था।

"यह हुई कुछ बात ! एंडी," कहकर कप्तान बिल ने स्वीकृति दी। कारनेगी एक ऐसा मुखिया था, चाहे सदिच्छा से ही सही, तीखी बातें कहता रहता और प्रगति एवं स्थिति का विवरण प्राय. मांगता रहता था। जब कभी उसे यह सूचना मिलती कि 'हमने गत सप्ताह इस्पात बनाने के सब रिकार्ड तोड़ डाले' तो वह बधाई देता और कहता, "प्रति सप्ताह ऐसा ही क्यों नहीं करते ?" अथवा वह लागत के आंकड़े मंगाता। जब उसे बताया जाता कि '८ संख्या की भट्ठी ने आज सारे रिकार्ड मात कर दिए' तो वह पूछता कि शेष १० भट्ठियां क्या कर रही हैं ? बिल जोन्स कभी-कभी इस सूची-भेदन से तिलमिला उठता था और विस्तृत विवरण तथा लागत-पत्र तैयार करने से उसे चिढ़ थी। वह एक महान इस्पात-निर्माता था, परन्तु आंकड़ों से ऊबता था। अपनी ग्रीष्मकालीन विदेश-यात्राओं के विषय में चर्चा करते हुए एक बार कारनेगी ने जोन्स से कहा, "चाहे मैं कितना ही थका हुआ क्यों न होऊं, जब स्टीमर पर पहुंचकर आध घण्टे में न्यू जरसी की पहाड़ियां क्षितिज में अस्त होने लगती हैं तो मेरी सब चिन्ताएं तथा थकावट मुझसे दूर हो जाती हैं; बिल, तुम क्या जानो कि कितना चैन अनुभव होता है मुझे।"

"और आपको भी क्या मालूम कि बचे हुए हम सबको भी कितना चैन मिलता है, एण्डी," मुंहफट कप्तान जोन्स ने प्रत्युत्तर दिया।

एक दिन जबकि उसे विवरण लेकर मुखिया के सम्मुख कार्यालय में उपस्थित होना था, उसके स्थान पर एक मुस्कराता, गोल चेहरेवाला छह-फुटा व्यक्ति आया और उसने बताया कि कप्तान ने उसे भेजा है। उसने संक्षिप्त सारिणी-रूप विवरण कारनेगी को थमा दिया और कारनेगी ने कुछ मिनट

तक चुपचाप विवरण का अध्ययन किया और तब ऊपर देखा।

कारनेगी ने कहा, "कप्तान का कहना है कि तुम कारखाने की प्रत्येक बात जानते हो।"

"जी हां श्रीमान, मैं बहुत कुछ जानता हूं।" युवक ने उत्तर दिया और वही चमकती मुस्कराहट फूट निकली।

"और तुम्हारा नाम है…" धनपति ने कप्तान की विज्ञप्ति पर दृष्टि डाली।

"चार्ल्स एम० श्वाब।"

"अच्छा, तो चार्ली," मुखिया ने कहा, "अब मुझे यह भी बताओ कि हमारी क्या प्रगति है?" वह विवरण के विस्तार को जानने के लिए अपनी कुर्सी में पीछे की ओर लुढ़क गया। और उसे विवरण का विस्तार इतना पूर्ण मिला कि वह चकित रह गया। यह युवक कारखाने के विषय में सब कुछ जानता प्रतीत होता था। कारनेगी ने उसपर कोड़ियों प्रश्नों की बौछार कर डाली और उसने सबका तत्काल एवं पूरा-पूरा उत्तर दिया। इस बीच में कारनेगी को उसकी मुखाकृति कुछ परिचित-सी जान पड़ी।

"क्या हम कभी पहले भी मिले हैं?" कारनेगी ने पूछा।

"जी हां श्रीमन्, कभी क्रेसन में मैं आपके घोड़े को थामा करता था।"

तभी और वहीं एक नया भागीदार बन रहा था।

तरुण श्वाब अठारह वर्ष की अवस्था में इस्पात के प्रलोभन से खिचकर ब्रैडक पहुंच गया था और वहां उसे एक करयाने की दुकान में नौकरी मिल गई थी। इस दुकान पर वह कप्तान जोन्स को नियमित रूप से सिगार बेचा करता था। एक दिन कप्तान से तरुण ने पूछा, "श्रीमन्! क्या आप मुझे अपनी मिल में कोई नौकरी नहीं दे सकते?"

जोन्स इस तरुण को पहले से ही पसन्द करने लगा था। उसने उत्तर दिया, "हां, हां चार्ली; मैं दे सकता हूं।"

और वस्तुतः बात बड़ी सरल थी। और वह चार्ली से जितना परिचित होता गया उतना ही उसे चाहता और मानता गया। श्वाब की बुद्धि प्रखर थी, श्रमशक्ति तथा कार्य के प्रति लगन उसमें अपरिमेय थी और उसका व्यक्तित्व सर्वाधिक आकर्षक था। उसने तत्काल इस्पात-निर्माण की रसायन

का अध्ययन आरम्भ कर दिया और शीघ्र ही, जैसाकि कप्तान बिल ने बताया था, वह कारखाने के सम्बन्ध में सब कुछ जान गया। वह ठीक उस ढंग का था कि एण्ड्र्यू को प्रिय होता। उस पहली भेंट के समय से ही वह इस्पात-सम्राट के लड़कों में से एक 'लड़का' बन गया और अन्त में उनमें भी सबसे अधिक घनिष्ठ। जोन्स ने जिस दिन उसको पहली नौकरी दी उसके छः महीने के भीतर ही वह ब्रैंडक में सहायक व्यवस्थापक हो गया और उसने यह पद निश्चय ही योग्यता के आधार पर पाया। पांच वर्ष पश्चात् जब कप्तान जोन्स कारखाने में एक घातक दुर्घटना के शिकार हो गए तो चार्ली होमस्टेड मिल का अधीक्षक था; वह मिल उसके अधीन उत्पादन के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण रिकार्ड स्थापित कर रही थी।

कारनेगी ने कई वर्ष पश्चात् कांग्रेस की एक समिति को बताया था, "श्री श्वाब प्रतिभाशाली हैं; मुझे उनके बराबर का कोई व्यक्ति कभी नहीं मिला।"

श्वाब को भी वैसे ही हिस्सेदार बना लिया गया जैसेकि आगामी वर्षों में अनेक दूसरे तरुणों को भागीदार बनाया गया। कारनेगी-निगम के मूल-धन का एक भाग उसको मूल्य के मूल्य पर बेच दिया गया—इसको बताने की तो आवश्यकता ही नहीं कि यदि स्टॉक-एक्सचेंज पर इसे कभी भेजा जाता तो न जाने क्या कुछ मिलता—और शीघ्र ही लाभांश से उसे चुकता कर दिया गया; उसके पश्चात् वह भी लाभप्रद स्थिति में आ गया। इस प्रकार चुने गए सब भागीदार सम्पन्न बन गए। कारनेगी कहा करता था कि उसके मन में तो ग्लोसेस्टर की मत्स्यग्राही-नाविक संस्था आदर्श व्यापारिक संस्था है। उस संस्था में किसीको वेतन नहीं मिलता—वे केवल लाभ को परस्पर बांट लेते हैं।

कारनेगी व्यक्तियों का सच्चा पारखी था और जिसके विषय में वह यह निर्णय कर लेता था कि वह भद्र व्यक्ति है, उसपर बहुत विश्वास करता था; चार्ली श्वाब में उसका विश्वास लगभग पूरा था। एक बार जब श्वाब ब्रैडक में अध्यक्ष था तो उसने अपने मुखिया से एक नई परिवर्तक मिल बनाने देने के लिए कहा। उसने वचन दिया कि "हम इससे इस्पात के प्रति टन पर पचास सेंट बचा लिया करेंगे।"

इस समय निगम के कोष में धन विपुल परिमाण में नहीं था, परन्तु कारनेगी ने अन्त में कहा, "बहुत अच्छा, बनाओ।"

कारखाना बन गया और एक दिन मुखिया इसके निरीक्षण के लिए गया। उसको आशा थी कि श्वाब गर्व तथा एक महान कार्य करने के वचन की पूर्ति से उछलता-कूदता व कुप्पा हुआ दीख पड़ेगा। परन्तु कारखाने में उसके साथ आगे बढ़ते कारनेगी की दृष्टि से यह बात छिपी न रही कि उत्साह का अभाव है; चार्ली केवल एक व्यावसायिक पथ-प्रदर्शक की भांति परिपाटीवश बातों का विवरण देता रहा।

अन्त में उसके मुखिया ने कहा, "चार्ली, कुछ दाल में काला है। मैं देख रहा हूं कि तुम निराश हो; मिल में कहीं कुछ गड़बड़ है; है न?"

"नहीं, कारनेगी महोदय!" उत्तर मिला। "यह ठीक वैसी ही रही जैसाकि मैंने आपसे कहा था और हमारा लागत-व्यय उतना ही घट गया है जैसाकि मैंने कहा था। परन्तु यदि मुझे इसे फिर से बनाना पड़े तो मैं इसमें एक दूसरी बात वह लाऊंगा कि जिसका आविष्कार अभी ही हुआ है; मुझे निश्चय है कि इससे प्रति टन पचास सेंट के स्थान पर एक डालर की बचत होगी।"

"अच्छा, तो इसका क्या अभिप्राय है?" कारनेगी ने पूछा, "क्या तुम इस मिल को बदल सकते हो?"

"नहीं, इसका अर्थ होगा, इसको गिराकर पुनः निर्माण करना।"

इसपर कारनेगी एक भी क्षण की हिचक के बिना कह उठा, "तब तो यही करना ठीक होगा! किसी कार्य की पूर्ति के पश्चात् उपज्ञात उपेक्षित रही हुई अथवा पश्चात् उपज्ञात वस्तु से लाभ न उठाना मूर्खता होगी। इसको गिरा दो तथा फिर से बना लो।"

कारनेगी ने यह भी नहीं पूछा कि नई खोज क्या है, यद्यपि निश्चय ही श्वाब ने उसे तुरन्त बता दिया। और पीछे से चार्ली ने कृतज्ञतापूर्वक इस बात को ध्यान में रखा कि कारनेगी ने यह नहीं कहा कि 'पहले क्यों नहीं सोचा था?' तभी तो श्वाब ने पीछे से जब अपना फोटो अपने मुखिया को भेंट किया तो उसपर अंकित था, 'मेरे प्रियतम मित्र एवं स्वामी को।'

और तो भी कारनेगी कभी-कभी अपने 'लड़के' को अपव्यय के लिए

सद्भावनापूर्वक डांट देता था। वह कहता, "चार्ली, मैं तुम्हें समझ नहीं पाया। तुम देहात में जन्मे एक निर्धन बालक हो, तो भी धन का मूल्य नहीं जानते। मिल के नये विस्तार पर इस प्रकार व्यय पर व्यय किए जाते हो कि मानो हमारे पास असीम धन मौजूद हो।" परन्तु चार्ली लौटकर तर्क करता और यह ध्यान में रखने योग्य बात है कि मुखिया ने उसको कभी उसकी प्रिय पोषित योजनाओं से नहीं हटाया।

पिछले वर्षों में श्वाब ने विनोद में एक मध्याह्नोत्तर की घटना बताई—उन दिनों की जबकि वह स्वयं न्यूयार्क में रहने लगा था, परन्तु मोटर-गाड़ियों का युग आरम्भ नहीं हुआ था। वह किसी कारोबारी विषय में सलाह लेने कारनेगी के घर गया था। श्वाब की अपनी विशिष्टता के अनुरूप उसने न हैनसम गाड़ी ली और न इक्का किया अपितु बग्घी ली और मुखिया से बात कर लौट आने तक प्रतीक्षा करने का चालक को आदेश दिया। बातचीत ने आशा से अधिक समय ले लिया और श्री कारनेगी ने अन्त में भोजन तक ठहर जाने को कहा। चार्ली बग्घी को भूल गया था; उसने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और भोजन के पश्चात् भी बातचीत चलने लगी। अन्त में सेवक ने द्वार पर आकर पूछा, "श्वाब महोदय, क्षमा करें; परन्तु क्या आप चाहते हैं कि बग्घी अभी आपकी ओर प्रतीक्षा करे?"

चार्ली का मुंह लज्जा से लाल हो गया तथा पुनः समाहित होने के प्रयास में वह घबराकर बुदबुदाने लगा। उसके प्रिय मुखिया ने एक भी शब्द नहीं कहा, वह केवल चपल परिहास की दृष्टि से उसे देखता बैठा रहा। शब्दों की आवश्यकता ही नहीं थी।

: १० :

विवाह और सम्पत्ति का सिद्धान्त

घुड़सवारी का प्रेमी कारनेगी सेंट्रल पार्क में विभिन्न युवतियों के साथ घुड़सवारी करता था—इनमें से एक, न्यूयार्क के एक थोक विक्रेता की पुत्री कुमारी ल्यूई व्हिटफील्ड उसे विशेष रुचती थी। एक-दो वर्ष तक उसके साथ रह लेने पर उसने अनुभव किया कि जीवन में पहली बार वह प्रेम करने लगा है। यह एक प्रशान्त विवाह-प्रार्थना थी; कुमारी व्हिटफील्ड ने अन्त में उसका प्रस्ताव मान लिया और वे कुछ समय तक वचनवद्ध रहे।

इधर, अपनी वार्षिक विदेश-यात्राओं में वह ग्रेट ब्रिटेन में बहुत-सी मित्रताएं और बन्धन स्थापित कर रहा था। उसके घनिष्ठ मित्रों में मैथ्यू आरनोल्ड तथा दार्शनिक हर्बर्ट स्पेन्सर, वाइकाउन्ट मोर्ले, अर्ल ऑव एलगिन, सर विलियम वेरनोन हारकोर्ट तथा लार्ड ब्राइस, ग्लैडस्टोन, रोज़बरी, बालफोर तथा कैम्पबेल-बेनर-मैन आदि कई प्रधानमन्त्री, और निश्चय ही, सब प्रमुख उद्योगपति तथा महाजन सम्मिलित थे। वह एक बार ब्रिटिश आयरन एण्ड स्टील इन्स्टीट्यूट का अध्यक्ष रहा। वह ब्रिटिश पत्रिकाओं में लेखों द्वारा कई विषयों पर अपने विचार प्रगट करता रहा। १८८६ में उसकी पुस्तक 'ट्रायम्फैण्ट डेमोक्रैसी' प्रकाशित होने पर भी, जिसमें उसने पुरातन जगत् से अमेरिका को उच्च तरह सिद्ध किया था, ब्रिटेन में भी उसकी लोकप्रियता कम न हुई। प्रमुख ब्रिटिश मित्रों के साथ चर्चा के समय वह राजतन्त्र को हटाने तथा प्रजातन्त्र की स्थापना का पक्ष लिया करता था। उसने अपने क्रान्तिकारी विचारों के प्रचार के लिए ग्रेट ब्रिटेन में कई समाचार-पत्रों को खरीदा; परन्तु उनका अंग्रेजों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा; वे उसके लिए अत्यन्त अनुदार (अपरिवर्तनवादी) सिद्ध हुए। और फिर भी वह उनका सर्वाधिक लोकप्रिय अमेरिकी था। एक-एक करके अंग्रेज, स्कॉच और आयरिश जनता ने उसे स्क्रोल या 'शोभा' के शानदार प्रमाण-पत्र एवं उचित समारोहपूर्वक 'स्वतन्त्र नागरिक' का पद प्रदान किया। सब मिलाकर उसे ऐसे उनसठ सम्मान मिले ;

किसी भी दूसरे व्यक्ति से अधिक। श्री ग्लेडस्टोन द्वितीय थे और उन्हें सत्रह ऐसे सम्मान मिले थे। इंग्लैंड में यह भी चर्चा रही कि इस अमेरिकी धनपति को पार्लियामेंट का सदस्य चुना जाय।

कुमारी व्हिटफील्ड इस सबसे भयभीत होती चली गई और विशेषतः वह उसके पार्लियामेंट का सदस्य होने के विचार से डर गई। अन्त में इस तर्क के आधार पर कि उसके इस विस्तृततर जीवन में वह उसकी बहुत कम सहायिका हो सकेगी, वह नम्रतापूर्वक वचनबद्धता से मुक्त हो गई।

१८८६ में क्रेसन पहाड़ी पर कारनेगी को मियादी बुखार ने घेर लिया और रुग्ण अवस्था में विषाद ने उसको बहुत सताया। उसकी माता तथा भाई दोनों रोगी हुए और मर गए। श्रीमती कारनेगी की मृत्यु का तो बुढ़ापे से बहुत सम्बन्ध था, परन्तु तिरेपन वर्ष की अवस्था में टौम का देहान्त एक आकस्मिक विपत् थी। जब यह समाचार एण्ड्र्यू को सुनाया गया तो वह इतना निराश हुआ कि उसको जीने या मरने की भी परवाह न रही। वह उन दो को खो बैठा था जो संसार में उसके सबसे अधिक प्यारे थे, दो बहुमूल्य परामर्शदाता और सहायक। टौम जो उसके सब उद्योगों का अध्यक्ष था, उसका दायां हाथ रहा था; उसको अब सूझता ही नहीं था कि उसके बिना उसका काम कैसे चलेगा।

कुछ समय तक तो वह गहरे विषाद में डूबा रहा। धीरे-धीरे उसके शरीर तथा आत्मा में पुनः कुछ शक्ति आई। तब वह एक अन्य प्रियतम व्यक्ति—लूई व्हिटफील्ड की रह-रहकर आनेवाली स्मृति को दूर न भगा सका। शायद अब वह नरम पड़ जाए। ज्योंही वह बैठने योग्य हुआ त्योंही उसने उसको पत्र लिखा और वाग्दान के अभिनवीकरण की प्रार्थना की। जब वह यात्रा कर सकने योग्य हुआ तो उपचार के लिए क्रेसन में बुलाए गए न्यूयार्क के प्रमुख चिकित्सक डा० एफ० एस० डेनी उसे न्यूयार्क में अपने घर ले गए, वहां चिकित्सक तथा उनकी पत्नी की देख-रेख में उसने स्वास्थ्य लाभ किया। यहां कुमारी व्हिटफील्ड ने उससे भेंट की और कहा कि उसके प्रिय-वियोग के कारण उसने पुनर्विचार किया है और अब उसका उत्तर 'हां' में है। वह उससे प्यार तो करती ही थी और उसने बताया, "मुझे लगता है कि तुम्हें अब मेरी वस्तुतः आवश्यकता है; मैं समझती हूं मैं तुम्हारी वास्तविक सहायिका (पत्नी) बन सकूंगी।"

उनका विवाह २३ अप्रैल, १८८७ के दिन हुआ और अपना मधुमास उन्होंने 'आइल ऑव वाइट' पर बिताया। वहां पर मौसा लॉडर तथा एक मोरिसन बन्धु मिलने आए। मौसा लॉडर ने स्कॉटलैंड की ग्रैम्पियन पहाड़ियों में स्थित ग्रांटों का पैतृक घर किल्ग्रैस्टन कैसल को ग्रीष्म ऋतु के लिए किराये पर दिलवा दिया। उत्तर की ओर जाते हुए मार्ग में वे एडिनबरा में ठहरे; यहां कारनेगी ने इस पुरानी राजधानी को भेंट दिए जानेवाले पुस्तकालय की आधार-शिला रखी। उसको 'नागरिक स्वतन्त्रता' प्रदान करने के समारोह में लार्ड रोजबरी प्रमुख वक्ता थे। एडिनबरा से वे डन्फर्मलिन में पहुंचे; यहां वधू नगर देखकर तथा सम्बन्धियों से भेंट कर प्रसन्न हुई तथा वे भी उससे मिल प्रमुदित हुए। अनेकों ने उसके पति से कहा, "आश्चर्य है, आन्द्रा, कि उसने तुमसे विवाह किया!" इसके प्रत्युत्तर में उसने कहा, "मुझसे अधिक आश्चर्य तुम्हें नहीं हुआ होगा।"

कोई भी विवाह कभी इससे अधिक सुखी न रहा होगा। उसके पति ने बताया कि श्रीमती कारनेगी स्वयं उससे बढ़कर स्कॉच बन गई। पुरातन नगर तथा पुर, पहाड़ियां व झीलें, फूल—सबने उसे प्रमोद दिया। विशेषकर पुंगी अथवा स्कॉटलैंड का बीन बाजा उसको बहुत भाया और उसने सुझाव दिया कि यदि प्रतिदिन प्रातः उठने तथा सोने के समय एवं भोजन के समय पुंगी-वादक हमारे अभिनन्दन के लिए रहे तो कितना सुखद होगा! उसकी वह इच्छा शीघ्र ही पूरी की गई। उनके वंश के मुखिया क्लनी मैकफरसन ने उनके लिए भारी सराहना के साथ एक वीणा-वादक भेज दिया और जब वे किल्ग्रैस्टन कैसल में प्रविष्ट हुए तो वह उनके आगे-आगे चला।

वह एक रंगीली ग्रीष्म ऋतु रही। दुर्ग में वहां अधिकतर ब्रिटिश तथा अमेरिकन अतिथियों का जमघट बना रहा; डन्फर्मलिन के सम्बन्धी भी जितने आ सके आए। ग्रीष्म ऋतु की समाप्ति पर जब कारनेगी न्यूयार्क लौटे तो पुंगी-वादक को साथ लेते आए, यद्यपि 'फिफ्टी फर्स्ट स्ट्रीट तथा फिफ्थ एवेन्यू' पर स्थित उनके पर्याप्त बड़े पर सादे घर में उसको अंचाने में उन्हें कुछ कठिनाई अवश्य अनुभव हुई होगी। तथापि जब उन्होंने मैकफरसन से क्लनी कैसल आगामी ग्रीष्म ऋतु के लिए किराये पर ले लिया तो वह अपने निजी राज्य में ही पहुंच गया और आगामी दस वर्ष तक वे इसी प्रकार इस कैसल को किराये पर लेते रहे।

कारनेगी वर्षों से भारी धन-राशि दान करता आ रहा था। १८८७ में उसने ग्लैडस्टोन से कहा था कि किसी मनुष्य की धनी अवस्था में मृत्यु उसके लिए कलंक है—यह एक ऐसा वक्तव्य था कि जिसको अन्त तक निभाना उसे कठिन प्रतीत हुआ। १८८९ में उसने 'नॉर्थ अमेरिकन रिव्यू' में दो लेख उस विषय पर लिखे जो कि उसका 'सम्पत्ति-सिद्धान्त' कहलाया। इन लेखों में उसने बताया कि सम्पत्ति को व्यय तीन प्रकार से किया जा सकता है—इसे धनी व्यक्तियों के सम्बन्धियों को उत्तराधिकार में दिया जा सकता है; उसकी मृत्यु के पश्चात् पुण्य किया जा सकता है अथवा उसके जीवन-काल में इसका दान किया जा सकता है। कारनेगी ने अन्तिम योजना पसन्द की। जब धन का जनहित में संकल्प किया जाता है कभी-कभी दाता का वास्तविक उद्देश्य अथवा इच्छा पूर्ण नहीं होती। उसका कहना था, कुछ भी हो "सम्पत्ति को कम करने का यह केवल एक साधन ही तो है, यदि कोई व्यक्ति संसार के लिए विशेष उपयोगी न रहने से पहले मृत्यु तक सन्तोष रख सके।" वह समझता था कि संकल्प-प्रथा को अनुत्साहित करने के लिए दान-संकल्पों पर अधिक भारी कर लगाना चाहिए। उसका कहना था, "जिस वस्तु को कोई मनुष्य अपने साथ नहीं ले जा सकता उसके त्याग को लेकर उस व्यक्ति का बहुत बखान करना असम्भव है······मरने पर किए त्याग (दान) की भला क्या गिनती। ऐसे धन तो उससे छीने जाते हैं, वह दान नहीं करता।"

बहुत पहले १८८१ में ही उसने पिट्सबर्ग के मेयर को लिख दिया था कि यदि नगर इसके पोषण के लिए पन्द्रह हज़ार डालर मासिक निकालता रहे तो वह एक सार्वजनिक पुस्तकालय के निमित्त पच्चीस लाख डालर प्रस्तुत करता है। आश्चर्य है कि कुछ विशिष्ट नागरिक इस योजना के विरोधी रहे। 'पिट्सबर्ग टाइम्स' ने एक सम्पादकीय में यह विचार प्रकट किया कि पुस्तकें, पत्रिकाएं और समाचारपत्र इतने सस्ते हैं कि पुस्तकालय की आवश्यकता उतनी नहीं है जितनी कि एक सार्वजनिक उद्यान की; और कारनेगी को सुझाव दिया गया कि वह नगर के लिए एक उद्यान बनवा दे। यह भी बता दिया गया कि नगर को यह अधिकार प्राप्त नहीं है कि वह इस प्रयोजन से कर लगा सके। और इस प्रकार यह मामला छः वर्ष तक, जब तक कि विधान-सभा ने पुस्तकालय-पोषण करने का कानून नहीं बना दिया, घिसटता रहा। इस बीच में ऐलेगेनी को,

जो अभी पिट्सबर्ग में सम्मिलित नहीं हुआ था, उसकी मांग पर, पुस्तकालय भेंट दिया और साथ ही पूर्ववर्णित कर्नल एण्डरसन का स्मारक भी। समर्पण-समारोह पर भाषण देने के लिए राष्ट्रपति बेंजामिन हैरिसन वाशिंगटन से पधारे थे।

अन्त में सन् १८८७ में जब पिट्सबर्ग उपहार लेने के लिए तैयार हो गया तो मानव-प्रेमी ने अनुभव किया कि नगर पिछले कुछ वर्षों में इतना बढ़ गया था कि इसको अन्वेषण एवं वितरण-सम्बन्धी सुविधाओं की पूर्व-अनुमान से कहीं अधिक आवश्यकता है, साथ ही एक कला-दीर्घिका और एक सभा-भवन की भी। इसलिए अब उसने दस लाख डालर प्रस्तुत किए, यदि नगर पोषण के लिए चालीस हज़ार डालर वार्षिक का वचन दे। उसने शीघ्र और एक लाख तथा फिर दस लाख डालर कला-दीर्घिका के लिए दिए; और इस प्रकार कारनेगी इंस्टीट्यूट बढ़ता-बढ़ता, इतना बढ़ता गया कि पच्चीस वर्षों में इसके दाता ने इसमें दो करोड़ डालर लगा दिए।

उसके दान-कार्यों की संख्या तथा परिमाण बढ़ते गए। कई वर्षों से वह नये भवनों अथवा पुस्तकालय आदि की सुविधा चाहनेवाले कालेजों को दस हज़ार से एक लाख तक की राशि में धन देता आ रहा था। कई बार तो उसने नगर के वर्तमान पुस्तकालय के विकास एवं सुधार के किए धन दिया। उदाहरण के लिए ऐटलाण्टा में 'यंगमेन्स लाइब्रेरी एसोसिएशन' तीस वर्ष से पुस्तकालय के पोषण के लिए संघर्ष करती आ रही थी, परन्तु सफल नहीं हो पा रही थी कारनेगी ने पुस्तकालय के विकास व इसके सुधार के लिए एक लाख पच्चीस हज़ार डालर प्रस्तुत किए। कार्य पूर्णतया सम्पन्न होने में कई वर्ष लग गए परन्तु जब भवन का पुनः उद्घाटन समारोह हुआ तो उदार दानी की स्मृति में ऐटलाण्टा के बच्चों द्वारा प्रदत्त पेनी-पेनी से संचित धन-राशि से बनवाई गई कारनेगी की प्रस्तरघड़-मूर्ति प्रवेश-द्वार के भीतर स्थापित कर दी गई। न्यूयार्क नगर की इंजीनियरिंग संस्थाओं को केन्द्रीय मैनहैटन में प्रत्येक संस्था के पृथक्-पृथक् कक्ष, बढ़िया पुस्तकालय तथा एक सभा-भवनवाला पन्द्रह तल्ले का संगत-भवन बनाने के लिए पन्द्रह लाख डालर प्रदान किए।

संगीत का वह उत्सुक प्रेमी रहा—उसने लड़खड़ाते गिरजाघरों को पुंगी बाजे प्रदान करना आरम्भ कर दिया था। परन्तु शायद ही किन्हीं दानों ने लाखों

व्यक्तियों को उतना सुख पहुंचाया हो जितना कि न्यूयार्क में फिफ्टी-सेवन्थ तथा सेवेन्थ एवेन्यू पर स्थित उस महान संगीत-संगत भवन ने पहुंचाया ! यह कई दशाब्दों तक संगीत के क्षेत्र में सब प्रसिद्धतम गायकों के गानों से गूंजता रहा। दाता ने इसका नाम 'न्यूयार्क म्यूज़िक हॉल' रखा था परन्तु इसके न्यासधारियों ने शीघ्र ही इसका नाम 'कारनेगी हॉल' रख दिया। प्रसिद्ध रूसी स्वरकार पीटर चैकोवस्की को यहां १८६१ में उद्‌घाटन संगीत के संचालन के लिए लाया गया था—इसमें उसके प्रसिद्ध संगीतों में से भी एक सुनाया गया था। सायं समय भोजनार्थ उसे कारनेगी के घर का निमन्त्रण मिला तथा सायं समय उसके आतियेय ने वादन-मण्डली का नेतृत्व करते समय की प्रतिमूर्ति भेंट की। इसके विषय में स्वयं चैकोवस्की ने लिखा था, "इस मूर्ति ने इतनी गम्भीरता, इतनी सफाई और मेरे इतना रूप अनुकरण किया" कि मेरा भी मनोविनोद हुआ।

इस्पात व शस्त्रास्त्र-उत्पादकों पर यह आक्षेप था कि वे अपने निजी लाभ के लिए युद्धों को प्रोत्साहित करते हैं। यह तो चाहे सच हो या न हो; एण्ड्र्यू कारनेगी उन युद्ध-निर्माताओं में नहीं था। वस्तुतः जिस क्षण से उसने विश्व-समस्याओं के सम्बन्ध में सोचना आरम्भ किया था उसी क्षण से वह सब राष्ट्रों में शान्ति-स्थापन का इच्छुक हो गया था। इन दिनों की एक घटना से उसके प्रयत्न की यथार्थता प्रमाणित होती है।

राष्ट्रपति हैरिसन तथा उनके स्वराष्ट्र सचिव जेम्स जी० ब्लेन दोनों ही कारनेगी के अच्छे मित्र थे और विश्व-समझौते का समर्थक प्रसिद्ध हो जाने के नाते उसे १८८६ के अक्तूबर में वाशिंगटन में संगठित 'पान-अमेरिकन कांग्रेस' का एक प्रतिनिधि नियत कर दिया गया था।

अतिथि-सत्कार की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र की सरकार ने लैटिन-अमरीका-वालों को बोस्टन से सेंट लूई तक के इकतालीस नगरों की सैर में न्यागरा प्रपात तथा अन्य अद्‌भुत दर्शनीय स्थान, ओहायो स्थित ज्वाला-कूप तथा पिट्सबर्ग के चारों ओर फैली हुई कुछ इस्पात मिलें व भट्ठियां दिखाईं—कारनेगी स्वयं रक्षक साथी रहा। अतिथियों ने इसे आडम्बर माना। और वाशिंगटन में उनके मनो-रंजन के लिए जो सैनिक पर्यालोकन रचा गया उससे वे चिढ़ गए, उन्होंने समझा कि उनपर अपना नेतृत्व थोपने के लिए ये अपना सैनिक पराक्रम प्रदर्शित कर रहे हैं। उनमें परस्पर छोटे-मोटे झगड़े तो थे ही। और यह समझना

कठिन नहीं है कि सम्मेलन अमरीकन देशों में परस्पर सद्भावना के विकास के लक्ष्य की प्राप्ति में क्यों असफल रहा !

दो वर्ष पश्चात् चाइल-प्रजातन्त्र में लगभग विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गयी और संयुक्त-राष्ट्र जोकि एक निर्दोष प्रेक्षक रहा, दोनों दलों का अप्रिय हो गया। चाइल-गलियों में संयुक्त राष्ट्र के नागरिक असुरक्षित थे, तो भी, कुछ नाविक वाल्पाराइसो में अमरीकी जहाज से तट पर चले गए। भीड़ ने उनपर आक्रमण कर दिया और उनमें से दो मारे गए, अठारह घायल हो गए। संयुक्त राज्य ने इसका उत्तर मांगा तो चाइल ने अशिष्टता से उत्तर दिया और वाशिंगटन में युद्ध की चर्चा होने लगी।

बहुत क्षुब्ध हुए कारनेगी ने वाशिंगटन जाने और यह जान लेने का निश्चय किया कि वह संकट को रोकने का क्या प्रयत्न कर सकता है। वह शोरहैम होटल में प्रविष्ट हो ही रहा था कि मिसूरी के सेनेटर हैण्डरसन दिखाई पड़ गए; सम्मेलन में वे भी साथी प्रतिनिधि थे। वे बातें कर ही रहे थे कि हैण्डरसन ने सड़क के पार देखा और कहा, "वह देखो, राष्ट्रपति तुम्हें संकेत दे रहे हैं।"

उन दिनों हमारे राष्ट्रपति, जब चाहे तथा जहां चाहे एक भी अंगरक्षक लिए बिना घूमा-फिरा करते थे।

कारनेगी ने सड़क पार की और राष्ट्रपति से हाथ मिलाया।

"आओ, कारनेगी," उसने कहा, "तुम कब आए ?"

"अभी ही, मैं होटल में अभी पंजीयन ही करवा रहा था।"

"तुम यहां किसलिए आए हो ?"

"आपसे बात करने के लिए।"

श्री हैण्डरसन उसकी बांह थामते हुए बोले, "अच्छा लो, आओ और चलते-चलते बातें करें।"

वे घण्टा-भर धुंधलका हो जाने तक, गलियों में चक्कर काटते रहे और चर्चा सजीव रही।

कारनेगी ने कहा, "राष्ट्रपति महोदय, वह शांति-सम्मेलन तो वस्तुतः असफल रहा, परन्तु तो भी, मैं समझता हूं हमारा कर्त्तव्य है कि हम धीर तथा सहिष्णु रहें। आपको स्मरण होगा कि आपने लैटिन अमेरिकी प्रतिनिधियों को आश्वासन दिया था कि आपने उनके सम्मान में जो छोटा-सा सैनिक पर्यवलोकन

रचा था उसका लक्ष्य यह नहीं था कि हमारे पास सेना है; अपितु यह कि सेना हमारे पास है ही नहीं और इसकी हमें आवश्यकता भी नहीं है। आपने उन्हें बताया था कि हमारा प्रजातन्त्र अमरीकी प्रजातन्त्रों के परिवार में एक बड़ा भाई-सा है; और यदि कोई विवाद खड़ा भी हो तो उसका निपटारा शान्तिमय पंचाट से सुलझाया जाएगा। मुझे यह जानकर आश्चर्य एवं दुःख हुआ कि आप अब एक दूसरा ही मार्ग अपना रहे हैं।"

"परन्तु यह तो मात्र विवाद अथवा मतभेद की बात नहीं," राष्ट्रपति ने विरोध करते हुए कहा, "हमारे नागरिकों को बिना छेड़-छाड़ के ही मारा तथा घायल किया गया है। हमारी यह साख रही है कि हम अपने विदेशस्थ नागरिकों की रक्षा करते हैं।"

कारनेगी ने प्रत्युत्तर में कहा, "ऐसी बात है तो राष्ट्रपति महोदय, सुनिए; उनमें से अधिकांश नाविक अमरीकी नहीं, विदेशी थे। मुझे यह सुनकर दुःख हुआ कि आप एक चाइल सरीखे छोटे-से राष्ट्र के विरुद्ध एक सड़क पर हुए गुलगपाड़े को लेकर, कठोर कदम उठाने जा रहे हैं।"

राष्ट्रपति चिढ़कर चिल्लाए, "तुम न्यूयार्कवाले तो कारोबार तथा डालरों के अतिरिक्त कुछ सोचते ही नहीं! न्यूयार्कवालों का यही ढंग है; वे प्रजातन्त्र के आदर व सम्मान से पहले अपने खज़ाने की चिन्ता करते हैं।"

कारनेगी ने धीरे-धीरे तथा प्रभावशाली ढंग से कहा, "राष्ट्रपति महोदय, मैं संयुक्त राष्ट्र के उन व्यक्तियों में से एक हूं जिसे युद्ध से अधिक से अधिक लाभ होने की सम्भावना है। मैं इस्पात का सबसे बड़ा निर्माता हूं, अतएव युद्ध लाखों डालरों से मेरी जेबें भर देगा।"

श्री हैरिसन ने माना, "अस्तु, तुम्हारे सम्बन्ध में तो सम्भवतः यह सच हो।"

"और यदि मुझे लड़ना ही पड़े तो मैं किसी अपनी बराबरीवाले को इसके लिए चुनूंगा।"

"परन्तु क्या आप किसी राष्ट्र को केवल इसलिए कि वह आकार में छोटा है अपना अपमान तथा असम्मान कर लेने देंगे?"

कारनेगी ने कड़कते हुए उत्तर दिया, "मेरा, मेरे अतिरिक्त कोई अपमान नहीं कर सकता। अपमान के घाव स्वयं लगाए जाते हैं।"

"तुम देख लोगे कि तट पर तुम्हारे नाविकों पर आक्रमण किया गया, दो उनमें से मारे गए और फिर तुम सब सह जाओगे ?"

"राष्ट्रपति महोदय, मैं नहीं समझता कि नशे में धुत् नाविकों के आपसी कलह-मात्र से संयुक्त-राज्य का अपमान हुआ है। मैं तो उस जहाज के कप्तान को ही गोली से उड़ा देता कि उसने तब नाविकों को तट पर जाने दिया जबकि सार्वजनिक शान्ति भंग हुई हुई थी और नगर में पहले ही दंगा हो रहा था।"

जब अन्त में वे व्हाइट हाउस के द्वार पर से परस्पर विदा हुए तो अंधेरा हो चुका था। राष्ट्रपति ने कहा, "अब तो मुझे भोज पर जाना है, परन्तु कल तुम आना और सायंकाल मेरे साथ भोजन करना। यहां केवल परिवार ही होगा और हम विस्तार से बात कर सकेंगे।"

अगले दिन कारनेगी स्वराष्ट्र सचिव ब्लेन के कार्यालय में उनसे भेंट करने गया तो उन्होंने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया।

उसने पूछा, "कल हमें क्यों नहीं बताया कि आप यहांपर हैं ? जब राष्ट्रपति ने श्रीमती ब्लेन को तुम्हारे नगर में विद्यमान रहने की बात बताई तो वे पश्चात्ताप से बोलीं, 'सोचो तो सही, कारनेगी महोदय नगर में हों और मेरे पास एक आसन रिक्त हो जिसे भरा जा सकता हो' !"

कारनेगी ने कहा, "भोज के चूक जाने का मुझे दुःख है; परन्तु मैं समझता हूं कि मैं तुमसे नहीं मिला, यह भी अच्छा ही हुआ।" और उसने तब श्री हैरिसन से हुई चर्चा बताई।

सचिव ने सहमत होते हुए कहा, "हां, मैं समझता हूं कि सौभाग्य से ही यह हुआ। नहीं तो राष्ट्रपति सोचते कि हम-तुम दोनों में कोई गुप्त समझौता है।"

अभी वे गपशप कर रहे थे कि पश्चिमी वरजिनिया के सेनेटर एल्किन्स आ गए। भेंटकर्ता को देखकर वे हंसे। उन्होंने कहा "मैं अभी राष्ट्रपति के पास से आया हूं। उन्होंने मुझे बताया है कि सायंकाल उनकी आपसे चाइल के मामले में लम्बी चर्चा हुई। और आपने उन्हें इसपर खूब आड़े हाथों लिया। मैं जानता हूं शान्ति के विषय में कारनेगी महोदय बहुत व्यग्र हैं—मैंने राष्ट्रपति को बतलाया, 'यदि वे आपसे इतनी दृढ़ता से बोले तो मुझसे तो वे न जाने क्या कहेंगे। आप जानते ही हैं कि वे आपसे इतनी दो टूक न कहेंगे जितनी कि मुझसे।

आपसे बातचीत करते समय उनका कुछ संकोच रखना स्वाभाविक है।' इस-पर राष्ट्रपति ने कहा, 'मैं विश्वास दिलाता हूं, मुझे संकोच का तो चिह्न-मात्र भी नहीं दीख पड़ा'।"

इसपर ब्लेन तथा एल्किन्स दोनों खुलकर हंसे।

अगले दिन सायं भोज पर इस विषय पर पुनः चर्चा हुई, परन्तु नरम शब्दों में। कारनेगी ने देखा कि राष्ट्रपति की चिढ़ कुछ ठंडी पड़ रही है। उसने यह भी देखा कि शास्ता कुछ अस्वस्थ प्रतीत होते हैं।

उसने कहा, "राष्ट्रपति मुझे क्षमा करें, परन्तु आप कुछ अस्वस्थ दीख पड़ते हैं। आपको विश्राम की आवश्यकता है। अल्पकालीन अवकाश लेकर आप कहीं को निकल क्यों नहीं जाते ?"

श्री हैरिसन ने उत्तर दिया, "मैं कुछ दिनों के लिए आबकारी जहाज पर चला जाता, परन्तु तुम्हें ज्ञात है कि अभी न्यायपति ब्रेडले का देहान्त हो गया और दूसरे धन्धों के साथ-साथ, उसके एक योग्य उत्तराधिकारी की खोज करने का यत्न कर रहा हूं।"

कारनेगी ने कहा, "पिट्सबर्ग में एक व्यक्ति है; यदि मैं तथा वह मछली पकड़ने के पुराने साथी न होते और इतने घनिष्ठ मित्र न होते कि आपको मेरे पर सन्देह हो कि मैं अनुचित रूप से उसका समर्थन कर रहा हूं, तो मैं उसकी आपसे सिफारिश करता, परन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगा कि वह बहुत विद्वान और सीधा-सच्चा न्यायवादी है। इस सम्बन्ध में आप मेरे कहने पर ही निर्भर न रहें। उसकी छान-बीन कर लें।"

"उसका नाम ?"

"जार्ज शिराज।"

राष्ट्रपति ने सिर हिलाते हुए कहा, "उसके सम्बन्ध में मैं कुछ तो जानता हूं। मैं तुम्हारी सलाह मानकर उससे मिलूंगा।"

वह उससे मिला, और यह था एक ढंग कि जिससे सर्वोच्च न्यायालय का एक विचारपति नियुक्त हुआ। इस अन्तर में चाइल-सम्बन्धी झगड़ा शान्त कर दिया गया तथा सद्भावना से सुलझ गया और कारनेगी ने यह विश्वास करके सन्तोष माना कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति में उसने कुछ योग दिया है। उसकी वाशिंगटन-यात्रा सर्वथा लाभदायक सिद्ध हुई।

: ११ :

होमस्टेड तथा स्किबो

एण्ड्रयू कारनेगी अब कारनेगी-निगम के धन को लोहा, इस्पात तथा इनके उत्पादन में आवश्यक रूप से उपयुक्त कोयला, कोक तथा कच्चे लोहे के अतिरिक्त किसी दूसरी वस्तु में न लगाने की नीति का दृढ़ता से पालन करने लगा था। एक दिन जब वह हेनरी फिप्स के साथ पिट्सबर्ग में गुजर रहा था तो वे एक ऐसे न्यास-समवाय के कारोबारी स्थान से होकर निकले कि जिसका नाम कारनेगी की स्मृति के तार को टकराया। इससे सम्बद्ध चेतावनी का एक वाक्य-खण्ड उसके स्मृतिपटल पर उभरा: "भागीदार व्यक्तिशः उत्तरदायी।"

उसने फिप्स से पूछा, "इस संस्थान के मूलधन के २० अंश हमारी बहियों में हमारी सम्पत्ति में नहीं लिखे हैं क्या ?"

"हां, हैं," उत्तर मिला।

"अच्छा, तो मैं चाहता हूं कि आज तुम कार्यालय में लौटने से पहले ही उन अंशों को बेच डालो।"

फिप्स ने उपेक्षा से सहमति प्रदर्शित करते हुए कहा, "अच्छा, ठीक है; पर ऐसी शीघ्रता क्या है ? यह काम तो कभी भी किया जा सकता है।"

परन्तु मुखिया ने दृढ़ स्वर में कहा, "नहीं हैरी, इस काम को तुरन्त कर डालो; मैं अनुगृहीत हूंगा।"

जब वह बेंक कुछ महीने पश्चात् भारी घाटे के साथ बन्द हो गया तो उसकी बात पर्याप्त ठीक प्रमाणित हो गई। सन् १८८८ में मिलें तथा भट्टियां प्रतिदिन दो हजार टन इस्पात तथा लोहे का उत्पादन कर रही थीं। कोक के कारखानों में पांच हजार चूल्हे थे जो प्रतिदिन छः हजार टन कोक दे रहे थे। उनकी 'ब्रिक कोक कम्पनी' कोनेस्विल में स्थित कोक बनाने के कोयले की बयालीस हजार एकड़ भूमि की व्यवस्था कर रही थी। और अपने बचपन के मित्र हैरी ओलिवर के द्वारा कारनेगी ने मिनीसोटे में नयी खोजी हुई मिसाबे

लोह-धातु भूमि में बहुत-सी एकड़ भूमि का ठेका ले लिया था। इस्पात की छोटी-छोटी वस्तुएं बनाने का एक कारखाना खोल देने से भी उनका कारोबार बढ़ गया था; यद्यपि ए० का० को यह भी अपने क्षेत्र से कुछ बाहर का काम प्रतीत हुआ।

स्वयं कारनेगी का श्रमिकों से कभी भीषण संघर्ष नहीं हुआ। कर्मचारियों से वह सीधा सम्पर्क स्थापित रखता था, उनके बहुत-से नेताओं को उनके प्रमुख नाम से पुकारता था; उनकी शिकायतों पर उचित ध्यान देता और संघर्ष तथा अनौचित्य को दूर कर देता था। परन्तु कारनेगी कम्पनियों के विस्तृत समूह की बढ़ोतरी के साथ-साथ व्यवस्थापकों तथा श्रमिकों, दोनों में, नये व्यक्ति नये प्रभाव प्रविष्ट होते गए। जब गरमियों में कारनेगी स्कॉटलैण्ड चला जाता तो उसकी लम्बी अनुपस्थितियों में विरोध प्रकट होने व बढ़ने लगे। टौम कारनेगी तथा बिल जोन्स—जो दोनों ही बुद्धिमान, दयालु और स्थिरमति व्यक्ति थे, का अभाव अब खूब अनुभव होता था। व्यवस्थापक-मण्डल का नया सभापति फ्रिक्स कठोर एवं निर्मम सिद्ध हुआ। अवस्था की बढ़ोतरी के साथ-साथ हैनरी फिप्स, फ्रिक के दृष्टिकोण की ओर झुकता जा रहा था।

होमस्टेड कारखाने में कुछ 'हीटर्स' तथा 'रोलर्स' (भट्टियों तथा बेलनों पर काम करनेवाले श्रमिक कर्मचारी) गड़बड़ मचा रहे थे। अधीक्षक, जो अभी आगे बढ़ा था, असन्तुष्ट व्यक्तियों से बर्ताव में ओछी सूझ-बूझ का सिद्ध हुआ तथा दुर्भावना आगे फैल गई। चार्ल्स श्वाब तो ब्रैडक-कारखाने के व्यवस्थापकों द्वारा यहां पहुंचा था, वह होमस्टेड में सन्धि-बातचीत करने की स्थिति में नहीं था। इसलिए १८९२ की गरमियों में होमस्टेड कारखाने में हड़ताल की घोषणा कर दी गई यद्यपि कर्मचारी अल्प संख्या में ही, केवल तीन हजार ही हड़ताल में सम्मिलित हुए। फ्रिक तथा कारखाने के अधीक्षक ने, स्कॉट चले जाने से कारनेगी की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर हड़ताल-भंजकों की नियुक्ति का निर्णय किया—यह उनके अध्यक्ष के प्रियतम सिद्धान्तों में से एक का स्पष्टतः उल्लंघन था, यह सिद्धान्त उसने पहले ही लिखकर रख दिया था—मेरे विचार में कम्पनी का दृढ़ निश्चय सबको ज्ञात रहना चाहिए कि वह किसी भी कारखाने में हड़ताल करने देगी; वह उनसे खुली बात करेगी और जब तक वे काम पर नहीं लौट आएगे धीरता से प्रतीक्षा करेगी, कभी भी नये व्यक्तियों की

बात तो सोचेगी ही नहीं ; नहीं, कभी नहीं।

हड़तालियों को जब फ्रिक का अभिप्राय ज्ञात हो गया तो उन्होंने शस्त्र ले लिए और कारखानों तथा आस-पास की गलियों पर दलबल समेत धरना दे दिया। फ्रिक ने कारखानों में प्रवेश करते समय हड़ताल-भंजकों की रक्षा के लिए जिलाधीश व उसके सहकारियों की सहायता के लिए बहुत-से गुप्तचर नियुक्त कर लिए। हड़तालियों ने गलियां तो घेर रखी थीं, इसलिए प्रथम जुलाई को यत्न यह किया गया कि नये व्यक्तियों को नौकाओं द्वारा मोनोंगेहीला नदी में ऊपर की ओर संरक्षण में लाकर वहां से मिलों के पिछवाड़े पहुंचाया जाए। परिणाम हुआ एक भयंकर बन्दूक-युद्ध हुआ जिसमें दोनों ओर के कई व्यक्ति मारे गए तथा घायल हुए और आक्रान्ता खदेड़ दिए गए।

अपने किए पर दोनों दल कुछ डर गए। अतएव समझौते का मार्ग साफ हो गया। स्काटलैण्ड में कारनेगी को दंगे की जानकारी दो दिन पश्चात् हुई; तब उसने अधिकारियों को समुद्री तार से सूचना दी कि वह पहले जहाज़ से घर को चल पड़ेगा। फ्रिक तथा फिप्स दोनों ने तुरन्त उत्तर दिया कि कम्पनी का कल्याण इसमें है कि इस समय वे अमरीका से बाहर रहें। यद्यपि इसका कारण उसकी समझ में नहीं आया तथापि उसने उनकी निषेधाज्ञा का पालन किया। युद्ध के पश्चात् कर्मचारी संघ के अधिकारियों ने उसको जो तार-संदेश भेजा उससे वह बहुत प्रभावित हुआ। "आप बताइए आप हमसे क्या चाहते हैं; हम आपके लिए वही कुछ कर देंगे।" परन्तु अब बहुत देर हो गई थी; हानि हो चुकी थी। बारह वर्ष पश्चात् न्यूयार्क के एक समाचारपत्र में फिप्स ने यह बात स्वीकार की कि वह तथा फ्रिक कारनेगी की उपस्थिति इसलिए नहीं चाहते थे कि वे 'अत्यन्त तर्कहीन श्रमिकों की मांगों को भी सदा मान लेने के उसके एकपक्षीय स्वभाव से परिचित थे।'—वे सारे मामले को अपने ही ढंग से निपटाना चाहते थे।

वर्षों पश्चात् कारनेगी ने आत्मकथा में इस घटना के सम्बन्ध में लिखा था—'जीवन में इससे पहले या इसके पश्चात् जो कुछ मुझपर बीता उसमें किसी घटना ने मुझे इतना गहरा घाव नहीं किया। मेरे कारोबारी जीवन में लगे घावों में से होमस्टेड के घाव के अतिरिक्त किसी घाव का शूल शेष नहीं रहा।' जब वह पतझड़ में अमरीका लौटा तो कारखाने में गया और दंगों में न उलझने-

वाले कुछ पुराने व्यक्तियों से बातचीत की। उन्होंने उसे बताया, "यदि आप होते तो हड़ताल नहीं होती।" जब उसने यह कहा कि मेरे विचार में तो कम्पनी का प्रस्ताव न्याय्य ही था तो उनमें से एक ने उत्तर दिया, "कारनेगी महोदय, प्रश्न कुछ डालरों का नहीं था; लड़के आपकी तो लातें भी खा लेते, परन्तु दूसरे व्यक्ति से बाल भी नहीं सहलवाते।"

तथापि अमेरिका में बहुत-से व्यक्तियों की यह सम्मति रही कि गड़बड़ी का समाचार मिलते ही कारनेगी को लौट आना चाहिए था; न लौटना कायरता थी। उसके आलोचकों ने इस घटना को सदा उसके विरोध में उपस्थित किया।

संस्था में से नवयुवकों को लेकर उन्हें अपनी प्रिय शर्तों पर भागीदार बनाने का उसका क्रम तब तक चालू रहा जब तक कि वे संख्या में तीस से अधिक हो गए, यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति मूलधन के अति तुच्छ भाग का ही स्वामी था परन्तु उसके लिए यह सम्पत्ति ही थी। इनमें से एक स्कॉच युवक एलैक्जेंडर पीकॉक से इस विषय की चर्चा इन शब्दों में आरम्भ की थी; "पीकॉक, यदि कोई तुम्हें लखपति बना दे तो तुम उसे क्या दोगे?"

"ढेर-सी नकद दलाली, श्रीमन्!" तुरन्त उत्तर मिला; जिसपर मुखिया बहुत हंसा।

३० मार्च, १८६७ को कारनेगी की इकलौती सन्तान, सुन्दर लड़की, उत्पन्न हुई। पिता के पहले-पहल देखते ही पत्नी ने कहा, "इसका नाम तुम्हारी माता पर मार्गरेट है। अब मेरी एक प्रार्थना है।"

"लोई, वह क्या है?" उसने पूछा।

"अब जबकि यह नन्ही हमें प्रदान कर दी गई है तो हमारा अपना ग्रीष्म गृह होना चाहिए। किराये पर मकान लेकर एक नियत दिन उसमें प्रविष्ट होना तथा नियत दिन बाहर निकल जाना अब हमसे नहीं बनेगा। घर हमारा अपना होना चाहिए।"

वह तुरन्त सहमत हो गया।

"मेरी एक ही शर्त है," पत्नी ने आगे कहा।

"वह क्या?"

"यह घर स्कॉटलैण्ड की 'हाईलैण्ड्स' में हो।"

किसी भी दूसरे सुझाव से वह इतना प्रसन्न न होता। कुछ भी हो, उन्हें

अब गरमियों के लिए क्लनी कैसिल किराये पर मिलना भी नहीं था क्योंकि मैकफरसन का विवाह होनेवाला था और उसे कैसल की आवश्यकता थी। परन्तु दस वर्ष तक गर्मियों में वहां निवास के कारण वह तथा कारनेगी बहुत घनिष्ठ मित्र बन गए थे। उन्होंने शिशु के जन्म का समाचार तुरन्त उसे तार द्वारा भेजा और मैकफरसन देहात में खूब घूमधाम रही; नौ पहाड़ियों पर नौ बड़ी होलियां जलीं, दावतें खूब उड़ीं और स्वास्थ्य-कामनाएं की गयीं।

अतएव, कोई नया मकान किराये पर लेने के स्थान पर नया पिता अब किसी नयी जायदाद को खरीदने के उपक्रम में लग गया। उसे ज्ञात हुआ कि सदरलैंड के ड्यूक की स्कॉटलैण्ड की उत्तरी पहाड़ियों में 'स्किबो' नाम की एक जायदाद है जिसे वह बेचना चाहता है। लगा कि इसमें सब कुछ है : जंगल, पहाड़ी सौन्दर्य, आनन्दप्रद पगडंडियां तथा आरोह, मछली पकड़ने की सुविधा और लगभग अविश्वसनीय सम जलवायु—कुछ फूलदार झाड़ियां वहां जनवरी में फूलती थीं। सबसे बढ़िया था पहाड़ी ऊंचाई पर खड़ा एक विशाल प्राचीन प्रस्तर दुर्ग जहां से कि खाड़ी का दृश्य दीख पड़ता था। देखते ही कारनेगी को स्किबो से प्रेम हो गया। उसने इसे क्रय कर लिया; दुर्ग को बड़ा किया तथा नये सांचे में ढाल दिया; एलिवेटर (ऊपर चढ़ने के लिए विद्युत् उपकरण), विद्युत् प्रकाश, पानी के लिए नल तथा तुर्की स्नानागार तक की व्यवस्था की। वहां एक स्वास्थ्यप्रद दुग्धशाला भी थी जिसमें सर्वोत्तम पशु थे; तथा वहां के पुष्पोद्यानों की ख्याति दूर-दूर तक फैली।

दुर्ग इतना बड़ा था कि कारनेगी जितने अतिथियों का आतिथ्य करना चाहते एकसाथ कर सकते थे—ऐसे बहुत तो थे ही! ग्लेडस्टोन, मैथ्यू आरनोल्ड सरीखे कुछ पुराने मित्र तो अब रहे नहीं थे; परन्तु रुडयार्ड किपलिंग तथा पैडरेवस्की, सर एडवर्ड ग्रे तथा एक स्कॉच इस्पात-उत्पादक सर चार्ल्स टेनाण्ट, ऐलिहु रूट, तथा दूसरे नये उनका स्थान भरते जा रहे थे। उनके चिर एवं प्रिय मित्र लार्ड तथा लेडी मॉर्ले ऋतु में दो या तीन बार आ जाते थे और डन्फर्मलिन के बन्धु तो सदा वहां थे ही। दस मील दूरी पर स्थित रेलपथ के स्टेशन पर अतिथियों को (प्रारम्भिक विक्टोरिया युग की) पुराने ढंग की सजी-सजाई व नये वार्निश से चमचमाती चार घोड़ों की घोड़ागाड़ी मिलती जिसे लाल कोट पहने चालक हांकता और लाल कोट पहने एक प्यादा पिछले आसन

पर ऊंचा खड़ा बिगुल बजाता चलता था।

स्किबो के जमींदार को वंशवृक्ष एवं वंश-चिह्न से तो घृणा थी परन्तु उसने एक कारनेगी-वेशभूषा का श्राविष्कार किया श्रौर वह जब स्किबो में रहता तो स्कॉटलैण्ड के पर्वतीय प्रदेशों की रंग-बिरंगी ऊनी वेशभूषा में स्वयं रहता तथा शिशु मार्गरेट भी इधर-उधर कूदती-फांदती श्रपने पिता के हाथ में हाथ डाले सैर करती श्रथवा पहाड़ की चढ़ाइयां चढ़ती। दुर्ग के पुरुष-सेवक तथा श्रमिक भी यही वेशभूषा पहनते। वेष का वस्त्र पड़ोस में करघों पर बुना होता था। स्कॉचपने पर बल दिया जाता था। वीणावादक जो प्रातःकाल का श्रभिनन्दन करता श्रौर जो भोजन से पूर्व प्राचीन हाईलैण्ड-वाली लय बजाता हुश्रा भोजनशाला में यहां से वहां टहलता फिरता था वह इस स्थान पर सबसे श्रधिक महत्त्व का व्यक्ति था श्रौर साथ ही था एक स्काच गृह-प्रबन्धक भी। ये सब सर्दियों तक रहने के लिए परिवार के साथ श्रमरीका जाते श्रौर जायदाद के श्रमिकों की भांति जीवन-पर्यन्त नौकरी पर रहते थे।

चार जुलाई को श्रमेरिकी व श्रंग्रेज दोनों झण्डे दुर्ग पर तब तक लहराया किए जब तक कि उस ग्रीष्म ऋतु में बुर्ज पर केवल एक श्रकेला ध्वज लहराया गया—जिसने पहले-पहल तो श्रतिथियों को श्रसमंजस में डाल दिया। इसको बहुत ध्यान से देखा तो उनकी समस्या हल हो गई। यह उनके श्रातिथेय द्वारा निर्मित ब्रिटिश व श्रमेरिकी ध्वजों का एक विशेष मेल था—जो सम्भवतः श्रनजाने ही उसकी इस श्राशा को व्यक्त कर रहा था कि ग्रेट ब्रिटेन व संयुक्त राज्य श्रमेरिका गुंथकर किसी दिन एक बड़े प्रजातन्त्र में परिणत हो जाएंगे।

जंगली पशुश्रों के हनन को वह कभी सह नहीं सका। हरिण, खरगोश, तथा जंगली पक्षियों की इस जमींदारी में कमी नहीं थी परन्तु उसने कभी शिकार नहीं किया। वह तथा उसके श्रतिथियों ने मछलियां श्रवश्य पकड़ीं, कारण कि स्थलचरों की भांति मत्स्य उसकी सहानुभूति के पात्र नहीं बन पाए। परन्तु बंदूकें लेकर श्रानेवाले उसके श्रतिथि यदि शिकार की श्रनुमति मांगते तो वह कहता, "श्राप चाहें तो शिकार करें; श्रापको उन्हें श्रवश्य मारना ही है तो मारें; परन्तु कृपया इस सम्बन्ध में मुझे कोई जानकारी न होने दें।" स्व-भावतः ऐसी परिस्थिति में कोई ही श्रतिथि शिकार की इच्छा रखता! रक्तपात, चाहे पशुश्रों का हो या मानवों का, कारनेगी के लिए घृणास्पद ही था।

इस अन्तर में वह लगातार छोटे कालेजों को धन दे रहा था, गिरजाघरों व यहूदी प्रार्थनागृहों के लिए वाद्ययन्त्र क्रय कर रहा था, संगीत भवनों को प्रोत्साहन दे रहा था तथा पुस्तकालयों का निर्माण कर रहा था। स्किबो दुर्ग से दस मील तक के घेरे में स्थित प्रत्येक गांव में तथा दूर के कुछ गांवों में भी एक कारनेगी पुस्तकालय विद्यमान है। उसने न्यूयार्क-स्थित कूपर इंस्टीट्यूट तथा 'मर्चैंट्स एण्ड ट्रेड्समैन इंस्टीट्यूट' में से प्रत्येक को सात लाख पचास हजार डालर और टस्केजी इंस्टीट्यूट को प्रारम्भिक छः लाख डालर प्रदान किए। पुरानी मित्रता को लाड़-प्यार से स्थिर रखते हुए उसने उन लोगों को विश्राम-वृत्तियां प्रदान कीं जो पेनसिलवेनिया रेलपथ के पिट्सबर्ग मण्डल में उसके अधीन १८५६ से १८६३ तक कर्मचारी रहे थे। इनमें से कुछ ने उससे सहायता की प्रार्थना की थी, और अन्त में उसने अपने चिर मित्र टौम मिलर को यह काम सौंपा कि वह अन्यों को ढूंढ़े तथा जो भी मिल सकें सबको अथवा उनकी विधवाओं को वृत्ति-सूची में ले आए। उसने विवरण देते हुए कहा, "पहले-पहल जब मैं इनमें गया था तो बालक ही था; मुझपर उनकी बड़ी कृपा रही। वे मेरे प्रिय मित्र हैं।" और जब मिलर ने प्रत्येक का विवरण भेजा तो उनमें से कइयों पर उसने टिप्पणियां लिखी: "जोन की तो मुझे खूब याद है।" "बिल हमारा सर्वोत्तम पथ-कर्मचारी था।" "हेनरी को मेरी शुभ कामनाएं।"

गृहयुद्ध के सैनिक संकेतकों से भी उसकी गहरी सहानुभूति थी; उनके साथ उसका स्मृति-सम्बन्ध था। उन्होंने जिस इतिहास परिषद् का संगठन किया था, उसका वह सदस्य था और कभी-कभी उनकी किसी-किसी वार्षिक बैठक में उपस्थित भी हुआ था और वहां संदेशवाहक के रूप में बिताए अपने प्रारम्भिक दिनों की चर्चा की थी। उसको इस बात पर क्षोभ था कि भरसक यत्न करने पर भी उनको, जिनका कि काम सेना के लिए इतना महत्त्वपूर्ण रहा, सरकार वृत्ति नहीं दे पाई थी। कइयों ने तो योद्धा सैनिकों की भांति, युद्ध-क्षेत्र में अपने प्राण संकट में फंसा दिए थे; कुछ घावों, वर्षा, धूप-शीत आदि की सहार अथवा शत्रु-काराओं में बन्द रहने के कारण अंगहीन अथवा अस्वस्थ हो गए थे। अन्त में इस प्रयोजन से उसने अपनी निजी निधि स्थापित की और उन्हें वैसे ही विश्राम-वृत्तियां दीं जैसेकि वे अपने देश की सरकार से ले रखे हों।

विशेष आवश्यकता पड़ने पर कारनेगी व्यक्तियों के साथ जैसी तुरन्त एवं सफ़ल दया बरतता था, इसका निम्नलिखित एक उदाहरण-मात्र है :

एक बार ग्लैडस्टोन महोदय ने उससे कहा, "हमारे मित्र लार्ड एक्टन आर्थिक कष्ट में हैं और मुझे उनकी बहुत चिन्ता है। आपको मालूम है कि उनका पुस्तकालय कितना अच्छा है; आपने उसे देखा ही है। अस्तु, वे इसको बेचने की सोच रहे हैं—यद्यपि, उन्हें पूरा मूल्य मिल भी नहीं सकेगा और इससे वियुक्त होने पर उनका दिल लगभग टूट ही जाएगा।"

कारनेगी ने कहा, "मैं इसे क्रय कर लूंगा, यदि······"

ग्लैडस्टोन ने बीच में टोककर कहा, "मेरा सुझाव पहले सुन लीजिए, आप इसे खरीद लें—उनके जीते-जी उन्हींके अधिकार में रहने दें—वे बहुत दिन तक तो जिएंगे नहीं, पीछे आप उसका जो चाहें करें।

"यह मैं कर लूंगा।" कारनेगी ने राजनयिक से हाथ मिलाते हुए उद्‌गार प्रकट किया, "और सुझाव के लिए धन्यवाद।"

उसने पुस्तकालय को एक्टन के अपने बताए मूल्य पर खरीद लिया; परन्तु भविष्यवाणी के अनुसार कृतज्ञ जमींदार इसे भोगने के लिये अधिक देर तक जीवित न रह पाए। उनकी मृत्यु के कुछ देर पश्चात् १९०२ में कारनेगी तथा मॉर्ले मिले। कारनेगी ने अपने मित्र से कहा, "मुझे आपको कुछ बताना है। आपको स्मरण होगा कि कुछ वर्ष पहले लार्ड एक्टन आर्थिक संकट में थे और अपना पुस्तकालय बेचने को प्रस्तुत हुए···"

मॉर्ले के मुख पर फैली जानकारी की मुस्कराहट ने वाक्य को बीच में ही काट दिया। उसने कहा, "मैं आपको बता दूं कि मुझे यह बात उस दिन से ही ज्ञात है जबकि आपने वह खरीदा था।"

"आपको ज्ञात है।"

"हां, ग्लैडस्टोन रहस्य को गुप्त न रख सके, वे अत्यधिक प्रफुल्लित हो उठे थे, क्योंकि लार्ड एक्टन ने उसका जीवन-भर का बीमा करवा लिया था।"

कारनेगी बोला, "अच्छा, तो अब मैं तुम्हें वह सौंपने लगा हूं।"

"मुझे!" अब मॉर्ले की अचम्भा करने की बारी थी।

"हां, आप जान लेंगे कि इसका सर्वोत्तम उपयोग क्या हो सकता है। और मुझे आपपर भरोसा है कि अपनी मृत्यु के समय आप इसको किसी ऐसी संस्था को सौंप देंगे जो इसको नष्ट न होने देगी और इसका पोषण करेगी।"

: १२ :

एक मोड़ और समाधान

कारनेगी जानता था कि फ्रिक को सदा आशा लगी रहती है कि किसी प्रकार कारनेगी मूलधन का कुछ भाग बाह्य व्यक्तियों, वस्तुतः दलालों के हाथ में पहुंच जाए कि सर्राफा मण्डी में उन्हें चलाया जा सके। अन्त में जब फ्रिक ने कम्पनी के कोषाध्यक्ष के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा कि पिट्सबर्ग के एक करोड़-पति महाजन के हाथ कम्पनी के दो प्रतिशत मूलधन को बेचकर किन्हीं सुधारों के लिए धन दे और जब कोक के मूल्य के सम्बन्ध में कारनेगी के साथ हुए मौखिक समझौते का उल्लंघन कर वह इससे भी आगे बढ़ा तो साधारणतः शांत रहनेवाला स्कॉच वस्तुतः पागल हो उठा।

कारनेगी को सबसे बड़ा दुःख तो यह था कि हेनरी फिप्स फ्रिक का साथ दे रहा था। १८९९ के अन्तिम दिनों में एक दिन फ्रिक को कम्पनी से निकाल देने का दृढ़ निश्चय किए, वह क्रोध में भरा घर लौटा। भागीदारों में इससे पहले कोई गम्भीर बखेड़ा नहीं खड़ा हुआ था और कारनेगी को जो कार्यवाही करनी पड़ रही थी उससे उसे चिढ़ थी। उसने सुझाव रखा कि फ्रिक अपना मूलधन दूसरे भागीदारों को बेच दे और शान्तिपूर्वक कम्पनी से विरत हो जाए, परन्तु फ्रिक ने अस्वीकार कर दिया। उसको कम्पनी से निकालने के लिए एक महंगा मुकदमा तथा समझौता करने पड़े; पर अन्त में वह चला गया। इसके पश्चात् शीघ्र ही फिप्स ने कारनेगी से सन्धि-चर्चा की और वे एक बार फिर मित्र हो गए, यद्यपि उनकी भावनाएं परस्पर वैसी कभी नहीं हुई जैसीकि गत वर्षों में थीं। फ्रिक तो अपनी योजनाओं के विफल कर देने के कारण कारनेगी से सदा विरक्त रहा—यद्यपि वह पहले से कई गुणा अधिक धनी जीवित रहा और मरा।

संघर्ष ने कारनेगी को थका दिया था और वह कारोबार की चिन्ताओं से मुक्त रहने की चाह रखने लगा। और तो भी वह अपने जीवन-कार्य को पिछड़ा

हुआ छोड़ देने के विचार-मात्र को भी न सह सकता था। मौरगन महाजनी कारोबार, जिसका अध्यक्ष शक्तिशाली जे० पियरपॉंट मौरगन था, इस्पात कारोबार में खरीदारी शुरू कर रहा था। कारनेगी संगठन ने, जिसका कि अध्यक्ष उस समय श्वाब था, इसके बदले ऐरी झील तट पर ओहायो के कौनीट स्थान पर, जहां कि उनका मिसाबे का कच्चा लोहा सीधा नाव द्वारा जा सकता था, एक नया इस्पात का कारखाना बना लिया।

अब मौरगन को सन्देह होने लगा कि कहीं कारनेगी के कारोबार को भी खरीदना सम्भव है या नहीं। जोन डब्लू० गेट्सने, जिसके कि कंटीले तार के तथा इस्पात के व्यवसायों को उसने हस्तगत कर लिया था, उससे बोला, "केवल एक ही व्यक्ति ऐसा है कि जिसका कारनेगी पर कुछ दबाव है और वह चार्ली श्वाब है। यदि तुम उसे मिला सको, तो सम्भवत: उसको यह काम सौंप सको।"

मौरगन ने श्वाब तथा कुछ अन्य इस्पात के व्यवसायियों को परामर्श के लिए बुलाया—यह एक स्मरणीय सम्मेलन था जो सारी रात होता रहा।

श्वाब ने उन्हें बताया, "ठीक है, वह कारोबारी चिन्ताओं के भार से ऊब उठा है। और तो भी, मैं समझता हूं कि वह इस्पात से सारा नाता तोड़ने के विचार से तो जूझेगा।" परन्तु कीमतों तथा कारखाने के मूल्यों के सम्बन्ध में कुछ घण्टे विचार-विमर्श कर चुकने पर श्वाब ने वचन दिया कि "मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूंगा।"

उसने बुद्धिमत्ता यह की कि वह पहले श्रीमती कारनेगी से मिला।

सहमति प्रकट करते हुए उसने कहा, "मैं चाहती हूं कि वे विश्राम ग्रहण कर लें। मैं जानती हूं कि उनके मन में कई बार यह विचार उठा है, परन्तु तो भी इससे सर्वथा निकल जाने का विचार उन्हें नहीं भाता।

उन्होंने कुछ देर इस विषय पर चर्चा की और फिर वह जैसे कुछ याद करके बोलीं, "क्यों न आप उन्हें गुल्फ खेलने ले जाएं और जब वे प्रसन्न मुद्रा में हों तो उनके सामने यह प्रस्ताव रखें?" और मुस्कराते हुए उन्होंने यह भी कह दिया, "यदि कोई व्यक्ति उन्हें इसके लिए तैयार कर सकता है तो यह आप ही हैं, चार्ली।"

इसलिए चार्ली श्वाब अपने मुखिया को वेस्टचेस्टर काउंटी की गुल्फ क्लब

में ले गया और जब वे शाद्वल से शाद्वल तक रास्ता नाप रहे थे तो उसने विषय छेड़ा। आरम्भ में तो इस विषय से विरक्त रहा। उसने बड़ी अधीरता से कहा, "नहीं, नहीं। निवृत्त होने का मेरा विचार ही नहीं है।" परन्तु उसकी अधीरता ने ही जतला दिया कि उसके मन में संघर्ष चल रहा है और अब उस व्यक्ति ने घर दबाया है जिसको कि उसके समसामयिकों ने इतिहास का सबसे बड़ा विक्रेता माना है—वह व्यक्ति जिसका कि वैयक्तिक आकर्षण तथा प्रेरक शक्ति लगभग दुर्जेय थे।

श्वाब कहता गया, "मौरगन के पास व्यवसाय में झोंकने के लिए करोड़ों-अरबों डालर हैं और वह ऐसा विरोधी दल संगठित कर लेगा कि जो हमारे लिए बहुत बड़ा सिद्ध होगा। दूसरी ओर वह आपको लगभग उतना दे देगा जितना कि आप कहें···।"

कारनेगी ने विरोध किया और कहा, "इससे क्या? मुझे धन नहीं चाहिए। नहीं, नहीं चार्ली! कारोबार छोड़कर मैं क्या करूंगा?"

प्रत्युत्तर में श्वाब बोला, "आप धन प्रदान करने का आनन्द खूब लूट सकते हैं···आप अपने उस 'सम्पत्ति के सिद्धान्त' को व्यवहार में लाना आरम्भ कर सकते हैं।" और वह इसी प्रकार उंडेलता रहा कि उसका मुखिया मौन हो गया।

अन्त में कारनेगी ने पूछा, "दूसरे भागीदारों के इस विषय में क्या विचार हैं? क्या तुमने उनसे परामर्श लिया है?"

श्वाब ने बताया, "हममें से तीन या चार ने एक-दूसरे से योंही यह बात कही तो है। इससे अधिक कुछ नहीं। परन्तु मुझे निश्चय है कि वे सब मान जाएंगे। देखिए तो सही, हममें से जो व्यक्ति इस्पात कारोबार में ही रहना चाहेंगे वे मौरगन जिस 'युनाइटेड स्टेट्स स्टील कॉर्पोरेशन' को संगठित कर रहा है उसके मूलधन तथा बांड (बन्धक-पत्र) स्वीकार कर लेंगे। आप ऐसे बांड ले सकते हैं जिन्हें तत्काल नकदी में परिवर्तित किया जा सके अथवा दान में प्रयुक्त किया जा सके।"

दोपहर के लिए विदा होने से ठीक पहले तक कारनेगी बहुत कम बोला। तब उसने निर्देश दिया, "दूसरे भागीदारों से मिलो और मालूम करो कि वे इस विषय में क्या सोचते हैं।"

दूसरे भागीदार बिक्री के विषय में एकमत थे और श्वाब ने मौरगन को यह सूचना दे दी। महाजन ने कारनेगी से टेलीफोन मिलाया और परस्पर अभिवादन का आदान-प्रदान हो जाने पर वह महत्त्वपूर्ण विषय छेड़ा, "क्यों नहीं आप आकर चर्चा कर लेते ?" उसने सुझाव दिया।

इस्पात-राजा ने मधुरता से प्रत्युत्तर दिया, "मौरगन महोदय, फिफ्टी फर्स्ट स्ट्रीट से वाल स्ट्रीट का अन्तर उतना ही है जितना कि वाल स्ट्रीट से फिफ्टी-फर्स्ट का"।

मौरगन गुप्त संकेत को तत्काल ताड़ गया। संसार का सबसे बड़ा इस्पात-उत्पादक संसार के सबसे बड़े महाजन के संरक्षण में नहीं आना चाहता था। इस्पात धन से बड़ा था; पहाड़ को मुहम्मद के पास जाना होगा।

"मैं ही आऊंगा," मौरगन बुदबुदाया।

उसने घोड़ागाड़ी मंगवाई और कारनेगी के घर जा पहुंचा। और पन्द्रह मिनट में ही वह विशाल सौदा तय हो गया। बात करते-करते कारनेगी ने कागज़ की एक पर्ची पर चालीस करोड़ का अंक लिखा और पर्ची भेंटकर्त्ता को पकड़ा दी। यह उसके अपने निजी भाग का विक्रय-मूल्य था।

मौरगन की कठोर मुद्रा में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। उसने इतना ही कहा, "मुझे स्वीकार है।" और थोड़ी-सी और बातचीत के पश्चात् वह गाड़ी पर जा बैठा और वाल स्ट्रीट को लौट गया। उसने श्वाब को पीछे बताया कि यदि वह कहता तो मैं उसे दस करोड़ और भी दे देता।

इस प्रकार मौरगन ने एक अरब दस करोड़ डालर की पूंजी से युनाइटेड स्टेट्स स्टील कॉर्पोरेशन का संगठन किया और इसका अध्यक्ष बनाया चार्ल्स एम० श्वाब को जो पच्चीस वर्ष पहले पेनसिलवेनिया की पहाड़ियों में किराये की घोड़ागाड़ी हांका करता था। चार्ली के पहले मुखिया ने इस नियुक्ति का समर्थन करते हुए सोचा था कि कारोबार को इससे अधिक योग्य हाथों में नहीं सौंपा जा सकता था।

अपने कारोबारी सम्बन्धों से संन्यास लेकर जो पतन की सी भावना कारनेगी के मन में आई वह देर तक नहीं ठहरी। वह शीघ्र ही उन बहुत-सी बातों के विचार में लग गया जिन्हें कि वह करना चाहता था। चार्ली ने ठीक कहा था—अपने धन के बांटने का बहुत-सा कौतुक उसे मिलनेवाला है। वह

छियासठ वर्ष का हो गया था और शायद समय बहुत न बचा हो।

सचमुच ही दान देने से उसका हाथ नहीं रुका। गट्टा और नाटा, गोल, प्रसन्न, दयालु, श्वेत दाढ़ी से ढके चेहरेवाला यह व्यक्ति जिसने अपने ऊपर चालीस करोड़ डालर दान देने का उत्तरदायित्व ले लिया था, यदि उसकी दाढ़ी ज़रा बड़ी होती तो सान्ता क्लास का आदर्श प्रतिरूप ही होता। परन्तु उन हज़ारों स्कूलों, कालेजों, चर्चों, दान-संस्थाओं तथा व्यक्तियों के लिए तो, जिनकी कि उसने निष्काम सहायता की, वह साक्षात् सान्ता क्लास ही था।

अब भी वह न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी के न्यासधारियों के साथ कई शाखाओं के निर्माण की बातचीत चला रहा था, और पिछले वर्ष कारनेगी इंस्टीट्यूट ऑव टैक्नोलोजी की स्थापना पिट्सबर्ग में दस लाख डालर के प्रारम्भिक दान से की थी ; इसमें वह तब तक और राशि जोड़ता गया जब तक कि सब मिलाकर जोड़ उसके जीते जी एक करोड़ साठ लाख डालर न हो गया। शेनले पार्क में बनाए गए इस संस्थान में चार इकाइयां थीं—व्यावहारिक विज्ञान, व्यावहारिक शिल्प, व्यावहारिक उद्योगों के स्कूल तथा मार्गरेट मौरिसन कारनेगी स्कूल (इसमें तरुणियों के लिए गृह-विज्ञान तथा इससे सम्बद्ध विषय पढ़ाने की व्यवस्था थी)—ये सब इकाइयां बी० एस-सी० उपाधि प्रदान करती थीं।

निवृत्त होने के पश्चात् कारनेगी ने सबसे पहली बात यह की कि इस्पात कारखानों तथा भट्टियों में काम करनेवाले कर्मचारियों के लाभ के लिए पचास लाख डालर अलग रख दिए—इस राशि में से दस लाख डालर की राशि उनके लिए स्थापित पुस्तकालयों के पोषणार्थ अलग कर दी थी। शेष धनराशि वृद्धावस्था की निवृत्तिकालीन वृत्तियों के लिए, कारखानों में घायल होनेवाले व्यक्तियों की सहायतार्थ और मारे गए कर्मचारियों के परिवार के लाभार्थ थी।

वसन्त ऋतु में वह स्कॉटलैण्ड गया ; वहां उसे चार स्कॉच विश्वविद्यालयों में से सबसे अधिक प्राचीन एवं भव्यतम सेंट एण्ड्रयूज़ के लार्ड रेक्टर पद का तिलक करवाना था। इन संस्थाओं में कभी लार्ड रेक्टर एक उच्च अधिकारी हुआ करता था, परन्तु शताब्दियों पश्चात् अब यह पद एक सम्माननीय-मात्र रह गया था और सदा प्रतिवर्ष छात्रों से चुका हुआ कोई विशिष्ट व्यक्ति इस-

पर प्रतिष्ठित होता था। सेंट एण्ड्रयूज़ के इतिहास की पांच शताब्दियों में इस पद पर प्रतिष्ठित होनेवाले विशिष्ट व्यक्तियों की सूची में सम्मान मिलने का कारनेगी को उचित ही गर्व था और वह इनमें पहला व्यक्ति था जो ब्रिटिश नागरिक नहीं था। उसका मान तब और अधिक बढ़ा जबकि आगामी वर्ष १९०२ में दूसरे सत्र के लिए भी छात्रों ने उसे पुनः चुन लिया।

उसने 'रेक्टर रात्रियों' का खूब रस लिया—इनमें छात्र परस्पर आदान-प्रदान के लिए रेक्टर को केवल अपने मध्य पाते हैं—किसी भी विभागीय सदस्य को इसमें उपस्थित होने की अनुमति नहीं होती। प्रथम रेक्टर रात्रि के पश्चात् प्रिंसिपल डोनल्डसन ने उसे बताया कि छात्रों ने कहा था—'अमुक रेक्टर ने तो हमको समझाने के ढंग से बातें कीं, अमुक ने भाषण दे डाला—दोनों ने ही मंच से ही, परन्तु श्री कारनेगी तो हमारे बीच आ बैठे और हमसे सम्भाषण करते रहे'—और केवल लगभग दो सौ छात्र ही तो थे—यह कुछ कठिन नहीं था।

यह देखकर कि एबरडीन, एडिनबरा, ग्लासगो तथा सेंट एण्ड्रयूज़ चारों ही विश्वविद्यालय कम-अधिक आर्थिक कष्ट में हैं तथा ऐसे योग्य छात्रों की संख्या बहुत अधिक है जो कालेज की पढ़ाई नहीं कर पाते, कारनेगी ने नौ करोड़ डालर की निधि 'स्कॉटिश यूनिवर्सिटीज़ ट्रस्ट' नाम से स्थापित की; इसमें से आधी धनराशि स्वयं चारों संस्थाओं के हितार्थ थी और आधी उन योग्य युवकों के सहायतार्थ रखी गई थी जो शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों। कारनेगियों ने विश्वविद्यालयों के प्रिंसिपलों को सपरिवार एक सप्ताह स्किबो में बिताने का निमन्त्रण दिया। इस समय यूनिवर्सिटीज ट्रस्ट के सभापति अर्ल ऑव एलगिन तथा ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल में स्काटलेंड-सचिव लार्ड बालफोर भी उपस्थित थे। इसके पश्चात् 'प्रिंसिपल-सप्ताह' स्किबो की एक वार्षिक घटना बन गई और सदा एक सुखद अवसर रहा।

प्रथम 'प्रिंसिपल-सप्ताह' की समाप्ति पर विदाई के अवसर पर प्रिंसिपल लैंग ने अभिवादन करते हुए कहा, "स्कॉच विश्वविद्यालयों के प्रिंसिपलों को यह सीखने में कि सत्र कैसे आरम्भ करने चाहिए, पांच सौ वर्ष लगे हैं। एक सप्ताह मिल बैठकर बिताना इसका उत्तर है।"

अब जबकि वह कुछ भी करने को स्वतन्त्र था तो निवृत्त उद्योगपति को

यह देखकर प्रमोदपूर्ण आश्चर्य हुआ कि उसके अभीष्ट कार्य में से कितना करने को है। पहला काम जो उसने किया वह यह था कि अमरीकी तथा ब्रिटिश पत्रिकाओं में लिखे गए कुछ निबन्धों का संग्रह किया तथा कुछ अतिरिक्त सामग्री के साथ उसको १९०१ में 'दि एम्पायर ऑव बिजिनस' के नाम से प्रकाशित कर दिया। उसने जेम्स वाट की जीवनी लिखने का विचार करना भी आरम्भ किया था और उसे फिफ्थ एवेन्यू से दो मील परे उन्नीसवीं तथा इक्यानवेवीं गलियों के बीच एक नया घर भी बनवाना था। १९०२ में परिवार इस घर में चला गया। यद्यपि यह घर बड़ा था, परन्तु अपने निर्माता की भांति मजबूत, चौकोर तथा सादे नक्शे का था और इसके चारों ओर फैले मैदान, बसंत से पतझड़ तक, फूलों से चमचमाते रहते थे। गृहस्वामी के सादे शयनकक्ष में दीवार पर केवल एक ही चित्र—विल जोन्स का—लटका हुआ था।

जब कारनेगी निगमों की सत्ता निःशेष हो गई तो इसके सब ४३ भागीदारों ने बीते दिनों की स्मृति को अपने में से अन्तिम की मृत्यु तक बनाए रखने के लिए 'कारनेगी वैटेरन्स एसोसिएशन' संगठित की। नया घर बनकर तैयार हो जाने पर श्रीमती कारनेगी ने कहा—और उसका पति भी यह सुनकर प्रसन्न हुआ—पहले पुराने कर्मचारियों (वयःस्थों) को ही बुलाया जाए। और वे गृह-प्रवेश-भोज पर आए और उसके पश्चात् वयःस्थ-भोज एक ऐसी वार्षिक घटना हो गई जिसकी प्रतीक्षा सब, विशेषतया आतिथेय, उत्सुकता से करते थे। करनेगी ने उन्हें 'मेरे बाल' कहकर सम्बोधन किया और अपने प्रति उनकी प्रेम-भावना स्पष्ट अनुभव करके—उसने इसे उनकी आंखों में चमकते पाया—उसने अपने आत्मचरित की टिप्पणियों में लिखा, "किन्तु यह (प्रेम) धनरहित भी, इससे रहित करोड़पतिपन से कहीं अधिक है; हां, हजार गुणा अधिक, अवश्य !"

प्रथम भोज में श्रीमती कारनेगी को 'वैटेरन्स एसोसिएशन' का मानद सदस्य चुना गया। तब किसीने प्रस्ताव कर दिया 'हम नन्ही मार्गरेट को भी क्यों न चुन लें' और उन्होंने उसको तत्काल चुन लिया।

कुछ ही समय पश्चात् वयःस्थों में से अन्यतम, कभी के निर्धन देहाती लड़के, अब 'स्टील ट्रस्ट' के नाम से विख्यात ट्रस्ट के अध्यक्ष चार्ल्स श्वाब ने, 'रिवर

साइड ड्राइव' पर भारी घर बनवा लिया। यह एक विशाल महराबदार रचना थी जिसको उसने अपने प्यारे देश फ्रांस में, ल्वौर नदी के तट पर अपने चैत्य के नक्शे पर बनवाया था।

उसका पुरातन स्वामी कभी-कभी किसी मित्र से हंसी में कहता, "क्या तुमने चार्ली के नये महल को देखा है? तुलना में इसके आगे मेरा मकान तो एक कुटी ही लगता है।"

: १३ :

वितरण

न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी के निर्देशक श्री जे० एस० बिलिग्स मैनहैटन तथा ब्रांक्स नगरों में पुस्तकालयों की शाखाएं बनाने के सम्बन्ध में कारनेगी से बातचीत चला रहे थे, उन्होंने १९०१ में बड़ी शान्ति से यह सुझाया कि अस्सी हज़ार डालर प्रति शाखा के हिसाब से आकस्मिक व्यय के अतिरिक्त कुल बावन लाख डालर की लागत से पैंसठ शाखाएं बनवा दें।

कारनेगी ने कहा, "बावन लाख का आदेश है तो पर्याप्त बड़ा, परन्तु यदि भवनों की आवश्यकता है तो वे बनने ही चाहिए।" इसलिए नगर ने ठिकाने हस्तगत करना आरम्भ कर दिया तथा निर्माण-कार्य यथासम्भव शीघ्रता से चलता रहा—धन के कारण रुकावट ही नहीं पड़ी, जैसाकि प्रायः हो जाता है कि कोई औद्योगिक अल्लादीन धन देनेवाला नहीं होता। फिर आवश्यक धन की मात्रा उतनी ही न रही। आदिम अटकल में तीन भवन बढ़ा दिए गए और फिर एक पृथक् संस्था ब्रुकलिन पब्लिक लाइब्रेरी को बीस शाखाएं भेंट कर दी गईं। प्रत्येक पुस्तकालय की कुछ आवश्यकताएं थीं; प्रत्येक में उद्धरण एवं वितरण विभाग, शिशु-कक्ष तथा क्रमबद्ध पत्रिकाओं का होना आवश्यक था; बाह्य रूपरेखा से प्रत्येक भवन पुस्तकालय पहचाना जाना चाहिए था—तो भी कोई भी दो भवन सर्वथा एक-से नहीं हो सकते थे।

बहुत-से भवनों में एक छोटे तहखाने में स्थित अभिनय-कक्ष का होना कम उपयोगी नहीं था—जहां कई बार नाटक खेले जाते थे तथा पिछले वर्षों में जहां अंग्रेज़ी एवं अन्य विषयों में रात्रि कक्षाएं लगाई गई थीं। क्योंकि कई वर्ष तक एक मानवप्रेमी न्यूयार्क के नाटक-निर्माता जॉन गोल्डन ने लाइब्रेरी थियेटर (पुस्तकालयस्थ रंगमंच) चालू रखा और इसने इन रंगमंचों का दौरा करने तथा बढ़िया नाटकों का अभिनय करने के लिए व्यवसायी अभिनेताओं की बढ़िया कम्पनियों को नियुक्त रखा। कुछ चुने हुए पुस्तकालय-संरक्षकों के

लिए इनमें प्रवेश निःशुल्क था।

१९१९ तक, जबकि उसके दान सदा के लिए समाप्त हो गए, कारनेगी छः करोड़ तीन लाख चौंसठ हज़ार आठ सौ आठ डालर की लागत से दो हज़ार आठ सौ ग्यारह पुस्तकालय-भवन भेंट कर चुका था। इनमें से १९४६ संयुक्त राज्य में थे और शेष विदेशों में। इन पुस्तकालयों की उपयोगिता—वे लाखों-करोड़ों मानवों को जो सूचनाएं एवं प्रमोद प्रदान कर चुके हैं—का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

दाता ने स्वयं कहा था, "किसी पुस्तकालय का प्रमुख लाभ यह है कि यह बिना कुछ किए कुछ नहीं देता। युवकों को स्वयं ज्ञानोपार्जन करना होता है; इससे छुटकारा सम्भव नहीं।" आगे फिर उसने कहा, "मैंने अपने अनुभव के आधार पर यह निर्णय किया कि धन का भलाई-भरा तथा योग्यता एवं इसके विकास की आकांक्षा रखनेवाले बालक-बालिकाओं के लिए इतना अधिक कल्याण-जनक कोई उपयोग दूसरा नहीं हो सकता कि उस पंचायत में एक सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित कर दिया जाए जोकि इसको नागरिक संस्था की भांति थामे रहे। मुझे निश्चय है कि उन पुस्तकालयों का भविष्य, कि जिनकी स्थापना का विशेषाधिकार मुझे मिला है, मेरी इस सम्मति की सत्यता को प्रमाणित करेगा। क्योंकि यदि प्रत्येक पुस्तकालय क्षेत्र में से एक भी बालक ने उससे आधा भी लाभ उठा लिया, जितना कि मैंने कर्नल एंडर्सन की पढ़कर पुरानी हुई चार सौ पुस्तकों तक पहुंचकर उठाया था, तो मैं समझ लूंगा कि उनकी स्थापना व्यर्थ नहीं हुई।"

जिस समय न्यूयार्क के पुस्तकालयों का निर्माण चल रहा था तो 'कारनेगी इंस्टीट्यूशन ऑव वाशिंगटन' की स्थापना का क्रम भी चल रहा था—इसका वास्तविक जन्मदिन २८ जनवरी, सन् १८९२ था। इस संस्था को इसके निर्माता ने पच्चीस करोड़ डालर दिए; उद्देश्य था, 'मनुष्य जाति के सुधार के लिए ज्ञान की जांच-पड़ताल, अन्वेषण तथा खोज करना।' थियोडोर रूज़वेल्ट के राज्य-सजिव जोन हे प्रबन्ध-पटल के प्रथम सभापति थे। वाशिंगटन में इस संस्था के आर्थिक समाजशास्त्र, ऐतिहासिक अन्वेषण तथा भूभौतिक विभाग तो हैं ही, अन्यत्र भी संस्था की कई गतिविधियां हैं। आरिजोना रेगिस्तान में वानस्पतिक प्रयोगशाला, फ्लोरिडा-तट से परे टोर्टुगस आइलैंड्स पर समुद्री जन्तु

प्रयोगशाला, कैलिफोर्निया में एक बड़े दूरवीक्षण यन्त्र सहित माउण्ट विलसन आबज़र्वेटरी (वेधशाला), न्यूयार्क स्थित एलबैनी में एक वेधशाला, पहली पैमाइशों व मानचित्रों की भूल सुधारने के लिए महासमुद्रों में चक्कर काटनेवाला छोटा जहाज़—और और भी कितने ही।

इसके पश्चात् कारनेगी ने वह काम हाथ में लिया जो उसके प्रिय लक्ष्यों में से एक बना—अर्थात् हीरो फंड कमीशन। इसकी अवतारण कारनेगी ने १६०४ में पचास लाख डालर के दान से की। पिट्सबर्ग के निकट कोयल की खान में घटी एक दारुण दुर्घटना ने उसका ध्यान इस ओर आकर्षित किया। एक धड़ाके से लोग एक गढ़े में दब गए, और खान के एक पहले अधीक्षक कोई श्री टेलर जो किसी दूसरे काम से उधर पहुंच गए थे, तुरन्त घटनास्थल पर पहुंच गए। उन्हें आशा थी कि उस खान का उनका अनुभव एवं ज्ञान काम आ जाएंगे। उनके प्रसिद्ध नेतृत्व में उत्सुकता से एकत्रित स्वयंसेवकों के एक दल को लेकर वे स्तम्भ से नीचे उतरे। वे बहुत-से बचे हुओं का उद्धार करने में सफल हो गए परन्तु साहसी टेलर को वीरगति प्राप्त हुई।

'इससे अधिक प्रेम मनुष्य में क्या हो सकता है कि वह अपने मित्रों के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दे।' दुर्घटना के पश्चात ये शब्द कई दिन तक कारनेगी के आसपास मंडराते रहे और शीघ्र 'हीरो फंड' का जन्म हो गया। उसने पीछे लिखा, "इस फंड के लिए मेरे मन में पिता की सी भावना पलती है, क्योंकि मुझे किसीने यह सुझाया नहीं। जहां तक मुझे मालूम है, किसीने इसको सोचा भी नहीं; इसलिए यह निश्चय ही 'मेरा ज्येष्ठ पुत्र' है।"

इस निधि का उपयोग केवल शान्ति समय के वीर-वीराङ्गनाओं के लिए किया जाता था, युद्ध के नहीं; इसलिए कुछ लोगों को इसकी उपयोगिता में सन्देह था। इन आलोचकों ने भ्रम से यह मान लिया कि इस निधि का प्रयोजन वीरता के कार्यों को प्रोत्साहन देना—पारितोषक जीतने के लिए साहसिक कार्यों की लोगों का प्रेरणा देना—था। वस्तुतः तो ऐसा कोई विचार दाता के मस्तिष्क में नहीं आया। कारनेगी ने लिखा, "सच्चे शूर पारितोषक का ध्यान नहीं रखते; वे उच्च भावनाओं से भावित होते हैं और केवल अपने संकट-ग्रस्त साथियों की बात सोचते हैं, अपनी नहीं।"

यह आयोग इसके ध्यान में लाई गई घटनाओं की पूरी छान-बीन करके

ही काम करता है। 'मानव जीवन को बचाने के वीरतापूर्ण प्रयास' में जो व्यक्ति घायल हो जाते हैं उनको तब तक आर्थिक सहायता दी जाती है जब तक कि वे पुनः काम करने में समर्थ नहीं हो पाते। मृत्यु हो जाने की दशा में विधवा, बच्चों या दूसरे आश्रितों को तब तक सहायता दी जाती है जब तक कि 'वह पुनः विवाह नहीं करती' और बच्चे आत्मनिर्भर अवस्था तक नहीं पहुंच जाते। यदि कोई वीर घायल भी न हुआ हो तो भी, यदि आयोग ऐसी भेंट को अभीष्ट समझे तो, धन-राशि भेंट दी जा सकती है। 'वीरतापूर्ण कार्य का स्मारक पदक', जिसपर उसका विवरण खुदा होता है, वीर अथवा विधवा अथवा समीपी सम्बन्धी को दिया जाता है।

हीरो फण्ड के सभापतित्व का भार कारनेगी के एक पहले भागीदार चार्ल्स टेलर पर पड़ा—जो उस व्यक्ति से तो किसी भी प्रकार सम्बद्ध नहीं था जिसके बलिदान ने फंड की स्थापना कराई। टेलर पहले से ही पुराने इस्पात मिलों के कर्मचारियों के सहायताकोष का और बहुत देर पहले जिन लोगों ने कारनेगी की अधीनता में काम किया था उन पेनसिलवेनिया रेलपथ के कर्मचारियों के हितार्थ निधि का अध्यक्ष था। इस प्रकार वह अब तीन निवृत्ति निधियों की व्यवस्था, प्रचार से अछूता रह तथा किसी काम के लिए एक पेनी भी न लेकर, उमंग एवं उत्तमता से कर रहा था। उसके पुराने मुखिया का ऐसे व्यक्ति के लिए गहरा अनुराग होना स्वाभाविक था। लीहाई विश्वविद्यालय का भक्त शिष्य टेलर जब कारनेगी को बताने लगा कि विश्वविद्यालय को एक नई प्रयोगशाला की आवश्यकता है तो दानी ने सोचा, "आहा! यहां तो मैं चार्ली को भी दबा सकता हूं।"

उसने लीहाई विश्वविद्यालय के अध्यक्ष ड्रिंकर को लिखा कि यदि न्यासाधिकारी इस प्रयोगशाला का नाम मुझे रखने दें तो मैं धन दे सकता हूं। उत्तर मिला, "निश्चय ही।" और दाता ने 'टेलर हॉल' नाम बता दिया। कुछ समय पश्चात् चार्ली क्षोभ से उद्वेलित हुआ कारनेगी के पास पहुंचा।

उसने विरोध करते हुए कहा, "यह ठीक नहीं, मैं तो भवन का दान नहीं कर रहा और न मैं विशिष्ट व्यक्ति ही हूं, मैं तो निरा तुच्छ शिष्य ही हूं मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे मुझे यह सम्मान मिले।"

कारनेगी ने बात काटते हुए कहा, "तुमने मुझे विचार दिया; तुमने मुझे

अधमरा कर दिया कि मैं भवन के लिए धन प्रस्तुत करूं। मेरी तीन प्रिय योजनाओं की तुमने जो अध्यक्षता निबाही है, और एक भी सेंट वेतन लिए विना एक कील ठोंकनेवाले की भांति तत्परता से उनका काम किया है—उसका तो मैं उल्लेख भी नहीं करता हूं।"

"निश्चय ही, ऐसे छुट-पुट कामों के लिए मैं वेतन क्यों लेता," टेलर ने उत्तर दिया, "यदि आप ऐसे कामों के लिए लाखों डालर दे सकते हैं तो मैं निश्चय ही कुछ घण्टे की सेवा दे ही सकता हूं। यहां वह बात नहीं है। यहां तो मामला एक अज्ञात व्यक्ति के नाम पर विश्वविद्यालय के एक भवन का नाम रखने का है। इससे मेरा उपहास होगा, क्योंकि हर कोई जानता है कि मैंने भवन के लिए कुछ नहीं दिया। जब अपरिचित व्यक्ति द्वार पर यह नाम देखेंगे तो वे पूछेंगे, 'यह जाल में फंसा टेलर कौन है या था' ?"

अपने दोनों हाथों को जेबों में डालकर कारनेगी कुर्सी में पीछे की ओर तब तक झुका रहा जब तक कि चार्ली का जोश ठंडा न पड़ा और उसके पास कहने को कुछ न रहा। तब वह एक अंगुली नचाता, फिर उसपर बरसा, "यदि मैं 'टेलर हॉल' नाम पर अड़ूं तो सम्भव है इसमें तुम्हारा उपहास होता हो, यद्यपि मैं ऐसा नहीं मानता। परन्तु लीहाई के लिए तुम्हें यह त्याग स्वेच्छा से करना ही चाहिए। यदि अहंभाव ने तुम्हें बिगाड़ नहीं दिया है तो तुम्हें इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि तुम्हारे नाम का तुम्हारी कुलमाता की सहायता में कितना उपयोग होता है। कुछ भी हो टेलर, इसमें नाम की तो विशेष रुकावट नहीं है। यह तुम्हारा कुत्सित अहम्भाव है जो रुकावट डाल रहा है। तुम्हें इसे जीतना चाहिए⋯"

"ओहो ! भुलावा देने की इन चालाकियों को रहने भी दें सरदार !" टेलर ने शरमाते हुए विरोध किया। "आप जानते हैं आप वास्तविक प्रश्न को तोड़-मरोड़ रहे हैं।"

"अच्छा तो तुम अपना निर्णय कर लो," कारनेगी ने हाथ हिलाते हुए कहा। "तुम या तो टेलर नाम की बलि दो या लीहाई की; जैसी तुम्हारी इच्छा हो, परन्तु 'यदि टेलर नहीं तो हाल भी नहीं' यह है मेरी अन्तिम शर्त, चार्ली।"

अन्त में टेलर ने हार मान ली।

कारनेगी ने लिखा, "दर्शक पिछले दिनों में भवन को देखें और टेलर

कौन है, यह अचम्भे से पूछें तो निश्चय मानें कि वह लीहाई का एक भक्त पुत्र था जो कि मानव-सेवा के दिव्य सन्देश का केवल मुंह से उपदेशक नहीं अपितु कार्य से उपदेशक था और सर्वोत्तम मानवों में से एक था।"

आदिम हीरो फंड कमीशन का क्षेत्र केवल संयुक्त राज्य, कनाडा, और न्यूफाउण्डलैंड थे। परन्तु १६०८ में कारनेगी ने ग्रेट-ब्रिटेन तथा आयरलैंड के लिए एक हीरो फण्ड स्थापित किया। और पीछे उसने जर्मनी, बेल्जियम, नीदरलैंड्स, फ्रांस, स्वीडन, नोर्वे, स्विट्जरलैण्ड, इटली तथा डेन्मार्क के लिए भी हीरो फण्ड स्थापित किया; इसके लिए उसे ग्रेट ब्रिटेन के किंग एडवर्ड षष्ठ, जर्मनी के कैसर विलियम द्वितीय, तथा अन्य बहुत-से उच्च-पदस्थ व्यक्तियों से प्रशंसा-पत्र मिले।

कई वर्ष तक उसने प्रतिवर्ष एक बड़ा दान-फंड स्थापित किया, बीच में बहुत-सा सुवर्णदान भी चर्च के बाजों, पुस्तकालयों, कालेज-भवनों, प्रयोगशालाओं, प्राध्यापक पीठों के अतिरिक्त चर्च पीस यूनियन को बीस लाख डालर से अधिक, हेग में महान शान्ति महल के निर्माण के लिए पन्द्रह डालर, इन्टरनेशनल ब्यूरो ऑव अमेरिकन रिपब्लिक्स' के लिए आठ लाख पचास हजार डालर। कुछ संकुचितहृदय, दकियानूसी, हाईलैण्ड स्कॉच प्रेसबेटेरियन, जो चर्चों में वाद्यों को सदा 'अधार्मिक' मानते थे, शिकायत करते थे कि आन्द्रा कारनेगी चर्चों को वाद्ययन्त्र प्रदान कर चर्च-पूजा को भ्रष्ट कर रहा है; मानव-वाणी ही एकमात्र पवित्र संगीत है; 'कुण्डभर सीटियां' नहीं। ऐसी बहुत-सी चर्चा सुनने पर कारनेगी ने स्कॉटलैण्ड को लिखा, "मुझपर इस चर्चा का यह प्रभाव पड़ा है कि मैं अनुभव करता हूं कि मेरे इस पाप में मेरा कोई भागीदार होना चाहिए। अब से मैं आग्रह करूंगा कि वाद्य का आधा व्यय सभा करे।" इसपर स्काटिश हाईलैण्ड में वाद्यों की मांग कम हो गई।

कालेजों को प्रदान की गई भेंटों का नाम वह किसी ऐसे व्यक्ति के नाम पर रखना पसन्द करता था जो या तो उसका प्रशंसा-पात्र होता अथवा जिसकी मित्रता या स्मृति उसे प्रिय होती। ऐसे दानों में ब्राउन विश्वविद्यालय में जोन हे लाइब्रेरी, हैमिल्टन कालेज में ऐलिहू रूट फाउण्डेशन, वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी में हन्ना चेयर और वैल्सले में फ्रान्सेस क्लेवलैंड लाइब्रेरी थे। ओहायो स्थित केन्योन कालेज में अर्थशास्त्र की सेंटन चेयर, राष्ट्रपति लिंकन के युद्ध-सचिव

एडविन एम० सैंटन की स्मृति में स्थापित की गई थी ; बहुत-से लोग उसको उजड्ड एवं झक्की समझते थे, परन्तु इस्पात-नरेश को वह पिट्सबर्ग के वकीलों में खूब याद था जो एण्ड्र्यू कारनेगी नामक एक नन्हे तार-संदेशक बाल पर सदा प्रसन्न एवं दयालु रहा था।

उसका सबसे अधिक प्यारा दान वह था जिससे उसके जन्म-स्थान डन्फर्मलिन को चिर-अभीप्सित उद्यान तथा इसके पुरातन ऐतिहासिक भवन मिले। एण्ड्र्यू की आदिमतम स्मृतियों में वे कहानियां थीं जो उसके बड़ों ने अपने नागरिकों के अपने प्राचीन वंशानुगत पुरातन ऐबी (मठ) तथा इसके मैदानों एवं महल के विध्वंसों को हस्तगत करने अथवा उनमें कुछ अधिकार प्राप्त करने के लिए किए गए संघर्ष के विषय में सुनाई थीं। ये स्थान कई पीढ़ियों से पिटनक्रिफ के (लेड्'स) ज़मींदार—हंटों के अधिकार में चले आते थे। विवादास्पद क्षेत्र में पिटनक्रिफ घाटी थी—रमणीय, चट्टानों से भरी, साठ एकड़ से अधिक क्षेत्र की वृक्षोंवाली खोह, जिसके सिरे पर नगर की दो मुख्य सड़कें थीं। शिशु एण्ड्र्यू को यह घाटी इतनी सुन्दर प्रतीत होती थी कि वह सोचा करता था कि स्वर्ग इस-सरीखा ही होगा। परन्तु वह इसे बाहर से ही देख पाता था, क्योंकि इसमें उनका प्रवेश वर्जित था। उसका नाना हंटों के विरुद्ध हुए एक अभियान का नेता था और उसके मामा बेली मोरिसन को न केवल अदालती युद्ध में घसीटा गया परन्तु उसपर यह आरोप भी लगाया गया कि उसने ज़मींदार द्वारा लगाई गई एक बाड़ को उखाड़ फेंकने के लिए कुछ दलबद्ध लोगों को भड़काया। इस पर लेर्ड (ज़मींदार) ने आदेश दे दिया कि किसी मोरिसन को घाटी में प्रविष्ट न होने दिया जाए—और मोरिसन नाम में उनके सम्बन्धी कारनेगी भी सम्मिलित थे। इसलिए मौसा लाडर किसी रविवार की दुपहर को डौड तथा नैग को घाटी के किनारे ही सैर करा पाते थे और एक नियत ऊंचे स्थान पर ही ले जा पाते थे जहां से वे इसके भीतरी भाग के दर्शन कर सकते थे।

१६०० के लगभग एक समय वह आया कि डन्फर्मलिन निवासी डा० जोन रौस ने—जो कभी धर्मार्थ एवं अन्य संस्थाओं में कारनेगी के प्रतिनिधि रहे थे—कारनेगी को एकान्त में कहा, "मैंने सुना है कि कुछ ऐसे संकेत मिले हैं कि कर्नल हंट डन्फर्मलिन स्थित अपनी जायदादों को बेच दे।"

"बहुत अच्छा !" कारनेगी का उद्गार था। "मैं उन्हें खरीद लूंगा।"

"परन्तु जो दाम वह मांग रहा है वह बहुत ऊंचा है," रौस ने आपत्ति प्रकट की।

उन्होंने इस विषय में आगे चर्चा की और निश्चय हुआ कि डा० रौस एक पक्के स्कॉच की सावधानी बरतता हुआ, परिस्थिति की टोह रखे। जब वर्ष-भर या कुछ अधिक समय मौखिक पटेबाजी में बीत गया तब १९०२ की पतझड़ में एक दिन डा० रौस कारनेगी से भेंट करने आए।

उसने कहा, "मेरी सम्मति तो यह है कि डन्फर्मलिन के पूर्व निवासी एडिनबरा के श्री शा इस सौदे के सम्बन्ध में कर्नल हण्ट के एजेंटों से बातचीत छेड़ें।"

"हां," कारनेगी बोला, "उनको यह जतला दें कि उनका ग्राहक मुझसे सौदा तय नहीं करेगा, तो पछताएगा। उन्हें कोई दूसरा ऐसा खरीदने का इच्छुक क्रेता नहीं मिलेगा और सम्भव है कि मेरा ही मन बदल जाए अथवा मेरी मृत्यु हो जाए।"

"टोम शा ही अब इसकी चौकसी रखना जाने," रौस ने कहा। इस बात-चीत के कुछ दिन पश्चात् ही कारनेगी-परिवार न्यूयार्क को चल पड़ा।

कई सप्ताह बीत गए और एक दिन शा का तार मिला—"कर्नल हंट पैंतालीस हज़ार पौंड पर मान जाएगा, क्या मैं सौदा तय कर लूं ?"

इसके उत्तर में कारनेगी ने उत्तर दिया—"हां, यदि यह रास की शर्तों पर हो।"

कुछ दिन और बीत गए; तब एक दिन क्रिसमिस ईव को तीसरे पहर के समय शा का दूसरा तार मिला—"पिटनक्रिफ़ के लेर्ड का स्वागत !"

इस तार ने कहानी कह दी। लेर्ड बोल उठा, "मुझे इससे बढ़िया क्रिसमस भेंट कब मिल पाती। मैं पृथ्वी के सर्वोत्कृष्ट सम्मान का भाग्यवान स्वामी हूं। राजा ही है, वह केवल राजा ही तो है, उसके अधिकार में न किंग माल्कम का बुर्ज है, ना ही सेंट मार्गरेट का मन्दिर और न पिटनक्रिफ घाटी ही। उस बेचारे के पास कुछ भी नहीं, मेरे पास सब कुछ है। यदि कभी वह डन्फर्मलिन आएगा तो मैं—बड़ी नम्रता से—इस सबकी प्रसन्नतापूर्वक सैर कराऊंगा।"

न्यासधारियों को (जिनका अध्यक्ष निश्चय ही डा० रौस था) लिखे समर्पणपत्र में उसने बताया कि उसका उद्देश्य है : 'डन्फर्मलिन की श्रमिक जनता के एकरस जीवनों में 'मधुरता एवं मृदुलता' लाना उनको, विशेषत: युवकों को, एक प्रकार का आकर्षण, हर्ष, जीवन की उन्नायक परिस्थिति प्रदान करना, जोकि दूसरे स्थान पर उन्हें प्राप्त न होते; यह कि मेरी जन्मभूमि का बालक, अपने पिछले जीवन में जब (विगत जीवन का) सिंहावलोकन करे, चाहे वह घर से कितनी ही दूर तक क्यों न भटक चुका हो, अनुभव करे कि यहां का निवासी होने के ही कारण उसका जीवन अधिक सुखी तथा उत्तम बन गया है।'

जायदाद के भली भांति विकास तथा पोषण के लिए निधि स्थापित करने के लिए न्यासधारियोंको जब उसने पच्चीस लाख डालर सौंपे तो वे चौंक पड़े। पीछे दानराशि में वृद्धि कर देने पर यह राशि साढ़े सैंतीस लाख डालर हो गई। किसी भी सार्वजनिक सम्पत्ति की इतनी बढ़िया देखभाल कभी नहीं की गई और कोई भी जनता में इससे अधिक प्रिय न हुई।

कारनेल विश्वविद्यालय का न्यासधारी होने के नाते कारनेगी को ज्ञात हो गया कि शिक्षकों के वेतन बहुत कम हैं। उसने बड़ी अधीरता से कहा, "सब व्यवसायों में सम्भवतः अध्ययन व्यवसाय ऐसा है कि जिसमें वेतन की मात्रा सम्भवतः सबसे अधिक अनुचित, सबसे कम तो है ही, यद्यपि इसकी गिनती उच्चतम वेतन देनेवालों में होनी चाहिए। बच्चों को शिक्षित करने में जीवन खपा देनेवाले शिक्षित वर्ग को केवल भोजन-मात्र ही तो मिलता है।" इसलिए उसने पांच प्रतिशत के बौंडों में एक करोड़ डालर की पूंजी लगाकर 'अध्यापन की उन्नति के हेतु कारनेगी फाउण्डेशन' की अवतारणा १६ अप्रैल, १९०५ को की। इसका उद्देश्य विश्वविद्यालय तथा कालेज के अध्यापकों के लिए विश्रान्ति-वेतन तथा उनकी विधवाओं के लिए पेन्शन की व्यवस्था करके संयुक्त राज्यों और कनाडा में उच्च शिक्षा को प्रोत्साहन देना था।

न्यासधारी-मण्डल का निर्माण विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के पच्चीस अध्यक्षों से किया गया था; इनमें से बहुत-से पहले ही उसके मित्र थे; और जब वे व्यवस्था के लिए कारनेगी भवन में एकत्र ए तो उसके मन में एक विचार यह आया कि मेरे मित्रों की सूची में कितने ही नाम बढ़ाए जा सकते हैं जो

मेरे आदर तथा स्नेह के पात्र बनेंगे। उसने अपने मित्रों की संख्या को अत्यधिक कभी नहीं माना।

दो वर्ष पश्चात् उसने फाउण्डेशन को पचास लाख डालर और दिए, फिर साढ़े बारह लाख डालर दिए और १९१८ ई० में कारनेगी कार्पोरेशन ने एक करोड़ बीस लाख डालर प्रदान किये। स्थापना के प्रथम पच्चीस वर्षों में उक्त निधि ने ग्यारह सौ अध्यापकों तथा पांच सौ विधवाओं को भत्तों एवं वृत्तियों के रूप में दो करोड़ डालर वितरण किए। जब यह पाया गया कि कारनेगी की 'निधि' और जोन डी० रॉकफैलर का महान 'जनरल एज्यूकेशन बोर्ड' कभी-कभी एक-दूसरे की गतिविधियों को दुहराती हैं तो श्री रॉकफैलर ने कहा, "क्यों न आप भी हमारे बोर्ड के एक सदस्य बन जाएं? तब आपको ज्ञात रहेगा कि दोनों क्या कुछ कर रहे हैं और इस प्रकार अतिव्यापन को रोका जा सकेगा।" दोनों ही निधियों के हितार्थ एण्ड्रयू कारनेगी ने इस बात को मान लिया।

प्रसिद्ध सम्पादक एवं आलोचक तथा कारनेगी के एक घनिष्ठ मित्र, रिचर्ड वॅटसन गिल्डर ने एक बार कारनेगी के विषय में लिखा, "ए० का० में असाधारण कार्यशक्ति एवं तर्कशक्ति है। उसकी विचारधारा वस्तुतः उदार एवं भविष्यसूचक है। और यदि मैं भूल नहीं करता तो उसका चरित्र सचमुच नैतिक है। वह पूर्ण तो नहीं है, परन्तु अत्यन्त आकर्षक तथा विशिष्ट है, एक सच्चा प्रजातन्त्रवादी, उसके परोपकार के कार्यों का आधार सिद्धान्त एवं चरित्र हैं।" एक दूसरे अवसर पर उसने लिखा, "एण्ड्रयू कारनेगी सचमुच एक महाप्राण पुरुष है—नाटकीय, ज्ञानपूर्वक काम करनेवाला, उदार, मनमौजी, कभी-कभी अपने निर्णयों को दूसरों पर थोपने में लगभग निर्दय और तब फिर मृदु, स्निग्ध, भावुक, सदा कल्पनाशील, असाधारण तथा उदार एवं दूरदृष्टि। बॉसवेल से टक्कर लेने की उसमें पूरी क्षमता है; परन्तु मैं तो उसके पीछे पड़ा हूं कि वह स्वयं अपना बॉसवेल बने। उसमें अनेक असंगतियां हैं, परन्तु साथ ही वह उच्च विचारों का व्यसनी है; मानव-भ्रातृ-भावना, राष्ट्रों में परस्पर शान्ति, धार्मिक शुचिता……"

कारनेगी असंगत रहा हो पर उसने सदा अपने सिद्धान्तों को कार्य में परिणत किया तो भी उसका दृष्टिकोण शायद कभी ही हठी रहा हो।

जब वह अपने किसी बड़े न्यास का संगठन सम्पन्न कर चुकता और उसके सामान्य प्रयोजन की व्याख्या कर देता तो प्रायः इसकी व्यवस्था का भार शासक-मण्डल की विवेक-बुद्धि पर छोड़ देता था। और उसने अपनी कई मनभावनी योजनाओं को तब छोड़ दिया जब उसके आदरणीय व्यक्तियों ने उसको निश्चय दिला दिया कि वे अव्यावहारिक हैं। उदाहरण के लिए 'कौनफेडरेट बांड्स' की बात लें। १८६५ में गृह-युद्ध की समाप्ति पर पराजित अमरीकी कौन-फेडरेट राज्य आर्थिक तथा वित्तीय दृष्टि से इतने क्षीण हो गए थे कि उन्हें अपने सरकारी बौंडों का प्रत्याख्यान करना पड़ा, इनमें से बहुत-सों के पानेवाले यूरोप निवासी थे। जब दक्षिणी राज्य पीछे से यूनियन में पुनः प्रविष्ट कर लिए गए तो कारनेगी ने—यूरोप में हमारे लिये सद्भावना उत्पन्न होने देने के प्रयोजन से--एक बार एक प्रस्ताव रखा कि इन सब बौंडों का धन चुकता कर दिया जाए। परन्तु वकीलों तथा वित्तशास्त्रियों और राजनयिकों ने उसे विश्वास दिला दिया कि ऐसा करना सद्भावना के स्थान पर अधिक कटुता किए बिना, असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होगा—इसलिए उसने बड़ी अनिच्छा से अपना विचार त्याग दिया।

कुछ वर्षों के अन्तराल पर १६०६ में कारनेगी तीसरी बार सेंट एण्ड्र्यू का लार्ड रैक्टर चुना गया। उस ग्रीष्म ऋतु में 'प्रिंसिपल-सप्ताह' के अवसर पर कारनेगी-परिवार में एक अमरीकी अतिथि विद्यमान था—अर्थात् रैडक्लिफ कालेज की डीन तथा बेंजामिन फ्रैंकलिन की पड़पोती कुमारी एग्नेस अर्विन। फ्रैंकलिन की इस वंशजा से स्किबो में भेंट करके सेंट एण्ड्र्यूज़ के प्रिंसिपल डोनल्डसन, और वस्तुतः सारे स्कॉच अतिथि, बहुत प्रभावित हुए; क्योंकि १७५६ में 'डाक्टर ऑव लाज़' की अपनी पहली मानद पदवी सेंट एण्ड्र्यूज़ ने फ्रैंकलिन को प्रदान की थी।

पीछे उसी वर्ष फिलाडेलफिया में फ्रैंकलिन के द्वितीय जन्म-शताब्दि समारोह के अवसर पर सेंट एण्ड्र्यूज़ ने कुमारी अर्विन के लिए वही उपाधि भेजी जो इससे १४७ वर्ष पूर्व उसके परदादा को प्रदान की थी और इस उपाधि को प्रदान करने तथा लेनेवाली को आवरण पहनाने के लिए अपने पदाधिकारी लार्ड रैक्टर एण्ड्र्यू कारनेगी को नियुक्त किया।

अब 'ए. का.' जब-तब आपने आत्मचरित के सन्दर्भ तथा अध्याय लिखने

लगा था—जिससे यह याद करके उसे दुःख होता था कि उसके कितने ही प्रिय मित्र तथा सम्बन्धी जिनका कि वह उल्लेख कर आया है, अब नहीं रहे। एक बार वह बोला, "अब मैं इस्पात मिलों का दौरा करने में असमर्थता अनुभव करता हूं। इससे मुझे उन बहुत-सों की स्मृति हो आएगी जो पहले चले गए हैं। वहां मेरे आदिम मित्रों में से बहुत कम पहले की भांति गले मिलने को बचे होंगे। वहां अब केवल एक या दो ही वृद्ध बचे हों जो मुझे 'एण्डी' पुकारेंगे।"

: १४ :

जीवन-संध्या

१९०७ में 'न्यूयार्क पीस सोसाइटी' का आयोजन इस आशा से किया गया कि युद्ध को क्रमशः दूर कर देने की दिशा में यह कुछ कार्य कर सकेगी। एण्ड्र्यू कारनेगी की इस कार्य में अगाध लगन जानकर इस संस्था ने उसको इसके प्रधान-पद को स्वीकार करने का अनुरोध किया।

"नहीं, नहीं !" वह बोला। "मैं हृदय तथा आत्मा से आपके साथ हूं—आप जानते हैं—और मुझसे जहां तक बन सकेगा आपकी सहायता करूंगा—परन्तु 'पीस सोसाइटी' की अध्यक्षता इसलिए स्वीकार नहीं करता कि मैं दूसरे कामों में बहुत अधिक व्यस्त हूं। मुझे लगेगा कि मैं अपना अधिकांश समय इसमें लगाऊं और मैं वह कर न पाऊंगा।"

परन्तु जब समिति के सदस्य चले गए तो उसकी अन्तरात्मा ने उसे कुरेदा, 'क्या मैं सचमुच इतना व्यस्त हूं जितना व्यस्त कि मैं अपने-आपको समझता हूं ?'—उसने मन ही मन पूछा। 'कुछ भी हो, मैं किस काम का हूं ? यदि मैं शान्ति-कार्य के लिए भी आत्मबलि नहीं दे सकता तो फिर किसके लिए बलि चढ़ूंगा ?'

अभी कुछ ही दिन बीते थे कि कुछ व्यक्ति, जिनमें पहले आए कुछ व्यक्ति भी थे, डा० लाईमैन के नेतृत्व में भेंट करने आए। कारनेगी उनके सन्देश को ताड़ गया।

"एक भी शब्द मत कहिए," इन शब्दों में इसने उनका अभिवादन किया। "मैं समझता हूं आपका यहां आने का प्रयोजन। उस दिन से ही, जबकि मैंने आपको मना कर दिया था, मेरा अन्तरात्मा मुझे कचोटता रहा है। मुझे इसका खेद है। मैं आपकी अध्यक्षता स्वीकार करूंगा और अपने कर्त्तव्य का पालन करूंगा।"

आगामी वसन्त में सोसाइटी ने न्यूयार्क में शान्ति-सम्मेलन बुलाया; इसमें

यूनियन के अधिकांश राज्यों के प्रतिनिधि तथा विदेशों से बहुत-से विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित हुए। परन्तु यह स्पष्ट हो गया कि मनुष्य जाति में शान्ति की स्थापना करने के लिए सभाओं, व्याख्यानों, प्रस्तावों से अधिक कुछ करना आवश्यक है। अपनी समझ के अनुसार कोई अन्य साधन न होने से, उसने अपने पास उपस्थित सर्वशक्तिशाली साधन—धन—का प्रयोग करने की ठानी। यह उसके दूसरे लक्ष्यों की पूर्ति में सफल सिद्ध हो रहा था; यदि इसे व्यय करने से शान्ति स्थापित हो सके तो वह इसे पानी की तरह बहा देगा।

इसलिए उसने १४ दिसम्बर, १९१० को अपने एकमात्र असफल प्रतीत हुए आयोजन—'कारनेगी एण्डोमैंट फॉर इन्टरनेशनल पीस' (सार्वदेशिक शान्ति की कारनेगी दाननिधि) की अवतारणा की। इसके न्यासधारी-मण्डल की अध्यक्षता के लिए उसने ऐलिहू रूट को चुना—इसे वह सर्वाधिक श्लाघनीय मानता था। और कार्यक्रम बनाने का भार पूर्णतया न्यासधारियों की सूझ-बूझ पर छोड़ दिया।

वे जो कुछ कर सकते थे, किया। उन्होंने तीन विभागों में कार्यक्रम चलाया। सम्पर्क एवं शिक्षा विभाग सार्वदेशिक नीतियों के सम्बन्ध में सूचनाएं एकत्र करने के लिए संसार-भर में अपने प्रतिनिधि रखता है और यह सार्वदेशिक सद्भावना के प्रसार का यत्न करता है। राष्ट्रों में विशिष्ट विद्वानों तथा लेखकों के परस्पर आदान-प्रदान की व्यवस्था करता है तथा पहले ही विद्यमान शान्ति-संस्थाओं को सहायता प्रदान करता है। अर्थशास्त्र एवं इतिहास का विभाग उन राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करता है जो शान्ति व युद्ध को प्रभावित करती हैं और उनके सम्बन्ध में कार्रवाई करने की पद्धति का सुझाव देता है। सार्वदेशिक कानून विभाग राष्ट्रों के कानून को—जो, अन्त में, केवल नियमों अथवा समझौतों की संस्था है, राष्ट्रों में उठनेवाले सब विवादों पर लागू करने का यत्न करता है।

लार्ड मॉर्ले के मत में, उसके मित्र की 'एण्डोमैंट फॉर इण्टरनेशनल पीस' संस्था की फलोत्पादकता में कोई असाध्य आशावादी ही श्रद्धा रख सकता था और कारनेगी के भाग्य में एक दुःखद प्रत्यक्ष पाठ से यह सीखना बदा था कि कोरा तर्क एवं प्रचार ही सार्वदेशिक युद्ध के विनाश को शीघ्र नहीं ला सकते।

कारनेगी का विश्वास था कि 'हम परस्पर इसलिए समाकृष्ट हैं कि हमारे

विरोध परस्पर लाभदायक हैं। मैं आशावादी हूं, अपने दही को मीठा ही समझता हूं। वह निराशावादी है; भावी संकटों को सचेत होकर ही नहीं अन्धकारपूर्ण दृष्टि से देखता है और कभी-कभी निस्सार कल्पनाएं भी कर लेता है। संसार मुझे चमचमाता दीख पड़ता है और पृथ्वी प्रायः वास्तविक स्वर्ग ही— मैं कितना सुखी और अपने स्निग्ध भाग्य का अतिशय आभारी हूं। वह कभी ही किसी वस्तु के पीछे उन्मत्त होता होगा; उसका निर्णय सदा विवेकपूर्ण होता है और उसकी दृष्टि सदा सूर्य के धब्बों पर रहती है।'

दूसरी ओर मॉर्ले को अपने मित्र की आशावादिता और उत्साह रुचते थे, चाहे वह उसके इस गुण से सदा सहमत नहीं हो पाता था। उसने कहा था, "संसार के महान पदार्थों—ज्ञान का प्रसार, आविष्कार, प्रकाश, सामाजिक सम्बन्धों में सुधार, प्रतिभाशालियों को समान अवसर, शान्ति के लिए उत्कट अनुराग—के प्रति उसकी उदार भावना से सहमत होना ही उचित है। ये श्लाघनीय वस्तुएं हैं, कथन में विद्यमान अतिशयोक्ति के पुट को ठीक कर लेना सरल है।"

शान्ति-स्थापना के लिए किए गए उसके प्रयत्न को लेकर बहुत-से देशों ने उसका सम्मान किया। फ्रांसीसी सरकार ने उसे 'नाइट कमाण्डर ऑफ द लीजोन ऑव ऑनर' बनाया; हॉलैण्ड से 'ग्राण्ड क्रॉस ऑर्डर ऑव ओरेञ्ज-नस्साऊ' मिला; डेनमार्क ने 'ग्राण्ड क्रॉस ऑर्डर ऑव डेनब्रोग' प्रदान किया और इक्कीस अमरीकी प्रजातन्त्रों ने उसे सुवर्ण पदक प्रदान किए। बीसियों विश्वविद्यालयों तथा कालेजों से उसे सम्मानित 'डॉक्टर' उपाधियां मिलीं और वह एक सौ नब्बे से अधिक संस्थाओं, विद्वत् परिषदों तथा क्लबों का सदस्य था।

वह अपनी वसीयत आप लिख रहा था और इसमें अमरीकियों के हितार्थ एक विशाल योजना चलाने के लिए एक न्यासनिधि की स्थापना की व्यवस्था कर रहा था। परन्तु जब उसने एक दिन इस व्यवस्था का उल्लेख अकस्मात् ही एलिहू रूट से किया तो रूट ने निषेध किया।

"क्या आप कई वर्ष पहले कही हुई अपनी ही बात भूल गए ? आपने कहा था कि अपनी वसीयत में किसी भावी कार्य की व्यवस्था करना एक संशय की बात रहती है, क्योंकि यह प्रायः व्यवहार में अथवा अदालतों में विफल हो जाती है। सेमुअल जे० टिल्डन की की गई भूल को मत दुहराइए। उसने अपनी

सम्पत्ति से ठीक वही काम करना चाहा था जो आप करना चाहते हैं और अदालत में जाकर यह पलट गई।"

रूट ने आगे कहा, "वसीयतें पर्याप्त अस्थिर माध्यम होती हैं। अभी अपने जीते-जी अपने न्यास का संगठन क्यों नहीं कर लेते ? और जो कुछ आपके पास है उसका अधिकांश इसमें जमा कर अपने जीते-जी इसको सुचारु रूप से चलता करें। तब आपको न केवल यह निश्चय रहेगा कि यह ठीक से चल रहा है, अपितु यह देखकर हर्ष भी प्राप्त होगा कि यह आपके अभीष्ट कार्यों को सम्पन्न कर रहा है।"

उसने रूट की सलाह मान ली और १९११ में न्यूयार्क विधान सभा ने ढाई करोड़ की पूंजी से 'कारनेगी कॉर्पोरेशन ऑव न्यूयार्क' की स्थापना का अधिकार-पत्र दिया। यह पूंजी 'यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन' के पांच प्रतिशत प्रथम गिरवी बॉण्डों में लगाई गई थी। न्यासधारी नियुक्त होने के लिए आमन्त्रित विशिष्ट व्यक्तियों की एक बैठक उसी वर्ष ग्यारह नवम्बर को उसके घर पर हुई और उसने उनको न्यास के प्रयोजन के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य पढ़कर सुनाया ; "शिल्पकला-विद्यालयों, उच्च शिक्षा-संस्थाओं, पुस्तकालयों, वैज्ञानिक अन्वेषणों, वीर-निधियों तथा उपयोगी प्रकाशनों को सहायता देकर तथा उन सब दूसरे द्वारों एवं साधनों द्वारा जो इस उद्देश्य के लिए समय-समय पर उपयोगी प्रतीत हों, संयुक्त राज्यों की जनता में ज्ञान एवं सद्भावना का विकास व प्रसार करना।"

अभिप्राय यह था कि सहायता की आवश्यकता पड़ने पर यह निधि दूसरी निधियों को धन प्रदान करे, साथ ही अमरीका में बौद्धिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए चलाए गए किसी भी अन्य आन्दोलन की सहायक हो। परन्तु इस कॉर्पोरेशन की स्थापना के तुरन्त पश्चात् ही उसे अनुभव हुआ कि उसका आदिम दान अपर्याप्त है। वह जितने कार्य के सम्पन्न होने की आशा रखता है उसके लिए अधिक और बहुत अधिक धन चाहिए। तथापि अब सीमा यहां तक पहुंच गई थी कि उसके पास अपनी पत्नी तथा पुत्री के लिए बॉंडों और नकद रूप में केवल साढ़े बारह करोड़ डालर बच गए थे। क्या वे पांच या दस करोड़ डालर कॉर्पोरेशन को देने के लिए सहमत हो जाएंगी ? श्रीमती कारनेगी ने क्षण-भर भी बिना ननुनच के 'हां' कह दिया और मार्गरेट को तो, जो अभी

किशोर अवस्था में ही थी, पिता के किए पर पूरा सन्तोष था। इसलिए १६१२ में कार्पोरेशन का न्यास बढ़ाकर साढ़े बारह करोड़ डालर कर दिया गया। एक वर्ष में मानव हितैषी ने तेरह करोड़ चार लाख तीन हजार डालर दे डाले थे।

कारनेगी को वर्षों से इस बात का रोष चला आता था कि कांग्रेस अपने भूतपूर्व राष्ट्रपतियों और उनकी विधवाओं के लिए कोई पूर्व व्यवस्था नहीं कर पाती। उसको यह अकृतज्ञता तथा अशोभनीय प्रतीत होता था कि उन्हें प्रजा-तन्त्र में सर्वोच्च सम्मान तथा भारी उद्यम एवं उत्तरदायित्व के पद पर चढ़ाकर फिर उन्हें वह विश्रामवृत्ति देना स्वीकार नहीं करते जिससे कि वे अपने निवृत्ति-काल को प्रतिष्ठा एवं निश्चिन्तता से बिता सकें। उसने प्रस्ताव किया कि व्हाइट हाउस छोड़ देने के पश्चात् जब तक सरकार उनके लिए कोई व्यवस्था नहीं करती उन्हें प्रतिवर्ष पच्चीस हज़ार डालर कॉर्पोरेशन दे।

परन्तु जब उसकी योजना प्रकाशित हुई तो कइयों ने इसका विरोध किया। उनका कहना था कि यह अनुचित है कि जिस कर्त्तव्य का भार सरकार को वहन करना चाहिए उसको एक नागरिक निजी रूप से अपने कन्धों पर ले। सच तो यह है कि इसपर वे लज्जित थे—उन्हें डर था कि कहीं इस प्रकार संसार की दृष्टि में राष्ट्र अपमानित न हो। इसलिए कारनेगी ने अनिच्छापूर्वक इस विचार को छोड़ दिया अथवा एक प्रकार से स्थगित कर दिया, क्योंकि उसने, जैसाकि हम आगे देखेंगे, इस विचार का त्याग कभी नहीं किया।

१६११-१२ की शरद् ऋतु में उसके बचपन के साथी टोम मिलर की मृत्यु से उदासी छाई रही। कुछ महीने पूर्व ही कारनेगी ने अपनी आत्मकथा में लिखा था कि "अभी वह जीवित है और इसपर अपने प्रियतम स्वभाव के मिठास एवं प्रकाश को उंडेलता रहता है, एक ऐसा मित्र जो ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है त्यों-त्यों अधिक मूल्यवान होता जाता है।" अब टोम चला गया था तथा एक दूसरी पंक्ति जोड़ दी गई थी—"अब से जीवन में कुछ कमी अनुभव होने लगी है—बहुत-सी कमी, प्रारम्भ के दिनों में मेरा पहला भागीदार, वृद्धावस्था में मेरा प्रियतम मित्र, क्या मैं वहां जा सकूंगा जहां वह है, वह कोई भी स्थान क्यों न हो।"

अपनी बड़ी-बड़ी निधियों तथा संस्थाओं पर उसको कितना ही गर्व क्यों न

रहा हो, उसको हार्दिक प्रेम तो अपनी निजी पेंशन सूची से था। जैसी आशा थी, उसे प्रतिवर्ष हज़ारों पत्र ऐसे मिलते थे जिनमें आर्थिक सहायता की प्रार्थना होती थी। स्वभावतः उसके पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि इनमें से कितने लेखक ठग हैं और कितनी कहानियां बनावटी। परन्तु वह ध्यान से पत्र-व्यवहार को पढ़ता और जो बहुत-से सच्चे प्रतीत होते उन्हें चुन लेता और उनपर अपने सचिव पोवण्टन के नाम टिप्पणी चढ़ाता जाता। 'इसको पचास डालर प्रति मास की सूची में रखो' अथवा 'देखना इस वृद्धा को सुविधापूर्ण जीवन-यापन के लिए कोई कमी न रहे।' उसकी पेंशन सूची में अति निश्चित रूप से वे व्यक्ति सम्मिलित होते थे जिनको कि वह बहुत पिछले समय से जानता था अथवा उसके शैशव या यौवन की स्मृति के किसी बन्धन से बंधे थे। कुछ ने तो उससे सहायता की प्रार्थना की थी परन्तु अधिकांश का या तो दूसरों ने उल्लेख किया था और या उसने स्वयं उनकी खोज की थी। इनमें से एक उस व्यक्ति की पुत्री थी जिसने उस (कारनेगी) को पहली नौकरी दी थी। एक कभी का समृद्ध, पिट्सबर्ग का व्यापारी था, जिसको नन्हा एण्डी कभी तार वितरित कर चुका था, परन्तु जो अब निर्धन तथा जरा-जीर्ण हो गया था, ऐलेगेनी में पुरातन स्वीडन बोर्गिन गायक-मण्डली का एक सदस्य; दो वृद्धा कुमारिकाएं, क्योंकि 'मैं जब प्रफुल्ल विनोदी नवयुवक था तो उनके साथ नृत्य किया करता था।'

यह जानते हुए कि समय बीतने पर इस सूची के लिए प्रचुर धनराशि की आवश्यकता पड़ेगी—उसकी मृत्यु से पूर्व इस सूची में पांच सौ से अधिक नाम थे—कारनेगी ने पचास लाख डालर की स्थायी निधि स्थापित कर दी जिससे कि वृत्ति-भोगियों को जीवन-पर्यन्त वृत्ति अवश्य दी जाती रहे।

और स्कॉटलैण्ड में भी डन्फर्मलिन निवासी ट्रस्टी डा० रौस—अब सर जोन रौस—के पास एक सूची थी ही। इस सूची में रौबर्ट बर्न्स की पड़पोती तथा कारनेगी के बचपन के प्रिय मित्र वृद्ध डन्फर्मलिन निवासी डाकिया की लड़की के नाम भी थे।

एक दिन 'कारनेगी कॉर्पोरेशन ऑव न्यूयार्क' के अध्यक्ष डा० हेनरी प्रिचैट को कारनेगी-भवन में मिलने के लिए बुलाया गया। जब वे पहुंचे तो उन्होंने अपने आतिथेय को बैठक में टहलते पाया।

कारनेगी ने कहा, "डा० प्रिचैट, मैं एक स्थायी निधि ग्रेट ब्रिटेन के लिए

स्थापित करना चाहता हूं, वैसी ही जैसीकि तुम्हारी अध्यक्षता में अमेरिका के लिए है, परन्तु उससे बहुत छोटी; इतनी मात्रा में इसके लिए देने को धन मेरे पास नहीं है, यद्यपि यह भी निश्चित है कि इसके लिए इतने धन की आवश्यकता भी नहीं है। मैं अपनी पत्नी से तथा अपनी पुत्री के भाग में से और एक करोड़ लेना नहीं चाहता; इसलिए मैं सोचता हूं कि मैं आपकी कॉर्पोरेशन की पूंजी से एक करोड़ डालर निकाल लूं।"

डा० प्रिचेंट क्षुब्ध दीख पड़े। उन्होंने कहा, "परन्तु मेरे विचार में तो आपको ऐसा करने का अधिकार नहीं है।"

"मेरा अधिकार नहीं है?"

"नहीं, मेरी सम्मति में कारनेगी कॉर्पोरेशन ऑव न्यूयार्क की आपकी निधि स्थायी है और इसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता।"

कारनेगी को विश्वास न हुआ। डा० प्रिचेंट ने कहा, "रूट महोदय से पूछ लीजिए; मुझे निश्चय है कि मेरा कथन ठीक है; उन्हें भी ज्ञात होगा।"

उसने रूट को बुलाया, जो उस समय सेनेटर थे। प्रख्यात प्रारम्भिक पुरुष ने बताया, "निस्सन्देह नहीं। आप अब कॉर्पोरेशन से धन नहीं निकाल सकते। जो कर दिया सो कर दिया और आप इसे बदल नहीं सकते।"

इसने उसे बुझा दिया! ब्रिटिश स्थायी निधि की स्थापना करने की उसको लगन लगी हुई थी। अपने शेष ढाई करोड़ डालर के बौण्ड अपनी पत्नी तथा मार्गरेट के नाम कर दिए थे। परन्तु क्या उन्हें यह सारा धन चाहिए?

सुदीर्घ सोच-विचार के पश्चात् उसने परिस्थिति का पूरा ब्योरा श्रीमती कारनेगी को दिया। उसने पूछा, "यदि तुम्हारे बौण्डों में से एक करोड़ के बौंड इस निधि के लिए ले लूं तो तुम्हें बुरा तो न लगेगा?"

वह क्षण-भर भी नहीं झिझकी—मुस्कराते हुए बोली, "निश्चय ही नहीं, एण्ड्रयू!" इस उत्तर ने हजारवीं बार एण्ड्रयू की इस सम्मति को प्रमाणित कर दिया कि उस सरीखी महिला न कोई हुई, न कभी होगी। और इस प्रकार ब्रिटिश निधि की स्थापना हो गई।

"अब तक मैं कितना दान कर चुका, पोयंटन?" वह कभी-कभी अपने सचिव से पूछता। पोयंटन अंक सदा तैयार ठीक जिह्वाग्र रखता था, "चौंतीस

करोड़, बहत्तर लाख, पिच्चासी हजार, पांच सौ डालर" (अथवा जो भी राशि होती), वह उत्तर देता।

"धन्य ईश्वर !" कहकर वह हंसा। "मुझे इतना कहां से मिला ?"

२६ अगस्त, १६१३ को हेग स्थित 'पीस पैलेस' में खड़े होकर उसने इस विश्वास की घोषणा की कि विश्व-शान्ति बनाए रखने के लिए केवल इतना ही आवश्यक है कि "तीन-चार प्रमुख सभ्य राष्ट्रों में (तथा जितने भी इसमें सम्मिलित होना चाहें उनमें) यह समझौता हो जाए कि यदि शान्ति भंग हो तो शान्ति भंग करनेवालों के विरुद्ध सहयोग करने को वे वचनबद्ध रहेंगे।"

ग्यारह महीने पश्चात्, २८ जुलाई, १६१४ को आस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। ऐसी घटना घट सकती है—यह विचार तक कारनेगी के मन में नहीं हुआ था। वह १६०७ में जर्मनी के कैसर विलहैम द्वितीय से भेंट कर आया था, उसके बजरे पर उसके साथ भोजन कर आया था और उसके सम्बन्ध में उसकी बड़ी उत्तम सम्मति बन चुकी थी, उसे यह विश्वास हो गया था कि कैसर विश्व में शान्ति तथा उन्नति के लिए सचमुच व्यग्र है। अब प्रथम विश्व-युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में कारनेगी पहले तो चौंका, और उसे विश्वास न हुआ; फिर वह क्षुब्ध हो उठा; उसकी अन्तरात्मा तक शोक से विह्वल हो गई। जब भय का विस्तार अधिक स्पष्ट दीख पड़ने लगा तो उसको अनुभव होने लगा कि शान्ति के लिए उसका किया गया सारा श्रम तथा लगाया गया धन—सब व्यर्थ हो गए। शान्ति एवं सुखी संसार देखने के उसके सारे सपने बिखर गए !

युद्ध ने स्काटलैण्ड में परिवार के प्रवास का समय कम कर दिया। घर जाने के लिए वाष्पयान पकड़ने के लिए वे शीघ्र ही लिवरपूल पहुंचे और यहां मॉर्ले उन्हें विदाई देने आया। जब इन दो अनुरागी मित्रों ने हाथ मिलाए और 'ईश्वर सहाय' कहा तो यह सब अन्तिम बार था।

इसके पश्चात् कारनेगी का शारीरिक बल व प्राण-शक्ति धीरे-धीरे पर निरन्तर घटते चले गए। १६१५ की ग्रीष्म ऋतु मेन स्थित 'बार-हारबर' में बिताई और आगामी ग्रीष्म ऋतु कोनैक्टिकट के नौवेटन स्थान पर। अमरीका के युद्ध में प्रविष्ट हो जाने के पश्चात् कारनेगी ने बत्तीस अमेरिकन छावनियों के लिए पुस्तकालय स्थापित किए। १६१७ के प्रारम्भ में उसने मैसेचुसेट्स के लेनौक्स

के समीप वर्कशायर पर्वतों में शैडोब्रुक नाम की जायदाद क्रय की और इनमें उसकी तीन अन्तिम ग्रीष्म ऋतुएं बीतीं। चार्ली श्वाब, रूट तथा कई अन्य सुहृद् जब-तब मिलने आते रहे। टौम मिलर, मार्क ट्वेन, रिचर्ड वाटसन गिल्डर, जौन बिगेलो तथा जोसेफ़ चोटे मृत हो चुके थे। मॉर्ले अभी जीवित था और दोनों मित्र प्रति रविवार को परस्पर पत्र लिखा करते थे।

२२ अप्रैल, १९१९ के दिन मार्गरेट—जो अभी कल तक तो एक नन्ही सी लड़की ही लगती थी और अपने पिता के हाथों में हाथ दिए स्किबो पहाड़ियों व घाटियों में लुढ़कती फिरती थी, उस मार्गरेट का विवाह न्यूयार्क के एक सुघड़ युवक रोजवेल मिलर जूनियर के साथ सम्पन्न हो गया। यह उसके पिता के जीवन का अन्तिम हर्षोत्सव था।

उस ग्रीष्म ऋतु में जार्ज लाडर जूनियर शैडोब्रुक में मिलने आया। दोनों ने साथ-साथ सैर-सपाटे किए, थोड़ा-बहुत मछलियों का शिकार किया और शतरंज की कई बाजियां खेलीं। तब बन्धु डॉड भी अन्तिम अभिवादन कर गया।

अगस्त के आरम्भ में कारनेगी को निमोनिया हो गया। श्रीमती कारनेगी और एक विश्वासपात्र सेवक (मोरिसन वंशज) निरन्तर सेवा में संलग्न रहे। आक्रमण के दूसरे दिन, रविवार को, वर्षों में पहली बार उसने मॉर्ले को पत्र नहीं लिखा। उस दिन सांझ को, यद्यपि निर्बलता बहुत थी, उसकी अवस्था संतोषजनक प्रतीत हुई। रात्रि-अभिवादन के पश्चात् पत्नी ने कहा, "मुझे आशा है तुम खूब सोओगे, एण्ड्रयू।"

"आशा तो है, लोऊ," उसने उत्तर दिया।

शीघ्र ही वह ऐसी गहरी सुख की नींद सोया कि फिर वह कभी नहीं जागा।

उसको वाशिंगटन अर्विन की समाधि के समीप ही टैरी टाउन, न्यूयार्क के ठीक उत्तर में स्लीपी हौलो सेमिटरी में समाधि दी गई। उसकी समाधि पर स्कौच कृष्ण-प्रस्तर का एक ऊंचा कैल्टिक क्रॉस खड़ा है। इस प्रस्तर को आसामी-श्रमिकों ने स्किबो जायदाद से खोदकर निकाला, तब इसे लीकों तथा सड़कों पर लुढ़का व घसीटकर रेलपथ पर पहुंचाया। ग्लासगो के एक शिल्पी ने क्रॉस का आकार दिया और श्रीमती कारनेगी ने शिलालेख का निर्देश किया—शिलालेख जोकि सीधा-सादा तथा आडम्बरशून्य था। इससे अधिक उपयुक्त दूसरा कोई न होता।

एण्ड्रयू कारनेगी
जन्म : डन्फर्मलिन, स्काटलैण्ड
२५ नवम्बर, १८३५
मृत्यु : लेनौक्स, मैसेचुसैट्स
११ अगस्त, १९१९

और बस सब समाप्त।

उसने अपनी सारी वसीयत स्वयं रची। अपनी पत्नी तथा पुत्री के लिए तो पहले व्यवस्था कर चुका था। न्यूयार्क होम के नौकर तथा स्किवो जायदाद के सब नौकर एवं श्रमिक साथ ही विभिन्न निधियों के अध्यक्ष भी—सब याद रखे गए। अन्त में हमारे राष्ट्रपतियों के विषय में भी उसने अपने विश्वास के अनुसार कर ही लिया। उसकी मृत्यु के समय एकमात्र जीवित भूतपूर्व राष्ट्रपति विलियम एच० टैफ्ट को जीवन-भर दस हजार डालर वार्षिक मिले। श्रीमती ग्रोवर क्लीवलैण्ड तथा श्रीमती थियोडोर रूज़वेल्ट को पांच हज़ार डालर वार्षिक; वाइकाउन्ट मोरले तथा डेविड लायड जॉर्ज को दस हजार डालर वार्षिक दिए। पार्लियामेंट के एक सदस्य जॉन बर्न्स को, जिसने होमस्टेड की हड़ताल के समय कारनेगी की कड़ी आलोचना की थी, परन्तु कारनेगी की दृष्टि में जिसने इंगलैंड की अच्छी सेवा की थी, पांच हजार डालर प्रतिवर्ष मिले और बर्न्स की आलोचनाओं के विरुद्ध कारनेगी का समर्थन करनेवाले, दूसरे लेबर सदस्य टॉमस बर्ट को भी पांच हज़ार डालर वार्षिक मिले।

न्यूयार्क की इंजीनियरिंग संस्थाओं के तत्त्वावधान में उनको कारनेगी-प्रदत्त भवन में बुलाई गई स्मृति-सभा में भाषण देते एलिहू रूट ने कहा—"वह राष्ट्र-निर्माताओं के उस महान वंश का वंशज था जिन्होंने कि अमरीका के विकास को संसार का आश्चर्य बना दिया है····· मेरे ज्ञान में यह सबसे अधिक दयालु व्यक्ति था। सम्पत्ति उसके हृदय को कठोर नहीं बना पाई थी। न ही उसके यौवन के स्वप्नों को धुलवा सकी थी। दयामूर्ति, स्निग्ध, निर्णयों में उदार, क्या ही अच्छा होता कि जो जन उसको अपना फालतू धन बांटनेवाले धनी व्यक्ति के रूप में ही जानते हैं, वे उसके उन हजारों दया-कार्यों को भी जान जाते कि जिनका संसार को पता नहीं लगा।"

○ ○ ○